आखरी
धक्का
प्रियांशी जैन

१

गर्मी की उस दोपहर मे सर पर तप्ता सूरज मेरी परीक्षा ले रहा था. मंज़िल अभी भी दूर थी.प्यास से गला सूख रहा था. पर पानी भी नही था. मेरे पास. पिछले चार दिनो से सफ़र जारी था. अंजाना सफ़र और अंजानी मंज़िल थी. रास्ता पूरी तरह से सुनसान पड़ा था. बस गरम लू ही थी जो साय साय करते हुवे कहर ढा रही थी. मैं आस लगा रहा था. कि कुछ साधन मिल जाए तो सफ़र आसान हो जाए. पर आज इस राह का मैं एकलौता मुसाफिर ही था.

अपने धीमे कदमो से मैं उस कच्चे रास्ते पर चलता ही जा रहा था. पर अब मेरे पैर जवाब देने लगे थे. मैने सोचा कि कही मैने ग़लत रास्ता तो नही पकड़ लिया.कोई नक्शा भी नही था मेरे पास. उपर से थकान से बुरा हाल था. तो सोचा कि कुछ देर आराम ही करलू तो एक खेत के पास नीम की छाँव मे बैठ गया छाँव मिली तो शरीर भी कुछ सुस्त हुआ और ना जाने कब मेरी आँख लग गयी. पता नही कितनी देर मैं पेड़ के नीचे सोता रहा.

आँख तब खुली जब किसी ने मुझे आवाज़ दी. ओ शहरी बाबू.कौन हो तुम और मेरे खेत मे क्या कर रहे हो. अपनी आखे मलते हुए मैने देखा कि कोई गाँव की औरत है. सांवला सा रंग, तीखे नैन-नक्श उमर कोई तीस पैतीस होगी. पर बेहद ही कसा हुवा जिस्म था उसका. मैं उसको देखते ही रह गया.वो बोली बाबू जी कहाँ खो गये. मैने सकपकाते हुवे अपना थूक गटका और काँपते हुवे लहजे मे कहा कि जी मुसाफिर हूँ थोड़ा सा थक गया था. तो सोचा कि पेड़ के नीचे बैठ जाऊ पता नही चला कि कब आँख लग गयी. माफी चाहता हूँ .

वो बोली कोई बात नही बाबू !

मैने कहा कि जी मुझे विश्रामगढ़ जाना है. आप बता सकती है कि वो गाँव कितना दूर है. वो बोली बाबू तुम गाँव के किनारे पर ही हो बस कोई १ कोस और रह गया है. मैं भी विश्रामगढ़ की ही हू और ये मेरे खेत है . मैने अपना सामान उठाया और उसको कहा कि जी बड़ी प्यास लगी है.

यहाँ पानी मिलेगा क्या ? वो बोली कि थोड़ी दूर कुआँ है. आओ पानी पिलाती हू. मैं उसके पीछे पीछे चल पड़ा. उसने बाल्टी कुवे मे डाली और मुझे पानी पिलाने लगी. ऐसा ठंडा पानी था उस कुवे का मैं तो फ्रिड्ज के पानी को भूल गया. कुछ पलो के लिए मैं जैसे अपने आप को भूल ही गया तो उस औरत ने फिर से मुझे वर्तमान मे लाते हुवे कहा कि बाबू पानी पियो ध्यान कहाँ है तुम्हारा ? मैं पानी पीने लगा जी भर कर पिया मैने.

मैने उसको धन्यवाद किया और अपने सामान को संभालते हुवे चलने लगा.उसने कहा बाबू मैं भी गाँव मे ही जा रही हू, आओ तुमको छोड़ देती हू. मैं उसके पीछे पीछे चल पड़ा. कुछ दूर आगे आने पर उसने पूछा कि बाबू गाँव मे किसके घर जाओगे. मैने कहा कि जी मुझे ठाकुर अर्जुनसिंग की हवेली पे जाना है. ये सुनते ही उस औरत ने अपने सर पर जो घास का गट्ठर उठाया हुवा था. वो उसके सर से नीचे गिर गया

उसने जहर भरी नज़रो से मेरी ओर देखा और कहा कि मुझे नही बताना कोई रास्ता-वास्ता. तुम अपने आप चले जाना और अपने गट्ठर को उठा कर बड़बड़ाती हुई आगे की ओर चली गयी .मेरी तो समझ मे ही नही आया कि इसको क्या हुआ.मैं भी आहिस्ता आहिस्ता उसी औरत की दिशा मे चल पड़ा.जब मैने उस गाँव मे कदम रखा तो शाम ढल रही थी. गाँव मे हर कोई मुझे ही देखे जा रहा था. क्योंकि मैं बाहर से आया था. तो लोग थोड़ी अजीब नज़रो से मुझे देख रहे थे.

चोपाल पर कुछ बुजुर्ग बैठे थे. मैने उनको राम राम किया और उनके पास बैठ गया. उन्होने कहा मुसाफिर कहाँ से आए हो और किसके घर जाओगे. मैने कहा बाबा मैं बड़ी दूर से आया हू और मुझे ठाकुर अर्जुनसिंग की हवेली जाना है. हवेली का नाम सुनते ही उनके चेहरो का रंग जैसे उड़ सा गया तभी एक बुड्ढे ने पूछा कि बेटे तुम अजनबी आदमी तुम्हारा वहाँ क्या काम? मैने कहा कि बाबा मुझे वहाँ से बुलावा आया है.

उस बुजुर्ग की बूढ़ी आँखो मे कई सवाल दिखे मुझे उन्होने कहा बेटा हवेली वो किसी जमाने मे हुआ करती थी. पर आज तो बस एक इमारत ही रह गयी है. मैने कहा बाबा मुझे

तो वही बुलाया गया है कुछ सवाल मेरे मन मे भी है. इसी लिए मैं इतने दूर से यहाँ आया हू. तो उन्होने कहा कि बेटा गाँव के दूसरी ओर पहाड़ो के पास है ठाकुर की हवेली. पर बेटा अब रात घिरने को आई है.तुम आज यही गाँव मे रुक जाओ.सुबह मैं किसी को तुम्हारे साथ भेज दूँगा. वो तुम्हे वहाँ तक छोड़ आएगा. मैने कहा बाबा आप मुझे मुनीम फूलचंद के घर पहुचा दीजिए. तो उन्होने कहा कि बेटा फूलचंद जी को कैसे जानते हो . मैने कहा कि उन्होने ही मुझे इस गाँव मे बुलवाया है वो बोले बेटा तुम कौन हो मैने कहा बाबा बताया तो था,कि मैं मुसाफिर हू !

फिर उन्होने एक लड़के को मेरे साथ भेज दिया मैने फूलचंद के घर का दरवाजा खटखटाया तो जिस औरत ने मुझे कुँए पर पानी पिलाया था. उसी ने दरवाजा खोला और मुझे देखते ही मुझ पर बरस पड़ी और बोली कि "अरे तुम ? तुम मेरे घर तक कैसे आए ? हम हवेली के बारे मे कुछ नही जानते.जाओ ! चले जाओ यहाँ से" और गुस्सा करने लगी. मैने कहा जी आप मेरी बात तो सुनिए. मुझे मुनीम फूलचंद जी से मिलना है.उसने अपनी कजरारी आँखॉको फैलाते हुवे कहा कि तुम मुनीम जी को कैसे जानते हो.

मैने कहा मैं उन्हे नही जानता वो मुझे जानते है. उन्होने ही मुझे यहाँ बुलाया है. तभी अंदर से आवाज़ आई "कौशल्या कौन है ? किस से बात कर रही है?" तो उसने मुझे अंदर आने को कहा और अपने बैठक मे ले गयी. वहाँ पर एक ४५-५० साल का आदमी बैठा था. रोबीला इंसान था. मैने हाथ जोड़कर उनको नमस्ते किया वो बोले मैने आपको पहचाना नही. मैने कहा जी मेरा नाम आकाश है. ये सुनते ही जो पान के बीड़े की पेटी उनके हाथ मे थी. वो उनके हाथ से नीचे गिर गयी.

उनकी आँखे हैरत से फैल गयी. उन्होने अपने चश्मे के शीशे को बनियान से पोन्छा और कहा ज़रा फिर से बताना. मैने कहा जी, मैं आकाश हूँ ! उन्होने मुझे अपने सीने से लगा लिया .उनकी आँखे पानी से भर आई. वो बोले मुझे पता था, कि आप ज़रूर आएँगे. उन्होने कहा कौशल्या देख क्या रही है.इनका स्वागत कर आज हमारे द्वार पर देख कौन आए है.

मेरी खुद समझ नही आ रहा था. कि ये क्या बात कर रहे है आख़िर ये कैसा राज है. फूलचंद जी ने मुझे बिठाया और कौशल्या से कहा की तुम खड़ी खड़ी क्या देख रही हो जाओ और आकाश जी के लिए कुछ भोजन का प्रबंध करो. सफ़र करके आए है. फिर उन्होने मेरी ओर मुखातिब होते हुवे कहा की मालिक आप ने आने से पहले मुझे अगर इत्तिला कर दी होती मै स्टेशन पर खुद आपको लेने आताआपने इतनी तकलीफ़ उठाई. मैने कहा जी आपका शुक्रिया पर ये मेरा पहला मोका था. अकेले यात्रा करने का और फिर मै हिन्दुस्तान भी तो पहली बार आया हू तो सोचा की थोड़ा सा माहोल भी देख लूँगा. फिर मैने उनसे कहा की सबसे पहले आप मुझे ये बताए की आपने मुझे लंडन संदेशा क्यो भिजवाया.

और ये हवेली और ठाकुर अर्जुनसिंग कोन है ? और मेरा इन सब से क्या लेना देना है ? मै तो इंडिया का निवासी भी नही हू.वो बोले आकाश बाबू ! पहले आप कुछ भोजन कर ले. थोड़ा सा आराम कर ले, फिर मै आपको सब बाते बताता हू. भूख तो मुझी भी लगी थी और थकान भी काफ़ी थी. तो मुझे उनकी बाते सही लगी. कुछ ही देर मे भोजन लग गया तो,मै खाने पर ऐसे टूट पड़ा जैसे की कई जन्मो का भूखा हू.

खाने के बाद फूलचंद जी ने कहा की मालिक आप थोड़ा आराम करे. सुबहा आप एक नयी दुनिया देखेंगे. उन्होने मेरे प्रति जिग्यासा जगा दी थी. मैने कहा नही जो भी बात है अभी बताइए पर उन्होने कहा की सुबह हम हवेली चलेंगे फिर आप खुद ही समझ जाओगे. उन्होने मेरा बिस्तर लगा दिया पर आँखो मे नींद ही नही आई. अच्छा भला अकेला जी रहा था अपनी जिंदगी मे,अनाथ था. बचपन से ही संघर्षो से भरी ज़िंदगी जीया था. पर फिर भी खुश था. कॉलेज का लास्ट ईयर चल रहा था. पर एक शाम आए खत ने ज़िंदगी को उथल पुथल करके रख दिया था. ये लेटर इंडिया से किसी फूलचंद ने भेजा था. और साथ मे जहाज़ की टिकेट भी थी. मुझे अर्जेंट्ली इंडिया बुलाया गया था. पर कुछ भी साफ साफ नही बताया गया.

मुझे भी थोड़ी सी उत्सुकता हो गयी थी. इसके कई कारण थे. पहला तो की मै बेशक लंडन मे रहता था. पर मेरा रंग रूप इंडियन्स जैसा ही था. दूसरा जिन लोगो ने मुझे पाला था. वो भी इंडियन्स ही थे और फिर इतने दिनो तक कभी किसी ने मुझे खत नही लिखा था. पर ठीक मेरे २०वे जनमदिन पर आए उस खत मे कुछ तो राज़ था. मैने भी फ़ैसला कर लिया की चलो चलते है.और फिर एक मुश्किल सफ़र के बाद आख़िर मै विश्रामगढ़ आ ही गया था. अपने दिल मे कई सवाल लिए जिसका जवाब बस मुनीम जी के पास थे. सोचते सोचते आँख लग गयी.

सुबह मैं उठा तो सूरज सर पर चढ़ आया था. मैने अंगड़ाई ली और बाहर आया. ये गाँव मे मेरी पहली सुबहा थी. मैने अपने कपड़े लिए और बाथरूम मे घुस गया. पर दरवाजे की कुण्डी नही लगी थी मैने सोचा की कोई नही है. पर अंदर कौशल्या नहा रही थी .उसके मस्ताने बदन को पानी की बूँदो मे लिपटे हुए देख कर मेरा दिमाग़ तो एक दम से झंझणा गया. इस से पहले मैने कभी किसी औरत या लड़की को नंगा नही देखा था. तो मेरे लिए ये एक दम से अलग सा अनुभव था.

एक दम से हुई इस घटना से कौशल्या भी हक्का-बक्का रह गयी थी .मेरा तो दिमाग़ ही सुन्न सा हो गया था. कौशल्या बस इतना ही बोली कि जाआ ज़ाआा जाओ यहा से. मै बाथरूम से बाहर निकलने ही वाला था कि बाहर से आवाज़ आई,"माँ कहाँ हो तुम ? मुझे खाना दो. मै स्कूल जा रही हू.". ये सुनते ही कौशल्या ने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे वापिस बाथरूम मे खीच लिया.

और खुद चिल्लाते हुवे बोली कि मै नहा रही हू. तुम खुद ही ले लो और चली जा ओ फिर कौशल्या मेरी ओर देखते हुवे फुसफुसा के बोली मेरी बेटी स्कूल ना चली जाए तब तक यही रहो कही उसने तुम्हे यहा से निकलते हुवे देख लिया तो मेरे बारे मे पता नही क्या सोचेगी .पर बाथरूम के अंदर भी रुकना कोन सा आसान था. ख़ासकर जब आप किसी नंगी औरत के साथ हो.

मेरी नज़र बार बार उसके जिस्म पर जाने लगी वो बोली अपना मूह दूसरी तरफ करके खड़े हो जाओ. पर मुझे तो जैसे उसकी बात सुनी ही नही. उसका सांवला रंग था. पर उसका

शरीर भरा हुवा था. मोटी मोटी स्तन मास से भरी हुवी ठोस जंघे और काले काले बालो से ढकी हुवी योनि जिसे मै बालो की वजह से देख नही पाया. मेरी साँसे लड़खड़ाने लगी थी. धड़कन बढ़ गयी थी.

कौशल्या भी परेशान हो गयी थी.क्योंकि ये कुछ पल बड़े ही मुश्किल थे. वो एक अंजान के साथ बाथरूम मे नंगी खड़ी थी. मेरी नज़र नीचे गयी मैने देखा कि मेरा लिंग निक्कर मे टेंटहाउस बनाए खड़ा है. कौशल्या भी चोर नज़रो से मेरे लिंग की तरफ ही देख रही थी. तभी उसकी बेटी ने कहा की माँ मै जा रही हू तो कुछ देर बाद मै भी बाहर निकल आया.

करीब एक घंटे बाद मै नहा धोकर तैयार हो गया था. कौशल्या ने मुझे नाश्ता करवाया और मैने उस से बाथरूम वाली घटना के लिए माफी माँगी. पर उसने बात नही की. मै नाश्ता कर ही रहा था. की फूलचंद जी अपने साथ एक वकील को ले आए. उन्होने कहा आप नश्ता कर ली जिए फिर हम हवेली चलते है. मैने फटाफट से काम निपटा दिया और अपना सामान उठा लिया.

२

बाहर एक कार खड़ी थी. हम बैठे और वो धूल उड़ाती हुवी चल पड़ी हवेली की ओर.कोई १५-२० मिनिट बाद मै एक बेहद ही विशाल इमारत के सामने खड़ा था. किसी जमाने मे ये बड़ी आलीशान रही होगी. पर आज इसकी हालत कुछ ख़ास नही थी. गेट पर एक बड़ा सा ताला लटका पड़ा था. वकील ने एक पुरानी जंग लगी चाबी निकाली और ताला खोलने की कोशिश करने लगा. पर वो नही खुला.

मुनीम जी ने बाहर से कुछ आदमी बुलवाए और ताले को तुडवा दिया. जंग खाया हुवा गेट चर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्ररर करते हुवे खुल गया और मै अंदर दाखिल हो गया. हर तरफ बस धूल-मिट्टी और जाले ही लगे थे.ऐसा लग रहा था, जैसे की सदियो से किसी ने झाँक कर भी नही देखा था इस तरफ. फिर अंदर के कुछ खास कमरो का ताला भी तोड़ा गया और सफाई करवाई जाने लगी.

हवेली के बीचोबीच एक विशाल पेड़ था. उसके चारो और चबूतरा बना हुवा था. वही पर हमारे लिए कुर्सिया और मेज लगवा दी गयी. अब बारी थी मेरे सारे सवालो के जवाब जानने की,मैने कहा मुनीमजी अब मुझे आप बताए सारी बात बताये. फूलचंद जी बोले मालिक बताना क्या है? ये हवेली आपका घर है.आप यहाँ के मालिक है.

मैने कहा आपको कोई ग़लत फहमी हुवी है.वो बोले आकाश साहब कोई ग़लत फहमी नही है आप ही इस हवेली के मालिक है. मैने कहा पर मै तो अनाथ हू और इंडिया से मेरा क्या लेना देना. वो बोले आपको कुछ भी याद नही है? मैने कहा क्या याद नही है. मेरी धड़कन बढ़ गयी थी. मै बुरी तरह से उतावला हो रहा था. मैने कहा आप लोग प्लीज़ साफ साफ बताए कि ये सब क्या हो रहा है ?क्या मामला है?

फूलचंद जी ने राज़ की पहली परत को खोलते हुवे कहा की, आप ठाकुर खानदान के आख़िरी चिराग है. आप ठाकुर अर्जुनसिंग जी के पोते है. ये सुनकर मेरे पैरो के नीचे से ज़मीन खिसक गयी. मैने कहा पर मै तो ब्रिटिश हू वो बोले नही आप यहा के ही हो. यहा के हालत कुछ ठीक नही थे उस टाइम तो आपको उस टाइम सलामत रखने के लिए आपके पिता के दोस्त के घर भिजवा दिया गया था. मैने कहा अगर ऐसा था तो मुझे ये बात क्यो

नही बताई गयी और फिर मै हमेशा ग़रीबी मे ही क्यो जिया. फूलचंद जी बोले की हमें हमेशा आपका ख़याल था. हमारे लोग हर पल आपकी हिफ़ाज़त को आपके आस पास ही मोजूद थे. ये १८ साल का समय कैसे निकाला है ये हम ही जानते है.

उन्होने कहा सोचिए अगर आप इस खानदान के वारिस नही है. तो कैसे आप लंडन के रॉयल स्कूल मे पढ़े ? मैने कहा की वो तो कोई हमेशा मेरी फीस भर देता था. ……… एक मिनिट!!!!!!!!!!!!!!!! वो आप थे जो मेरी फीस भरा करते थे. उन्होने कहा वो आपका ही धन था. मै तो बस उसका रखवाला हू मालिक. मैने कहा जब आपने मेरी वहाँ इतनी मदद करी है फिर मुझे उसी टाइम क्यो नही बताया . वो बोले कि आपके दादाजी की ये हसरत थी की आप एक आम इंसान की तरह जिए.

ताकि आपको आम आदमी के दुखो का पता रहे और आप ठाकुर होते हुवे भी आपका दिल ग़रीबो की मदद करे. मैने कहा मुझे तो विश्वास नही हो रहा है. पर अब आप कह रहे है तो मान लेता हू. उन्होने कहा की यही सच है छोटे ठाकुर. मैने कहा अगर ऐसा है फिर मेरा परिवार कहाँ है और ये हवेली बंद क्यो पड़ी है. तो उन्होने कहा ये एक लंबी कहानी है…………………समय के साथ आप सब कुछ जान जाओगे पर पहले आप वकील साहिब के साथ कुछ कार्यवाही को निपटा ले. मैने कहा पर मुझे तो कुछ नही चाहिए.मेरा भी एक परिवार था यही बहुत है मेरे लिए. वो कहने लगे कि नही अब आप आ गये .है अब आप अपनी विरासत को संभाले और मुझे मेरी ज़िम्मेदारी से मुक्त करे. वैसे ही गाँव मे लोग ताने देते है कि ठाकूरो का सब कुछ खा गया.

इतनी सालो से इसी कलंक के साथ मै और मेरा परिवार जी रहे है.गाँव मे हर कोई समझता है कि मुनीम ने ठाकूरो का धन दबा लिया है. कोई सामने तो कोई पीठ पीछे बस यही चर्चा करता है.आकाश बाबू आज तक मै इसी ज़िल्लत के साथ जीता आया हू. पर आप मेरा

विश्वास करे आपकी दोलत की पाई पाई का हिसाब है मेरे पास. आप जब चाहे हिसाब ले लेना. पर अब आप मुझे इस कर्ज़ से मुक्त करे और अपने पुरखो की विरासत को संभाले.

मैं उनके आगे हाथ जोड़ता हुवा बोला की ये आप कैसी बाते कर रहे है ये जो कुछ भी है आपका ही तो है. मै तो पहले ही कह चुका हू की मुझे इन सबका कोई लालच नही है. वकील बाबू बोले सर फिर भी हमें तो अपनी तरफ से फॉरमॅलिटी करनी ही पड़ेगी ना और वैसे भी आपके दादाजी की अंतिम इच्छा यही थी की जब आप पच्चीस साल के हो जाए तो सब कुछ आपको सुपुर्द कर दिया जाए.

किस्मत ने मुझे एक ऐसा सर्प्राइज़ दिया था. कि मुझसे सम्भल ही नही रहा था. वकील ने कई फाइल्स पर मेरे साइन लिए.डॉक्युमेंटेशन मे काफ़ी टाइम लग गया पर फिर भी काम पूरा नही हुवा था. शाम होने लगी थी मैने कहा बस जी अब बाकी का काम कल करेंगे तो फूलचंद जी ने कहा कि आकाश साहब ,मै कल ही शहर चला जाता हू और हवेली मे बिजली लगवाने का काम करवाता हू.

मैने कहा," हाँ ! वो तो है और अगर अब मुझे यही रहना है, तो थोड़ा ठीक से सफाई वग़ैरहा करवा दीजिए और पानी का इंतज़ाम भी"वो बोले आप चिंता ना करे दो-चार दिन मे सारा काम हो जाएगा.वो बोले जब तक यहा रहने लायक नही होता आप मेरे ही घर रहेंगे. मैने कहा नही, अब मै यही रहूँगा फिर गाँव मे आप ही तो अपने हो. आपके घर तो आता ही रहूँगा.

वो बोले जैसी आपकी इच्छा पर आपकी सुरक्षा के लिए मै कुछ आदमी तैनात कर देता हू .मैने कहा इसकी कोई ज़रूरत नही है और होगी तो बाद मे देख लेंगे. वो बोले आप भी अपने पुरखो की तरह ही ज़िद्दी हो ! पर आज तो आपको मेरे घर ही ठहरना होगा क्योंकि

यहा तो सबकुछ चूहो ने कुतर डाले होंगे. उनका आग्रह मै टाल ना सका और उनके घर आगया.

अगले रोज भी मै थोड़ा सा लेट ही उठा कौशल्या ने कहा की आप तैयार हो जाओ मै नाश्ते की व्यवस्था करती हू और अगर आपकी कोई फरमाइश हो तो मुझे ज़रूर बताना. मैने कहा नही मुझे तो गाँव का खाना बढ़िया लगा. आप जो चाहे बना दे फिर मैने कहा मुनीम जी कहाँ है. वो बोली की वो तो सुबा सवेरे ही शहर चले गये आपके लिए गाड़ी छोड़कर गये है.

कह रहे थे की अगर आप कही जाना चाहे तो ड्राइवर आपको ले जाएगा. मैने कहा इसकी कोई ज़रूरत नही है. वैसे मै गाँव तो देखना चाहता हू पर, कार से वो मज़ा नही आएगा. फिर मै जल्दी से तैयार हो गया कौशल्या बोली की अगर आप अकेले जाएँगे तो कही वो मुझ पर गुस्सा ना करे की, ठाकुर साहब को अकेला क्यू जाने दिया. मैने कहा आप क्या ठाकुर साहब कहते रहते हो आपके मै बेटे जैसा हू.

अगर आपने आज के बाद मुझे साहब कहा मै यहा नही आऊंगा. वो बोली जी ठीक है, आगे से हम आपको आपके नाम से ही पुकारेंगे पर अकेले मे और हँस पड़ी. कौशल्या ने काफ़ी टाइट ब्लाउस पहना हुवा था. तो उसकी आधे से ज़्यादा स्तन बाहर को आने को मचल रही थी. मेरी निगाह से कब तक वो बची रहती.मैं उन्हे घूर्ने लगा कौशल्या ने कहा क्या देख रहे हो. मैने नज़र बदलते हुवे कहा कुछ नही और घर से बाहर निकल आया.

३

गाँव का माहौल शहर से बड़ा ही अलग और हरा भरा था. हर तरफ पेड़ लगे हुवे थे. हरियाली छाई थी हर तरफ. मै घूमते घूमते गाँव से थोड़ी से बाहर की तरफ निकल आया तो मुझे नदी दिखी .मै उस ओर बढ़ गया. मैने थोड़ी दूर से ही देख लिया था की, नदी मे औरते नहा रही थी और कुछ कपड़े धो रही थी . मै वही पास की झाड़ियो मे थोडा छुप गया और उनको नहाती हुवी देखने लगा.उनको नहाते हुवे मुझे वो पल याद आ गया जब मैने कौशल्या को नंगा देख लिया था. और अब मै इधर इन औरतो को देख कर आ गया था. मै थोड़ा और छुप सा गया ताकि मुझ पर किसी की नज़र नही पड़े और वहाँ के नज़ारे लेने लगा.ऐसा हॉट नज़ारा मैने आज से पहले कभी नही देखा था. तो मेरी नसे ज़ोर मारने लगी.ना जाने कब मेरा हाथ मेरे लिंग पर पहुच गया और मै उसको पेंट के उपर से ही मसलने लगा. बड़ा अच्छा लग रहा था. ये सब ये गाँव ये एक अलग ही दुनिया थी. मै उन औरतो को देख देख कर काफ़ी उत्तेजित हो गया था. मुझे लगा कि मुट्ठी मार ही लू यही पर फिर सोचा की अगर किसी ने यहा मुझे ऐसे इनको देखते हुवे पकड़ लिया तो कही मुसीबत ना हो जाए.मै वहाँ से खिसक लिया पहले मैने कौशल्या को नंगा देखा और अब इन औरतो को तो मेरे मन के तार बार बार झंझणा रहे थे और लिंग पैंट मे बार बार अकड़ रहा था. तभी मुझे कुछ ध्यान आया और मेरे पैर अपने आप हवेली की तरफ बढ़ रहे थे और २०-२५ मिनिट बाद मै उसी जगह के दरवाजे पर खड़ा था. पर आज दरवाजा बंद नही था.

मै अंदर ही चला गया. फूलचंद जी ने कुछ लोग काम पर लगा दिए थे. जो हवेली की साफ सफाई कर रहे थे ताकि उसे कुछ रहने लायक बनाया जा सके. उन मजदूरो मे से कुछ लोग तो कल वाले ही थे तो उन्होने मुझे नमस्ते किया और कहा की बाबूजी आप यहा? मैने कहा की बस ऐसे ही घूमने आ गया.आप अपना काम करते रहे, मै ज़रा इधर उधर टहल लेता हू.

कुछ देर मै हवेली को एक टक देखता रहा और फिर मै उपर की मंज़िल पर जाने को सीढ़िया चढ़ता चला गया. जगह जगह जाले लगे थे. मै उनको हटाता हुवा उपर चढ़ गया. आज एक तो गर्मी बहुत ही ज़्यादा पड़ रही थी और यहा का माहौल भी पता नही कैसा था. इसमे एक अजीब सा सूनापन था. मैने अपने माथे का पसीना पोन्छा और आगे बढ़ने लगा.

हर कमरे पर एक मोटा ताला लगा हुवा था. जो की जंग खाया हुवा था. देखने से ही पता चलता था. कि पता नही कब से ये बंद है.मै थोड़ा सा उत्सुक तो था पर मै बिना फूलचंद जी से पूछे इन कमरो को नही खोलना चाहता था. मै आगे बढ़ गया तो कुछ और सीढ़िया

दिखाई दी मै उपर की मंज़िल की ओर चला गया. मैने सोचा की इतनी बड़ी हवेली मे तो बहुत लोग रहते होंगे किसी टाइम मे और आज यहा एक दम वीरान है.इस मंज़िल पर कुछ कबूतर गुटार गुटार कर रहे थे. जैसे ही उन्हे मेरे कदमो की आहट सुनी वो भाग खड़े हुवे. पल पल मेरा दिल तेज़ी से धड़कता जा रहा था. उमस की वजह से गर्मी भी कुछ ज़्यादा ही लग रही थी मेरा गला जैसे सूख गया था. तभी मेरी निगाह एक कमरी की खिड़की पर गयी उसका थोड़ा सा काँच टूटा हुवा था.

मैने उस खिड़की पर जमी धूल को अपने हाथो से साफ किया और अंदर की ओर झाँका तो देखा की हर तरफ धूल की मोटी परत चढ़ि हुई है. एक कोने मे बड़ा सा बेड था. और एक साइड मे शंगृार की टेबल थी. दीवारों पर कुछ तस्वीरे जड़ी हुवी थी जो धूल से जैसे दबने को ही थी. मुझे कौतूहल होने लगा मैने कुछ सोचा और तुरंत ही नीचे आया और मजदूरो से हथौड़ा लेकर उपर आ गया और उस कमरे के ताले को तोड़ दिया. मैने जैसे ही गेट खोला मुझे तुरंत ही अपने सर को नीचे झुकाना पड़ा व्हिईईईईयचहिईईईईई करते हुवी ढेरो चमगादड़ दरवाजे से बाहर निकले. मेरी तो जैसे रूह ही जम गयी थी .अचानक से मै बुरी तरह सी डर गया था. सांसो की रफ़्तार काबू से बाहर हो गयी थी मै वही कमरे मे पड़ी एक मिट्टी से भरी कुर्सी पर बैठ गया और अपनी सांसो को दुरुस्त करने लगा.

कुछ देर बाद मै उठा और कमरे को देखने लगा. छत पर एक बड़ा सा फनूस लगा था. जो कभी इस कमरे को रोशनी से आबाद किया करता था. दीवारो पर लगी कुछ तस्वीरो को मैने अपनी शर्ट की आस्तीन से साफ किया तो कुछ तस्वीरे एक औरत की थी देखने से ही पता चलता था. कि कितना तेज था उस औरत के माथे पर. कुछ तस्वीरो मे वो खिल खिलाती हुवी दिख रही थी.

कुछ मे वो बगीचे मे बैठी हुवी थी. मैने कुछ और तस्वीरो को साफ किया वो किसी आदमी की थी.कड़क मुन्छे, हाथो मे बंदूक लिए चेहरे से रोब टपक रहा था. मैने वो तस्वीरे देखी और फिर खुद को देखा और विचार करने लगा कि क्या मै सच मे इन्ही का वंशज हू.

पता नही कैसी कशिश थी उन तस्वीरो मे.लगा की बस देखता ही जाऊ उनको.एक लगाव सा हुवा मुझे उन चेहरो के साथ.पता नही मै कितनी देर रहा उस कमरे.मे मेरी तंद्रा तब टूटी जब नीचे से कोई मुझे ज़ोर ज़ोर से आवाज़ लगा रहा था. मैं गॅलरी मे आया और झाँक कर देखा मैने कौशल्या को खड़ा देखा.

वो अपने सर पर दोनो हाथ रखे मुझे पुकार रही थी. जब मैने उसको देखा तो मेरी नज़र उसकी तनी हुवी स्तनों पर चली गयी. मैने कोशिश की कि मै ऐसा कुछ ना सोचु पर मेरा मन माना ही नही.कुछ देर तक उसके स्तनों को देखने के बाद मैने कहा जी अभी आया और नीचे पहुच गया.

वो बोली पता है आपको सारे गाँव मे ढूँढ कर अब इधर आई हू.आपका अकेले यहाँ आना ठीक नही है. कम से कम बता कर तो आते. मैने कहा वो मै घूमते घूमते इधर आ गया. कौशल्या बोली मालिक आप थोड़ा सा सावधानी बरते. ऐसे अकेले घूमने से आपको ख़तरा है .मैने कहा मुझ अंजान को कैसा ख़तरा. वो बोली अब आप अंजान नही रहोगे.जल्दी ही सबको मालूम हो जाएगा कि ठाकूरो का अंतिम वारिस लोट आया है और फिर गाँव मे भी कई दुश्मन है. मैने कहा एक मिनिट जब मै किसी को जानता ही नही हू फिर दुश्मन कहाँ से हो गये. कौशल्या दबी आवाज़ मे बोली की मालिक समय आने पर आपको सब पता चल जाएगा. मै आपकी बातों का उतर नही दे सकती हू. अभी आप घर चले भोजन का भी समय हो गया है.

मैने कहा पर मेरे सवालो का जवाब कोन देगा .कौशल्या बोली सब कुछ समय पर छोड़ दीजिए और अभी घर चलिए. मै उसके साथ घर आ गया, पर मेरे मन मे एक तूफान सा चल रहा था. और कोई भी आसानी से मेरे सवालो का जवाब नही दे रहा था. मै उलझ सा गया था. अनचाहे ही ज़िंदगी मे एक ऐसा मोड़ आ गया था. जो मुझसे झिल नही रहा था.

मै अपने ख़यालो मे खोया हुवा था. कौशल्या ने मेरा ध्यान तोड़ते हुवे कहा की आपको खाना परोस दू.मैने कहा नही मुझे भूख नही है. वो बोली भूख क्यो नही है ?आपंने सुबह भी अच्छे से नाश्ता नही किया था. मैने कहा जी मुझे सच मे भूख नही है.वो कहने लगी की आप आराम करे .मै ज़रा खेतो की ओर होकर आती हू.अगर कुछ चाहिए तो नौकरो से कह देना.

मैने कहा अगर आप बुरा ना माने तो मै भी आपके साथ खेत मे चलूं. इधर मेरा मन भी नही लगेगा और थोड़ा घूम भी लूँगा. कौशल्या ने कुछ सोचा और फिर बोली की ठीक है आ जाइए और मै उसके साथ खेतो की ओर चल पड़ा. रास्ते मे कौशल्या मुझसे बात करती जा रही थी और लंडन के बारे मे भी पूछ रही थी.वहाँ के लोग कैसे है और मै उनके हर सवाल का जवाब दे रहा था.

ऐसे ही बाते करते करते हम लोग खेतो में आ गये.कौशल्या ने कहा की आप बैठो मै ज़रा कुवे की मोटर चला कर ज्वार मे पानी छोड़ देती हू. मैने कहा मै भी आपकी मदद करू क्या. वो बोली आप रहने दीजिए पर मैने ज़िद की , कि नही मै भी काम करूँगा. वो बोली की आप क्यू मुझे पाप का दोषी बनाना चाहते है.आप मालिक लोग है. हम पर पाप ना चढ़ाए.

मै वही खड़ा हो गया और कौशल्या अपना काम करने लगी. तभी पानी के बहाव से खेत की एक साइड की नाली टूट गयी और पानी खड़ी फसल मे जाने लगा कौशल्या ने अपने लहंगे को जाँघो तक चढ़ा लिया और कास्सी लेकर नाली को सही करनी मे जुट गयी और मेरी नज़र उसकी साँवली पर चमकीली जाँघो पर पड़ गयी . एक पल मे ही मेरा लिंग पैंट मे खड़ा हो गया और बाहर आने को मचलने लगा.

बड़ा ही मोहक नज़ारा था. मैने सोचा काश ये अपने लहंगे को थोड़ा सा और उचा कर ले तो मज़ा ही आ जाए. उसकी टाँगे बड़ी ही चिकनी और मस्त लग रही थी.मेरा गला सूख गया.दिल तो किया कि इसको यही पर पकड़ लू पर ऐसा कर नही सकता था. तो बस उसकी टाँगो का नज़ारा देखता ही रहा .काफ़ी देर तक वो नाली को ठीक करती रही और मै उसको देखता रहा.

कौशल्या के पैर कीचड़ मे सन गये थे.फिर उसने कस्सि को साइड मे रखा और खेली पर अपने पैर रख कर उनको धोने लगी. उसका घाघरा और भी उठ गया और अब काफ़ी अंदर का नज़ारा दिखने लगा. वो अपनी मस्ती मे मगन थी, उसको ध्यान नही था कि मै उसके बदन को नज़रो से पी रहा हू. ना जाने क्यो वो मुझे बड़ी अच्छी लगने लगी थी.

फिर वो मेरे पास आई और बोली की आइए आगे को चलते है. मै उसके पीछे पीछे कच्ची पगडंडी पर चल पड़ा. उसके खेत दूर दूर तक फैले हुवे थे. अपनी गोल नितंब को मटकाती हुवी वो आगे आगे चले जा रही थी॥ जैसे कोई मस्त हिरनी जंगल मे विचरण कर रही हो॥ मेरा लिंग चीख चीख कर कह रहा था. कि मुझे इसकी नितंब मे डाल दे पर, मै कुछ कर नही सकता था.

थोड़ा आगे जाने पर खेत दो भागो मे बॅट गये. एक तरफ तो ज्वार खड़ी थी और दूसरी ओर गन्ने की फसल लहलहा रही थी. पास मे ही एक झोपड़ी सी बनी थी.कौशल्या मुझे अंदर ले गयी और बोली कि आप आराम करो, मैं ज़रा अभी आती हू.मैने कहा आप मुझे अकेला

छोड़ कर कहाँ जा रही है. वो बोली मै बस अभी आई. पर मैने कहा की नही आप जहा भी जा रही है मुझे भी ले चलिए.

वो अपनी चुनरिया को उंगली मे घूमाते हुवे बोली की मैने कहा ना की मै अभी आई ! पर मैने सोचा कही ये मुझे छोड़ के ना चली जाए, मैने कहा नही आप के साथ ही चलूँगा. वो झुंझलाते हुवे बोली की मुझे पेशाब करने जाना है. मैने कहा तो जल्दी जाओ वो तुरंत ही झोपड़ी से बाहर निकल गयी और पीछे की तरफ चली गयी.मैने देखा की दीवार मे एक खिड़की है जिस से पीछे का दिख सकता है.

मै उत्सुकता से खिड़की से बाहर देखने लगा कौशल्या ने अपने घाघरे को कमर तक उपर किया और झट से नीचे को बैठ गयी.मेरी नज़र उसके गोल मटोल कुल्हो के कटाव पर ठहर गयी और मेरा बुरा हाल होने लगा उफफफफफफफफफफफफफफ़ क्या नज़ारा था. मुझे लगा कही मै अपने होश ही ना खो दूं पर अभी गजब होना तो बाकी ही था. कुछ देर वो पेशाब करती रही.

फिर वो उठी और अपनी टाँगो को थोड़ा सा चोडा कर के खड़ी हो गयी. जिस से उसकी खुली टाँगो से मुझे उसकी योनि दर्शन हो गये.काले घने बालो के बीच दुबकी हुवी उसकी गुलाबी रंग की योनि को इस पोज़िशन मे मै अच्छे से निहार पा रहा था. एक दो सेकेंड बाद कौशल्या अपना हाथ योनि पर लेके गयी और जो पेशाब की एक दो बूंदे वहाँ लगी थी उनको अपने हाथ से साफ कर दिया.जब उसकने अपनी योनि को हथेली से दबाया तो उसके बड़े बड़े नितंब एक अनचाही ताल से थिरक से उठे. पर ये सब ज़्यादा देर नही चल. फिर उसने अपने घाघरे को नीचे किया और वापिस आने लगी. मै तुरंत जगह से हटा और चारपाई पर आकर बैठ गया.पर मेरा हाल बुरा हो गया था. पसीना बह चला था. शरीर से और लिंग तो बस गुस्से से फन फ़ना रहा था.

अंदर आने पर कौशल्या ने कहा की मै थोड़ी सी घास काट लेती हू,फिर हम घर चलेंगे. मैने अपना थूक गटका और कहा की आप घास काट लो, मै आस पास थोड़ा सा घूम लेता हू. वो बोली नही आकाश बाबू शाम घिर आई है. थोड़ी देर मे अंधेरा हो जाएगा. तो आपका ऐसे अकेले रहना ठीक नही है. आप मेरे साथ ही रहिए.

पता नही क्यो मैं कौशल्या की बात नही काट पाया. वो जल्दी जल्दी से घास काटने लगी और मै अपनी आँखे उसके बदन से सेकने लगा. पता नही क्यो पर मेरे दिल मे उसको ठोकने का ख्याल कुछ जोरसे ही आ रहा था. मेरा खुद पर काबू रख ना बड़ा मुश्किल हो

रहा था. पर मै रिस्क लेना नही चाहता था. करीब घंटे भर बाद हम गाँव की तरफ हो लिए अंधेरा होने लगा था.

रास्ते मे मैने कौशल्या से पूछा की आपके कितने खेत है. वो बोली बाबू हमारे तो बस १० बीघा ज़मीन है .उसी मे खेती करते है, वो भी आपके दादा जी ने मुनीम जी को दान मे दी थी. सब कुछ आपकी ही देन है. मैने कहा आप मुझे मेरे परिवार के बारे मे कुछ बताती क्यो नही. वो बोली की समय आने पर आप खुद ही जान जाएँगे और कुछ बाते ऐसी है की आप नही जानो तो ठीक रहेगा.

मै वही रुक गया. कौशल्या बोली वहाँ क्यो खड़े हो गये. मैने कहा मुझे अभी सब कुछ जान ना है. अपने बारे मे अपने परिवार के बारे मे , अगर वो है तो कहा है और आख़िर क्या हुवा था. आप मुझे शुरू से हर एक बात बताओ, अभी ! वो बोली मालिक मुनीम जी आ जाए तो आप उनसे ही पूछ लेना.पर मेरा दिमाग़ अब झल्लाने लगा था. मैने कहा नही मुझे आप अभी सबकुछ बताइए वरना मै अभी वापिस चला जाऊँगा.

कौशल्या विनती करती हुवे बोली मालिक आप अभी घर चलिए अगर आपकी यही चाह है. मै आपको बताती हू की आप को हमने यहा क्यू बुलाया है और तेज तेज कदमो से घर की ओर चलने लगी .मै भी उसके पीछे पीछे हो लिया घर आए हाथ मूह धोया और उन्होने मुझे बैठक मे बैठने को कहा कौशल्या की लड़की शरबत ले आई.आज पहली बार मैने उसे देखा था.

१२ वी मे पढ़ती थी पर बदन माँ की तरह ही उसका भरा भरा हुवा था. शरबत का खाली गिलास ट्रे मे रखते हुवे मैने पूछा की फूलचंद जी कब तक आएँगे. वो बोली बापू तो ३ -४ दिन बाद ही लोटेंगे. तब तक हम है ना यहाँ आप को जो भी चाहिए हमे बताइए. मैने कहा ठीक है.कुछ देर बाद कौशल्या भी आ गयी और नीचे कालीन पर बैठ गयी. मैने कहा आप नीचे क्यो बैठे हो उपर कुर्सी पर बैठो. वो बोली मालिक के आगे मै कैसे उपर बैठ सकती हू.

मै उठा और कौशल्या के हाथो से पकड़ कर उसको खड़ा कर दिया. मेरे हाथ उसकी गुदाज बाहो मे धसने लगे. मैने उसको पास रखी कुर्सी पर बिठा दिया और कहा की मै कोई मालिक वालिक नही हू. मै तो बस एक इंसान हू ज़िसकी ज़िंदगी थोड़ी बदल सी गयी है. पिछले कुछ दिनो मे. देखिए कुछ दिनो पहले मुझे पता भी नही था की मेरा भी कोई घर है, परिवार है.पर अब मेरे दिल मे हुक उठ गयी है.

मै अब बड़ा ही परेशान सा हो गया हू.आप मेरी तरफ तरस खाइए और मुझे बता भी दीजिए की आख़िर कहाँ है मेरे घर वाले और क्या हुवा था. जिसकी वजह से मुझे अपने घर से इतनी दूर जाना पड़ा. बोलते बोलते मेरा गला रुंध गया और आँखो मे आँसू आ गये. मैने अपने हाथ कौशल्या के आगे जोड़ दिए और कहा आप से मै भीख माँगता हू.प्लीज़ ! मुझे मेरे परिवार के बारे मे बताइए

मेरा दिल तड़प उठा था. आज तक अनाथो की तरह ही तो जीता आया था. यहा आके पता चला की मेरा घर भी है. मै अपने घर वालो से मिलना चाहता था. मैने अपना सर कौशल्या के पाँवो मे रख दिया और कहा की मुझ पर अहसान कीजिए. तो उन्होने मुझे उठाया और अपने गले से लगा लिया और मेरे आँसुओ को पोंछते हुवे बोली की बस आकाश बस आप रोइए मत ! मै आपको सब बता ती हू.

तभी बिजली चली गयी और चारो तरफ अंधेरा हो गया. कौशल्या ने लालटेन जला दी,पर मेरा दिल भी जलने लगा था. कौशल्या ने अपनी लड़की को कहा की तू अंदर जा और खाने की व्यवस्था कर.तो उसने कहा की माँ मुझे भी जानना है की गाँव मे लोग जो बाते करते है वो सच है या झूठ. मैं उसको टोकते हुवे बोला की क्या कहते है गाँव वाले. कौशल्या अपनी लड़की को देखते हुवे बोली की तू चुप कर.पर वो भी वही जम कर बैठ गयी. कौशल्या ने एक निगाह उस पर डाली और फिर मेरी ओर देखते हुवे बोली की आकाश बाबू अगर आप जानना ही चाहते है तो, सुनिए .....

४

ये बात उस दिनों की है ,जब मै नयी नयी ब्याह कर इस गाँव मे आई ही थी. गाँव मे आपके खानदान का राज चलता था. लोग कहते है की आपके पुरखो ने ही ये गाँव बसाया था. आपके दादा जी का सिक्का चलता था. बड़े बड़े अधिकारी अफ़सरो की भी हिम्मत नही होती थी की कोई उनकी बात को टाल दे.

हर तरफ बस उनकी ही चर्चा थी. उन दिनों हवेली के दरवाजे हमेशा सबके लिए खुले रहते थे. चाहे दिन हो या रात हो मदद माँगने वालो को हमेशा वहाँ मदद मिलती थी. कोई भी हवेली से खाली हाथ नही आया. भगवान के बाद लोग अगर किसी को पूजते थे तो बस ठाकुर अर्जुनसिंगजी को. सब कुछ सही चल रहा था. पर फिर आपके पिता जी विलायत से पढ़कर वापिस गाँव आ गये.

उन दिनों वो बिल्कुल आप जैसे ही लगते थे.दूर से देखने पर ही पता चलता था की कोई सजीला बांका नोजवान आ रहा है. और स्वभाव तो आप के दादा जी से भी बढ़कर. एक दम सादगी से भरपूर कभी किसी को मना करना तो उनके स्वभाव मे नही था. आकाश बाबू आप कभी आईने मे गोर से देखना खुद को आप को अपने पिता ठाकुर अश्विनप्रताप सिंग जी की छवि ज़रूर दिखेगी.

बाहर तेज हवाए चलने लगी थी. आसमान बादलो के शोर से जैसे फटने को ही था. कौशल्या ने लालटेन की लो को थोड़ा और तेज किया और अपना गला खंखारते हुवे कहना शुरू किया.आकाश सब सही चल रहा था. पर आपके पिता से एक ग़लती हो गयी जिसका ख़ामियाजा सारे गाँव को ही भुगतना पड़ा. इसी लिए गाँव वाले अब ठाकूरो के नाम से भी नफ़रत करते है.

ये सुनकर मेरी उत्सुकता और भी बढ़ गयी.मैने कहा ऐसा क्या हो गया था. कौशल्या ने कुछ घूट पानी पिया और बताने लगी की यहाँ से कुछ कोस एक और गाँव है संग्रामगढ़. वहाँ भी यहा की तरह ही ठाकूरो का राज चलता था. एक दिन आपके पिता घुड़सवारी करते करते उस ओर निकल गये तो उन्होने देखा की कुछ लोग एक मजदूर को पीट रहे है.आपके पिता ने जाकर बीच बचाव किया.

पर बात बढ़ी और आपके पिता ने उन लोगो को बुरी तरह से घायल कर दिया. विश्रामगढ़ और संग्रामगढ़ के बीच वैसे तो कभी कोई नाराज़गी की बात नही थी. पर जिन लोगो से आपके पिता उलझ पड़े थे, उनमे से एक वहाँ के ठाकुर का छोटा बेटा रुद्रसेन भी था. जो की बहुत ही घटिया और आवारा किस्म का आदमी था. वैसे तो बात छोटी सी थी पर रुद्रसेन के मन मे एक आग जल गयी थी.

थोड़े दिन मे ही ये बात घर घर मे फैल गयी थी की, दोनो गाँव के ठाकूरो के लड़को मे कुछ हुवा है. पर सदियो से दोनो गाँवो मे बड़ा ही प्रेम था. तो आपके बुज़ुर्गो ने बात को जैसे तैसे संभाल लिया और बात आई गयी हो गई. कुछ दिन शांति से गुज़रे. पर वो कहते है ना की होनी को कोन टाल सकता है. समय अपनी चाल खेल रहा था. मुझे आज भी याद है,उन दिनों जब गाव मे डर का माहौल पसरा पड़ा था. हर गली खून से रंग गयी थी. हम लोग बस जी ही रहे थे.

उनकी हर एक बात को मै बड़े ही गोर से सुन रहा था. बाहर हवाए और भी तेज हो चली थी.

कौशल्या ने बताना शुरू किया की आपके पिता की कीर्ति हर ओर होने लगी थ. जितना मान आपके दादा का था. उस से कही ज़्यादा अब आपके पिता का था. उस छोटी सी उमर मे ही उन्होने सारे गाँव का दिल जीत लिया था.पर वो कहते है ना कि तकदीर मे क्या लिखा कौन जाने, तो समय बदलने को बेताब खड़ा था. दुनिया मे जितनी भी नफ़रत के कारण है वो जर,ज़मीन और जोरू है ऐसा लोग कहते है और आपके पिता भी कुछ ऐसा ही काम कर बैठे.

…………………………………………………………………… कुछ पल खामोशी छाई रही, फिर मैने कहा आगे क्या हुवा ?.कौशल्या बोली आपके पिता ने भी एक ग़लती की. वो मोहब्बत कर बैठे.मैने कहा कि तो उसमे ग़लत क्या था.आख़िर प्यार करना कोई गुनाह थोड़ी ना है

कौशल्या कहने लगी आकाश बाबू तब जमाना आज जैसा नही था. और गाँवो मे तो आज भी प्रेमियो को मार कर पेड़ पर टाँग दिया जाता है. तो उन दिनों की तो आप पूछो ही मत. मैने कहा मेरी माँ का क्या नाम था. वो बोली की वसुंधरा देवी. पर सब उन्हे छोटी ठकुराइन कहते थे.मैने कहा क्या मेरी माँ वो ही औरत थी जिनसे मेरे पिता ने प्रेम किया था. कौशल्या बोली कि हाँ वो वही थी और साथ मे वो संग्रामगढ़ के ठाकूरो की बेटी भी थी.

कौशल्या ने पास रखी सुराही से पानी का जग भरा और मुझे पकड़ाते हुवे बोली की थोड़ा पानी पी लो. मैने खिड़की से बाहर अंधेरे मे देखा दूर कही बिजली चमक रही थी. मैने कुछ घुट भरे और जग को नीचे रख दिया.मेरे सर की हर एक नस तेज़ी से भड़क रही थी.आज ज़िंदगी मे पहली बार मुझे अपने परिवार के बारे मे जानने का मोका मिला रहा था.पर यहा कुछ भी ऐसा नही था जो नॉर्मल हो. बल्कि मेरे मन मे कुछ और नये सवाल खड़े हो गये थे. मैने कहा अगर मेरी मा संग्रामगढ़ की थी तो भी उनके विवाह मे क्या दिक्कत थी. कौशल्या बोली आकाश बाबू आप को सच मे कुछ नही पता. सदियो से इन दोनो गाँवो मे भाई चारा था. और सभी लड़कियो को बेटी का दर्जा देते थे. दोनो गाओ मे इस कदर प्रेम था की वो लोग एक दूसरे के यहा विवाह नही करते थे.

सब कुछ ठीक था पर आपके पिता ना जाने कैसे वसुंधरा को दिल दे बैठे. कमसिन उमर की वो चुहल बाजी ना जाने कब मोहबत मे बदल गयी.पर असली धमाका तो तब हुवा जब चारो दिशाओ मे इन दोनो के प्रेम के किस्से सुनाई देने लगे. कुछ समय तक तो इन सब बातो को अफवाह ही माना गया. पर वो कहते है ना की धुआ वही उठता है, जहा आग हो. एक दिन रुद्रसेन ने अपनी बहन को आपके पिता के साथ देख लिया.

रुद्रसेन तो पहले से ही आपके पिता से खार खाए बैठा था. और फिर उसकी बहन दुश्मन से इश्क़ कर बैठी थी उसकी रगो मे भी तो ठाकुरोका ही खून दोद रहा था. रुद्रसेन भी अपनी जगह सही था. अपने खानदान की इज़्ज़त को यू किसी और के साथ देख कर किसी का भी खून खोलेगा ही तो वहा पर बड़ी बहस बाजी हो गयी .उसे वसुंधरा को गालिया देना शुरू कर दिया.

ठाकुर अश्विनप्रताप सिंगने बड़ी कोशिश की उसको समझाने की पर वो कहा मानने वाला था. आपके पिता के प्यार ने रुद्रसेन के मन मे जलती नफ़रत की ज्वाला मे घी का काम कर दिया था. जब उनसे नही सहा गया वो रुद्रसेन से उलझ गये. पर वसुंधरा देवी बीच मे आ गयी.एक तरफ उनकी मोहबत थी और दूसरी ओर उनका भाई उन्हे डर था. की कही ये दोनो आपस मे कुछ कर ना बैठे.

तो उसने अश्विनप्रताप सिंगजी को अपनी कसम देकर वहाँ से भेज दिया और रुद्रसेन वसुंधरा देवी को अपने साथ संग्रामगढ़ ले गया. ये कोई छोटी घटना नही थी आख़िर ठाकूरो की इज़्ज़त का मामला था. शाम होते होते संग्रामगढ़ से सैकड़ो आदमियो को लेकर रुद्रसेन उसके और भाई और उसके पिता यानी आपके नाना बड़े ठाकुर रंजीत सिंग भी हवेली के सामने आ गये और आपके दादा जी को ललकारा. जिस हवेली को कभी कोई नज़र उठा

कर भी नही देखता था. जिस हवेली मे लोग आज तक फरियाद ही लेकर आते थे. आज उसके दरवाजे पर एक शिकायत आ गयी थी.शिकायत तो क्या थी समझ लीजिए की एक सैलाब ने दस्तक दे दी थी. ये एक ऐसी तूफान की आहट थी जो आया और अपनी साथ इस हवेली का सबकुछ बहा ले गया.सारी खुशिया जैसे कही खो ही गयी.

मेरा दिल धड़ धड़ करके धड़क रहा था. साँसे मेरे काबू मे नही थी.मै पल दर पल उलझता ही जा रहा था. बाहर टॅप टॅप करके बारिश की बूंदे बरसने लगी थी.खिड़की से ठंडी हवा आ रही थी पर वो मेरे पसीने को सूखा नही पा रही थी. कौशल्या ने कहा की खाने का समय हो गया है. आप पहले कुछ खा ले फिर मै आपको पूरी बात बताती हू. पर मैने मना करते हुवे कहा की मुझे भूख नही है. आप आगे बताए.

कुछ देर कौशल्या चुप रही फिर वो बताने लगी. जिस दिन वो लोग हवेली तक आए, उस दिन आपके दादा जी किसी काम से बाहर गये हुवे थे. वरना वो मनहूस दिन टल जाता और आपके पिता भी वाहा नही थे .ठाकुर रुद्रसेन की ललकार को सुनकर आपके चाचा ठाकुर अशोक जिन्होने जवानी मे नया नया कदम ही रखा था और ठाकूरो का खून तो वैसे भी उबाल मारता ही रहता है.पर फिर भी उन्होने थोड़ी समाझधारी दिखाते हुवे रंजीत सिंग से कहा की आप लोग अंदर आइए पिताजी आने ही वाले है.जो भी है आप उनसे बात कर लेना. पर रुद्रसेन पर तो उस दिन जैसे खून सवार था. उसने अशोक को बुरा भला कहना शुरू किया तो हवेली के लोग भी भड़क उठे. पर अशोक ने उन्हे शांत करवाया धीरे धीरे गाँव के लोग भी जुटने लगे थे.

अशोक ने काफ़ी कोशिश की उन लोगो को समझाने की परंतु जब काल सर पर नाच रहा हो तो बुधि काम नही करती. रुद्रसेन जो की लगातार बदजुबानी कर रहा था. उसने हवेली की औरतो को जब नंगा करने की बात की तो ठाकुर अशोक की सबर का बाँध टूट गया और उन्होने ना चाहते हुवे भी हथियार उठा लिया.देखने वाले बता ते है की दोनो तरफ से तलवारे खिच गयी थी.

पर रुद्रसेन पूरी तैयारी से आया था और उसे तो अपनी बेइज़्ज़ती का बदला लेना था. तो अशोक और वो आमने सामने आ गये.उमर भी क्या थी उनकी बस जवानी मे कदम ही तो रखा था.दोनो पक्षो मे गरमा गर्मी होने लगी. रुद्रसेन ने जैसे ही ज़ुबान खोली अशोक का पारा गरम तो था ही बस फिर युध शुरू हो गया .चारो तरफ मार काट मच गयी.

अशोक की बंदूक से चली गोली ठाकुर रंजीत सिंग की छाती को बेधती चली गयी और वो वही पर गिर पड़े. तभी पीछे से रुद्रसेन ने अशोक पर वार कर दिया और उनको लहू लुहन कर दिया.गाँव के लोग भी हवेली के लिए लड़ने लगे. पर तब तक रुद्रसेन ने अपना काम कर दिया था. हवेली का दरवाजा खून से रंग गया था.

जब आपके पिता वापिस आए तो देखा की गाँव पूरी तरह से सुनसान पड़ा है.उनका माथा ठनका वो तेज़ी से हवेली की ओर आए और वाहा का नज़ारा देख कर उनका कलेजा ही जैसे फटने को हो गया. हवेली के दरवाजे पर लाशो का ढेर लगा पड़ा था. और सबसे उपर आपके चाचा ठाकुर अशोक का कटा हुवा सर रखा था.

ये सुनकर मेरा दिल रो पड़ा.आँसू आँखो से बहने लगे. ऐसा लगा जैसे मेरी किसी ने जान ही निकल दी हो. मेरी रुलाई छूट पड़ी.

कुछ देर मै सुबक्ता रहा. फिर कौशल्या बोली आकाश इन आँसुओ को संभाल लो इन्हे यू जाया ना करो और मेरी आँखो से आँसू पोंछने लगी. पर मेरा दिल भरा हुवा था. मै रोता ही रहा.कौशल्या बोली, इसी लिए तो हम ये सब आपसे छुपा कर रखना चाहते थे क्योंकि हमे पता था की आप ये सब सहन नही कर पाएँगे बाहर बारिश अब कुछ ज़्यादा तेज हो गयी थी.

मैने टूट ती हुवी आवाज़ मे पूछा, फिर क्या हुवा…… वो बताने लगी. बोली आपके पिता ने जब वो मंज़र देखा वो किसी बुत की तरह खड़े रह गये.अपने भाई की लाश देख कर वो जैसे टूट ही गये थे. कितनी ही देर वो अपने भाई के शव से लिपट कर रोते रहे .फिर उन्हे कुछ सूझा वो अंदर गये तो उनको और भी सदमा लगा. मैने कहा अंदर क्या हुवा.वो बोली की अंदर आपकी दादी सा की लाश पड़ी थी और पास मे ही हवेली की और औरते भी मरी पड़ी थी.

पूरा परिवार तहस नहस हो गया था. तब तक हम लोग भी हवेली पहुच गये थे. मैने मालकिन की लाश पर कपड़ा डाला. आपके पिता का बहुत ही बुरा हाल हो गया था. अश्विनप्रताप सिंगजी तो जैसे पगला ही गये थे.उनकी आँखो मे जैसे खून सा उतर आया था. उन्होने अपनी जीप निकली और हथियार लेकर चल पड़े संग्रामगढ़ की ओर एक ऐसा तूफान शुरू हो गया था. जिसने दोनो गाँवो को तबाह ही कर दिया.

अब इतना बड़ा कांड हो गया था. तो ज़िले की पुलिस भी मुस्तैद हो गयी थी और आपके पिता को संग्रामगढ़ की सीमा पे ही रोक लिया गया था. पर ठाकुर साहब एक तूफान बन चुके थे. उनको बस अर्जुनसिंगजी ही रोक सकते थे उनको खबर भिजवा दी गयी थी पर किस्मत को कुछ और ही मंजूर था. जैसे ही ये मनहूस खबर उनको पता चली उसी पल उनको लकवा मार गया और उनको इलाज के लिए ले जाना पड़ा. दूसरी ओर जैसे तैसे करके ठाकुर अश्विनप्रताप सिंगको पुलिस ने रोका वरना कुछ लाशें और गिरती.उस रात दोनो गाँवो मे शायद ही कोई घर होगा जहा चूल्हा जला हो .हवाए भी जैसे रो पड़ी थी. उस दिन हस्ती खेलती हवेली किसी विधवा दुल्हन की तरह हो गयी थी.

मुनीम जी तो बड़े ठाकुर के पास चले गये थे.पर मै पूरी रात यही पर थी बड़ा ही दिल दहलाने वाला मंज़र था. वो पुलिस ने सारी लाशो को कपड़े से ढक दिया था. पर दीवारो से ताज़ा खून अभी भी टपक रहा था. हवेली की सुरक्षा बढ़ा दी गयी थी. पर अब यहा कोई नही था जिसे सुरक्षा की ज़रूरत थी और दूसरी ओर ठाकुर अश्विनप्रताप सिंगको पुलिस ने बड़ी मुश्किल से संभाला हुवा था.

तभी तेज हवा से खिड़की ज़ोर से खड़खड़ाई तो मेरा ध्यान टूटा. बाहर बारिश अब और तेज हो गयी थी और एक तूफान मेरे सीने मे भी उमड़ आया था. मै बस रोना चाहता था. दहाड़ मार मार कर रोना चाहता था. भगवान ये तूने कैसा ज़ुल्म किया, परिवार से मिलाया भी और नही भी. ये दर्द आख़िर मुझे क्यो दिया और ये दर्द भी ऐसा था की कोई दवा इसका इलाज नही कर सकती थी. बस मुझे अब इसको सहते रहना था.

मैं उठा और खिड़की से बाहर बरसती बारिश को देखने लगा. पर ये बारिश उस बरसात के सामने कुछ भी नही थी जो मेरे दिल मे हो रही थी. पता नही मै कितनी देर तक वही खड़ा खड़ा उस तूफ़ानी बारिश को देखता रहा. जब मेरा मन कुछ हल्का हुवा मै कौशल्या की ओर मुड़ा और कहा की आगे क्या हुवा बताइए कौशल्या बोली रात बहुत हो गयी है. आप अभी सो जाइए कल बात करेंगे. मै गुराते हुवे बोला की सुना नही तुमने मैने क्या कहा है.

कौशल्या ने बताना शुरू किया की अगले दिन सारा गाँव शमशान घाट मे मोजूद था. आज कई लाशो को का दाह-संस्कार किया गया था. आपके पिता बदले की आग मे इस कदर जल रहे थे की उन्होने उस समय प्रतिज्ञा ली की वो अपने घरवालो की चिता की राख ठंडी होने से पहले रुद्रसेन का सर काट देंगे. पुलिस भी मोजूद थी वहाँ, पर ठाकूरो का रुतबा इतना ज़्यादा था की वो बस देखते ही रहे.

एक ऐसी ज्वाला भड़क उठी थी की जिसमे दोनो गाँव झुलस रहे थे. वो गाँव जिनके संबंधो मे इतनी मिठास थी अब नफ़रत पैदा हो गयी थी. एक दूसरे के बैरी हो गये थे. हर तरफ बस तनाव सा फैल गया था. यहा तक की हवाओ ने भी अपना रुख़ मोड़ लिया था. आकाश बाबू, उस दिन हवेली पर ऐसा ग्रहण लगा की आज तक उजाला नसीब नही हुवा.

उसकी हर एक बात मेरे दिल पर बिजली गिरा रही थी और बाहर आसमान जैसे फटने को ही था.

वो कहने लगी की रुद्रसेन के खानदान का भी रोब हुवा करता था. पुलिस उसे चाहकर भी गिरफ्तार नही पर पाई. इधर आपके पिता उसके खून के प्यासे हो चुके थे.हवेली के बाहर चप्पे चप्पे पर कड़ी सुरक्षा थी.परंतु आपके पिता ना जाने कैसे सबको गच्चा देकर निकल भागे और वसुंधरा के घर जा पहुचे.

एक कयामत हुवी थी जिसमे हवेली लुट गयी थी और ऐसा ही कुछ अब संग्रामगढ़ मे होने वाला था. बताने वाले बता ते है की उस रात ठाकुर अश्विनप्रताप सिंगने ऐसा रक्तपात मचाया की आज भी कभी उस रात का जिकर हो जाए तो लोगो की हड्डिया कांप जाती है. एक ऐसा ज़लज़ला बरसा था उस दिन रुद्रसेन के गाँव पर की ,बस फिर कुछ नही बचा. ठाकुर अश्विनप्रताप सिंगने अपनी कसम पूरी की और टीले के शिव मंदिर मे रुद्रसेन का कटा हुवा सर अर्पण कर दिया.

ये एक बहुत बड़ी घटना थी उस समय की. दो खानदान तबाह हो गये थे. हवेली अब पहले जैसी नही रही थी पर समय अपनी गति से चलता रहा. कुछ दिन गुजर गये आपके दादा जी भी हस्पताल से घर आ गये थे. पर लकवे से उनकी दोनो टाँगे खराब हो गयी थी .दोनो बाप-बेटो मे अब पहले जैसा प्यार नही रहा था. बड़े ठाकुर तो ज़्यादातर अपने कमरे मे ही रहते थे .

थोड़ा समय और गुजर गया.पर अश्विनप्रताप सिंगके मन मे अब भी कही वसुंधरा के प्रति प्रेम का सागर हिलोरे मार रहा था. और ऐसा ही कुछ वसुंधरा के मन मे भी चल रहा था. और वैसे भी मोहबत कहा किसी के रोकने से रुकी है वो कहा ऊँच-नीच समझती है.तो एक दिन अश्विनप्रताप सिंग वसुंधरा को अपनी पत्नी बना कर हवेली ले आए. वसुंधरा का बड़ा भाई और उसकी मा की इतनी हिम्मत नही थी की वो अश्विनप्रताप सिंगका विरोध कर सके.

जब बड़े ठाकुर को ये बात पता चली वो कुछ नही बोले पर उनके दिल मे ये मलाल ज़रूर था. की इस लड़की के पीछे उनका पूरा परिवार काल के गाल मे समा गया. पर बेटा जब उसे घर ले ही आया तो बस मान मसोस कर रह गये.वसुंधरा देवी के आने से आपके पिता तो प्रसन्न थे.पर अब हवेली मे वो बात नही रही थी एक अजीब सा सन्नाटा सा चौबीस घंटे छाया रहता था.

और ठीक नो महीने बाद यहा एक खुश-खबरी आई.जब आपका जनम हुवा ठाकुर ने सारे गाँव को भोज का निमंत्रण दिया और सारे गाँव को किसी नवेली दुल्हन की तरह सज़ा दिया .चारो ओर खुशिया ही खुशिया थी पर ये खुशिया बस थोड़ी देर की ही थी. आपके दादा अश्विनप्रताप सिंगसे तो बात नही करते थे पर आपसे बड़ा प्यार था. उनको घंटो आपको खिलाया करते थे. मै खुद देखा करती थी.

दिन किसी तरह से कट रहे थे. आपके आने से हवेली भी जैसे दुबारा से खिल गयी थी.पर तभी कुछ ऐसा हो गया जिसकी उम्मीद किसी ने नही की थी ये कहकर कौशल्या चुप हो गयी मै उनकी ओर देखने लगा मेरे दिल-ओ-दिमाग़ मे हज़ारो तरह की भावनाए उमड़ आई थी .अब मै बड़ी शिद्दत से अपने परिवार के साथ जीना चाहता था. मै उनके साथ हसना चाहता था. रोना चाहता था. पर अफ़सोस अब कोई नही था.

वो आगे कहने लगी की बात उन दिनो की है आपका पहला जनमदिन आकर गया ही था की एक रोज वसुंधरा की मा यानी आपकी नानी हवेली चली आई उन्होने बड़े ठाकुर से कहा की अब जो हो गया वो हो गया उसको तो बदला नही जा सकता .पर मै अब चाहती हूँ की मेरी बेटी और दामाद चैन से रहे. मै अपने दोह्ते को देखने के लिए मरी जा रही हू तो खुद को रोक ना सकी और चली आई. अगर आप आज्ञा दे तो कुछ दिन वसुंधरा को हमारे घर पे भेज दीजिए. काफ़ी दिनो से इस से मिली नही हू.तो जी भर के बाते भी कर लूँगी अपनी बेटी से.

बड़े ठाकुर ने तो कुछ नही कहा और अश्विनप्रताप सिंगभी वसुंधरा को नही जाने देना चाहते थे .परंतु वसुंधरा अपनी मा को देख कर पिघल गयी और जाने की ज़िद करने लगी. तो हार कर अश्विनप्रताप सिंगको हा कहनी पड़ी.पर उन्होने आप को ये कहके रोक लिया की आकाश के बिना पिताजी का मन नही लगेगा,तो इसे आप यही छोड़ जाओ.आपकी मा चली गयी और ऐसी गयी की फिर कभी वापिस नही आई.

आज की रात बड़ी ही भारी थी मुझपर. दिल को एक से एक झटके लग रहे थे. मैने कहा की क्यो , क्यो नही आई वो फिर वापिस. कौशल्या ने एक ठंडी सांस ली और बोली की यहा से जाने के कुछ दिन बाद उनके घरवालो ने उनको जहर देकर मार दिया. ये सुनना मेरे लिए किसी वज्रपात से कम नही था. पर मै कुछ कर भी तो नही सकता था. तकदीर ने मुझे एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया था की सब कुछ होकर भी कुछ नही था मेरे पास. ये जो एक पल की खुशी मिली थी किसी रेत की तरह मेरी मुट्ठी से फिसल गयी थी. दिल टूट कर बिखर गया था मेरा.पर फिर भी हिम्मत कर पूछ ही लिया की उसके बाद क्या हुवा.

कौशल्या ने बताना शुरू किया की जब आपके पिता को वसुंधरा देवी की मोत की सूचना मिली तो उन पर जैसे पहाड़ ही टूट पड़ा.उनको तो बस उनका ही सहारा था. वो इस कदर टूट गये की फिर कभी संभाल ही ना पाए. उन्होने खुद को शराब मे डुबो दिया आपकी नानी को सज़ा हुवी और जेल मे ही उनकी मोत हो गयी. सब तकदीर का लेख है आकाश बाबू एक ऐसा खानदान जिसके झंडे चारो दिशाओ मे गढ़े थे अब तबाह ही हो गया था. समझो आपके पिता ने अपना गम भूलने को शराब को साथी बना लिया था.

दूसरी ओर बड़े ठाकुर का हाल भी कुछ ऐसा ही था. पर वो आपके सहारे जी रहे थे किसी तरह से दिन यू ही काट ते रहे. अश्विनप्रताप सिंग अब नशे मे धुत्त घूमते रहते.कभी किसी से उलझते तो कभी किसी से. ठाकूरो की वर्षो की इज़्ज़त अब धूल मे मिलने लगी थी. जिस हवेली के नाम से सारा गाँव झुक जाया करता था. वो अब ठाकुर के सामने बोलने लगे थे. हवेली का सूरज अस्त होने लगा था. तो कुछ और दुश्मनो ने भी सर उठाना शुरू कर दिया था.

शराब का नशा ऐसा लगा की अब वो एक पल भी उनके बिना नही रह सकता थे. पर शराब ही अकेली नही थी कुछ उनकी संगत ऐसी हो गयी थी की वो शराब के साथ साथ अब वो शबाब पर भी मूह मारने लगे थे. फिर उनको ऐसी लत लगी की हर औरत बस उन्हे भोगने को ही दिखती थी जी किया उसको ही पकड़ लिया.अब वो पहले वाले ठाकुर अश्विनप्रताप सिंग नही रहे थे.नशे मे चूर वो इस कदर हो चुके थे की गाँव की औरते उनको देखते ही अपना रास्ता बदल दिया करती थी.

कुछ दीनो तक तो गाँव वालो ने उनकी हरकतो को सह लिया. पर अब ठाकुर मे वो रुतबा नही था. तो धीरे धीरे गाँव वालो की हिम्मत भी बढ़ने लगी. आए दी ठाकुर किसी ना किसी से भिड़ता ही रहते थे. जो इजत थोड़ी बहुत बची थी वो भी अब ना के बराबर ही रह गई

थी. ठाकुर अश्विनप्रताप सिंग बस एक ऐसे इंसान बनकर रह गये थे जो बस शराब और शबाब से ही जीता था. उनका गोरव नष्ट हो गया था.

आपकी उमर ३ साल हुवी तो आपके दादा जी ने आपको लंडन भिजवा दिया और कहा की वहाँ आकाश को एक आम आदमी की तरह से जीना सीखना होगा. इसकी मदद वही की जाएगी जब इसको ज़रूरत हो. हम चाहते है की,आकाश संघर्षों की आग मे जल कर एक ऐसा फौलाद बने जिसमे सूरज तक को पिघला देने की तपिश हो.

आपके लंडन जाने के बाद बड़े ठाकुर ने खुद को एक कमरे मे क़ैद कर लिया. मुनीम जी बस उनके साथ रहते,पर फिर कभी वो हवेली से बाहर नही गये. आपके जाने के कुछ दिनो बाद एक बात और हुई. बड़े ठाकुर ने आपके पिता को घर से बाहर निकाल दिया और जायदाद से बेदखल कर दिया. ऐसा क्यो हुवा ये मुझे मालूम नही है.

मैने उनको टोकते हुवे कहा की क्या मेरे पिता ज़िंदा है ? कौशल्या कुछ नही बोली. मैने फिर पूछा तो उसने कहा की नही. हवेली से निकले जाने के कुछ साल बाद उनकी भी बीमारी से मोत हो गयी थी. उनकी मोत की सूचना हस्पताल से आई थी.इस घटना से बड़े ठाकुर और भी हताश हो गये थे. उन्होने बिस्तर पकड़ लिया था. लकवे के शिकार तो पहले ही थे और फिर उन्होने अपने जाने से कोई ६ महीने पहले मुनीम जी को कहा की आकाश के पच्चीस साल का होते ही उसे यहा बुलवा लेना और उसे सब कुछ संभला देना.

मेरी आँखे फिर से डब डबा गयी मैने कहा की क्या दादाजी भी .... कौशल्या बोली हां आकाश बाबू वो भी अब नही रहे.

ये शब्द मेरे दिल को किसी तीर की तरह चीर गये. मै बुकका फाड़ कर रोने लगा. तभी कही बादल गरजा और बरसात और भी तेज हो गयी ना जाने रात का कोन सा पहर चल रहा था. मेरे अंदर की सारी भावनाए बाहर निकल आई थी.मैं उठा और बाहर को भाग चला. अंधेरा इतना घनघोर था की कुछ नही दिख रहा था. पर मुझ पता था की मेरी मंज़िल कहा है. मै बस उस तूफ़ानी बारिश मे रोता हुवा दौड़ता जा रहा था. मेरी साथ बरसात भी रो पड़ी थी. मै गिरता-पड़ता चला जा रहा था. मुझे अब कोई परवाह नही थी मेरा सब कुछ जैसे छूट गया था. आख़िर मै अपनी मंज़िल पर पहुच ही गया था.

५

मैं हवेली के आँगन मे खड़ा था. मै अपने घर लौट आया था. कल तक जो पराया लगता था. अब मुझे सब अपना लग रहा था. ऐसा लग रहा था कि मे कभी इस जगह से जुड़ा हुआ ही नही था. मैं दौड़ता हुवा उपर की मंज़िल की ओर भागा और सीधा उसी कमरे मे गया जहाँ मैने वो तस्वीरे देखी थी. वो कमरा वैसे ही खुला पड़ा था जैसे मैने उसको छोड़ा था.

अंधेरे मे ही उन तस्वीरो को टटोल कर मैने अपने हाथो मे उठा लिया और अपने सीने से लगाकर ना जाने कितनी देर तक मैं रोता ही रहा. ये मेरे माँ-बाप की तस्वीरे थी. जो मुझ अभागे को अकेला छोड़ कर चले गये थे.मैं बस उन तस्वीरो को लिए दरवाजे के सहारे बैठा ही रहा और सोचने लगा कि काश मेरी जिंदगी मे ये रात आई ही ना होती तो सही रहता.

मैं निढाल सा बैठा हुवा था. तभी मुझे कुछ लोगो की आवाज़े सुनाई दी. मैने देखा कि कौशल्या और रूपा भी मेरे पीछे पीछे आ गये थे. कौशल्या ने लालटेन को कुर्सी पर रख दिया जिसे से सारे कमरे मे रोशनी सी हो गयी. कौशल्या अपनी सांसो को नियंत्रित करते हुवे बोली मालिक आपको यहा ऐसे नही आना चाहिए था. मुनीम जी को पता चलेगा तो मेरी शामत आ जाएगी.आप वापिस चलिए. पर वो मेरी हालत कहाँ समझ सकती थी. मैने उसको कोई जवाब नही दिया बल्कि वही पर बैठा रहा. वो लोग भी हताश होकर कमरे मे ही बैठ गये ,ना जाने सुबह होने मे अभी कितनी देर थी. बारिश अब और भी घनघोर हो चली थी, मेरे आँसुओ की तरह. ऐसे ही ना जाने किस पहर नींद ने मुझे अपनी बाहों मे ले लिया.

सुबह जब मेरी आँख खुली मैने देखा कि हल्की हल्की बारिश अब भी हो रही थी .मुझे लगा जैसे मेरा पूरा बदन अकड़ सा गया हो.नींद की खुमारी जब टूटी मैने देखा कि रूपा उस धूल भरे बेड पर ही सोई पड़ी है. सोते हुए वो किसी प्यारी सी गुड़िया की तरह लग रही थी. पर कौशल्या मुझे कही दिखाई नही दी. मैं उठा और नीचे की ओर चल दिया और नीचे बरामदे मे डाली हुई कुर्सियो पर बैठ गया और आँगन मे गिरती बारिश की बूँदो को देखने लगा. ऐसा लगा जैसे कि आसमान भी मेरे दर्द से जुड़ सा गया था.

थोड़ी देर बाद रूपा भी नीचे उतर आई और मुझसे कहने लगी कि मुझे क्यो नही उठाया.मैने कहा कि मैं तुम्हे परेशान नही करना चाहता था. वो बोली माँ कहाँ है ? मैने कहा

मुझे नही पता .वो बोली बड़ी प्यास लगी है इधर पानी कहाँ है मैने कहा मुझे नही लगता इधर पीने का पानी होगा, क्योंकि इधर कोई रहता नही है.वो बोली अब मैं क्या करूँ.

मैने कहा तुम अपने घर जाओ उधर पी लेना पानी. वो बोली घर तक जाऊंगी तो कही मैं मर ही ना जाऊ इतनी दूर पहुचते पहुचते. फिर वो बोली कि कुआँ तो है कुवें से पानी निकाल लेती हू. मैने कहा जैसी तुम्हारी मर्ज़ी और वही कुर्सी पर बैठे बैठे उन फुहारो को देखने लगा. दिमाग़ अभी भी दर्द कर रहा था. आधा घंटा बीत चला था. पर रूपा वापिस नही आई तो मुझे थोड़ी चिंता होने लगी.

थोड़ी देर राह देखने के बाद मैं उसको खोजने के लिए जिस तरफ वो गयी थी उस ओर चल पड़ा. मैने देखा कि उस ओर काफ़ी झाड़ियाँ और पेड़ पोधे उगे हुवे है. मैं कुवे की मुंडेर पर चढ़ गया, परंतु मुझे रूपा नही दिखी. बारिश ने फिर से झड़ी लगा दी थी. मैं भीगने लगा पर मुझे उसकी चिंता हो रही थी.मैने उसको आवाज़ लगाना शुरू कर दिया रूपा रूपा.......रूपा... कुछ देर तक मैं आवाज़ लगाता रहा.

फिर झाड़ियो मे कुछ सुरसूराहट हुई. मैने सोचा कि कही कोई जानवर तो नही है.पर फिर देखा कि रूपा झाड़ियो को हटाती हुवी मेरी ओर आ रही है. उसने मुझसे कहा कि क्या हुवा ? क्यो पुकार रहे थे. मैने कहा कि कहाँ गयी थी तुम. कितनी देर हो गयी मुझे फिकर हो रही थी तुम्हारी.

वो बोली कि वो मैं.. मैं ...न् ...मैने कहाँ मैं क्या ?वो शरमाते हुवे बोली कि मैं जंगल होने चली गयी थी. मैने कहा अच्छा , कोई बात नही. हम दोनो बारिश मे खड़े भीग रहे थे. रूपा की सफेद सलवार उसकी ठोस जाँघो पर चिपक गयी थी और उसकी जाँघो का मस्ताना नज़ारा मुझे देखने को मिल रहा था. हालाँकि मैं रात से थोड़ा दुखी था. पर मेरी भावनाए उस कातिल नज़ारे को देख कर भड़क उठी थी.

गाओ मे अक्सर औरते और लड़किया अंडरगार्मेंट्स नही पहना करती है और उपर से उसने सफेद सूट-सलवार डाला हुवा था. बाकी काम बारिश ने कर दिया था. ना चाहते हुवे भी मेरी नज़रे रूपा के ताज़ा-ताज़ा खिले हुवे योवन का दीदार करने लगी.उसकी चुन्नी थोड़ी से सरक गयी थी तो उसके उन्नत उभार जिसकी गुलाबी स्तनाग्र उसके गीले सूट से बाहर आने को बेताब लग रही थी.

मुझे लगा कि मैं कही अपने होश ना खो दूं. पर तभी रूपा की आवाज़ मुझे वापिस धरातल पर खीच लाई. वो बोली अब क्या इधर ही भीगना है. वापिस नही चलना है क्या.मैं उसके साथ अंदर आ गया. रूपा अपने गीले कपड़ो को झटकने लगी मुझे भी ठंड सी लगने लगी थी मैने कमरो मे देखा तो मुझे कुछ सूखी लकड़िया और एक पुरानी माचिस मिल गयी.रुपा ने आग जला दी.जिस से थोड़ा अच्छा लगा.

ना जाने बादलों को क्या हो गया था. वो बिल्कुल भी रहम के मूड मे नही थे.दिन निकला ही था. पर आसमान मे काले बादल इस कदर छाए हुवे थे कि लग रहा था कि मानो रात हो गयी हो. उस अजीब से वातावरण की खामोशी को तोड़ती हुवे रूपा ने पूछा कि आप विलायत मे क्या करते थे. मैने उसे बताया कि मैं वहाँ पर पढ़ता था और छोटे-मोटे काम भी करा करता था.

वो बोली आप इतने अमीर है, फिर भी आप काम करते थे. मैने कहा कि यहाँ आने के बाद पता चला की में अमीर हु,उधर मैं ग़रीब ही था. वो बोली अभी तो आप यहाँ ही रहोगे ना.मैने कहा हन अभी मैं अपने घर मे ही रहूँगा.

बारिश हो रही थी तो आज मजदूर भी नही आने वाले थे. जबकि मैं हवेली के अपने घर के एक एक हिस्से को अच्छे से देखना चाहता था.

मैने कहा रूपा मैं हवेली को अच्छे से देखना चाहता हू. क्या तुम मेरी मदद करोगी. वो बोली कि हाँ पर मुझे भूख लगी है. मैं पहले कुछ खाना चाहती .हू मैने कहा कि पर इधर तो कुछ भी नही है खाने के लिए. मैने कहा बारिश रुकते ही तुम्हारे घर चलेंगे.वो बोली कि ठीक है, आओ पहले देखते है. मैं भी बहुत उत्सुक हू.मैं हमेशा से ही इधर आना चाहती थी पर. माँ मना करती थी और अकेले आने की हिम्मत होती ही नही थी.

हम अंदर जाने की बात कर ही रहे थे कि हवेली के गेट पर एक कार की झलक दिखी और फिर वो अंदर आ गयी. कार का दरवाजा खुला और कौशल्या उतरी. अपनी छतरी लिए उसके दूसरे हाथ मे एक बास्केट थी. वो हमारे पास आई और खाली पड़ी कुर्सी पर बैठ गयी. उसने कहा कि माफी चाहूँगी सुबह बिना बताए यहाँ से चली गयी पर वो क्या है ना मुझे नाश्ते की तैयारी करनी थी.

मैने कहा कोई बात नही फिर उसने बास्केट से थर्मस निकाला और हमे गरमागरम चाइ पकड़ा दी. साथ मे कुछ और चीज़े भी थी खाने की. अगले कुछ मिनट तक मेरा ध्यान पूरी

तरह से बस खाने पर ही रहा. जल्दी ही हम लोग नाश्ते से फारिग हो गये फिर चल पड़ा बातों का सिलसिला. मैने कौशल्या से पूछा कि मेरे घरवालो से तो गाँव के लोग नफ़रत करते है. तो क्या मुझसे भी ठीक से बात नही करेंगे.

कौशल्या बोली आकाश, अब जमाना बदल गया है. अब पहले जैसा कुछ भी नही रहा है और अब तुम्ही इस हवेली के वारिस बचे हो.तुम्हारे पुरखे बहुत कुछ छोड़ कर गये है.अब ये तुम पर है कि तुम कैसे जीना चाहोगे. तुम चाहो तो अपनी खोई हुवी प्रतिष्ठा पाने की कोशिश कर सकते हो या फिर वापिस जा सकते हो. हमे बड़े ठाकुर का आदेश था. तो हम ने पूरा किया. अब तुम अपनी संपत्ति को सम्भालो और हमें इस भार से मुक्त करो.

मैने कहा, पर आप लोग भी तो मेरे परिवार का ही एक हिस्सा है.आप लोग हमेशा से ही मेरे घरवालो के साथ थे. तो मेरा साथ भी दीजिए. कौशल्या बोली हम तो मरते दम तक आपके साथ है.पर अब को अपनी विरासत संभालनी होगी. वैसे भी सारी उमर हो गयी ये सुनते सुनते की मुनीम जी हवेली का सब कुछ खा गये. मैने कहा दुनिया कुछ भी कहे मैं नही मानता.मैं बस इतना जानता हू कि इस गाँव मे अगर कोई मेरा बचा है तो बस आप लोग ही हो.

कौशल्या थोड़ा सा मुस्कुरा दी. मुझे दुख भी था कि मेरा पूरा परिवार कैसे तबाह हो गया.पर थोड़ी तसल्ली भी थी कि ये लोग मेरे पास है. वो बरसते हुवे बादलो को देखकर बोली कि कई सालो बाद इतनी घनघोर बारिश आई है गाँव मे. आज तो रुकनी मुश्किल है. मैने कहा फूलचंद जी कब तक आएँगे. वो बोली कि उन्हे थोड़ा टाइम और लग जाएगा. कुछ कागज़ी कार्यवाही करनी है और फिर हवेली की मरम्मत और भी कई छोटे-मोटे काम है. ख़तम होते ही आ जाएँगे.

मैने कहा ठीक है. कौशल्या बोली,अब आप घर चलें. यहाँ कब तक यू बैठे रहेंगे. मैने कहा, नही मैं यही रहूँगा आप मेरा सामान घर से मंगवा दीजिए और जब तक बिजली नही लग जाती रात को रोशनी का इंतज़ाम भी करवा दीजिए.कौशल्या मुझे अकेले नही रहने देना चाहती थी पर मेरी ज़िद के आगे उसकी एक ना चली. तो उसने कहा कि बारिश रुकते ही आपके लिए नया बिस्तर और ज़रूरत की कुछ चीज़ी भिजवा दूँगी. पर अभी मैं जाती हू.घर पे भी कई काम पड़े है और ये तेज बारिश..

फिर उन्होने रूपा से कहा कि तुम आकाश के साथ ही रहना. मैं सांझ तक वापिस आऊंगी. तुम साथ रहोगी तो मुझे इनकी फिकर नही होगी इतना कहकर कौशल्या कार मे बैठी और चली गयी. रह गये मैं और रूपा. आग ठंडी होने लगी थी रुपा ने कुछ लकड़िया और डाल दी बारिश मे आग के पास बैठना एक अलग सा अहसास दे रहा था. रूपा बोली तुम लंडन से यहाँ कैसे आए.मैने कहा प्लेन से. वो बोली अच्छा , वो बोली तुम्हारा शहर कैसा होता है. मैने कहा जैसे तुम्हारे है. वो बोली मैं क्या जानू, मैं तो कभी शहर गयी ही नही. मैने कहा क्यो ?.वो बोली मुझे कौन ले जाएगा.

मैने कहा मैं कभी जाऊंगा तो तुमको ले चलूँगा साथ. वो बोली हम तो बस दिल खुश करने को जब कभी मेला लगता है तो उसी मे घूम आते है. दिल खुश हो जाता है. मैने कहा ये मेला क्या होता .है वो बोली अरे तुम्हे मेले का नही पता.मैने कहा सच मे नही पता.तो उसने मुझे बताया .मैने कहा कि अबकी बार जब मेला लगेगा मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा.कुछ देर और बाते करने के बाद मैने कहा आओ रूपा कुछ कमरो को खोल कर देखते है. वो बोली हाँ चलो.

हम लोग उपर की मंज़िल पर चले गये कुछ कमरो का ताला हम ने तोड़ डाला और देखने लगे इतना तो पक्का था कि अपने टाइम मे ये खंडहर बड़ा ही खूबसूरत था. हर कमरा बड़े ही करीने से सज़ा हुवा था. बस फरक इतना था कि वो सजावट वक़्त के थपेड़ो मे कही खो गयी थी मैने कहा रूपा खुशकिस्मत होंगे वो लोग जो यहाँ रहते होंगे.वो बोली हाँ काश मैं भी ऐसे ही घर मे रहती.

मैने कहा ये भी तो तुम्हारा ही घर है ना, जब तुम्हारा दिल करे तुम आ जाना. यहाँ पर काफ़ी धूल जमी हुवी थी तो हम लोग उसको साफ करने लगे तभी रूपा को उपर की स्लॅब पर कुछ दिखा. वो बोली उपर कुछ है. मैने कहा हाँ कुछ संदूक जैसा लग रहा है पर इसको उतारे कैसे उपर चढ़ा तो नही जाएगा. मैं कुछ ढूँढ ही रहा था कि मुझे गॅलरी मे एक पुराना स्टूल दिख गया जो अब बस नाम-मात्र का ही बचा हुवा था.

रूपा बोली तुम इसको कसकर पकड़ लेना मैं उपर चढ़ जाती हू मैने कहा स्टूल कही टूट ना जाए वो बोली अगर मैं गिरु तो तुम मुझे थाम लेना तो हम ने उसको सेट किया और रूपा उपर चढ़ ने की कोशिश करने लगी.पर वो चढ़ नही पा रही थी. वो बोली तुम इसको कसकर पकड़ लो मैं संदूक को खीचती हू और तुमको पकड़ा दूँगी तुम उसको नीचे रख देना. मैने कहा ठीक है, पर आराम से करना कही चोट ना लग जाए तुमको. संदूक थोड़ा

भारी था. जैसे ही रूपा ने संदूक को स्लॅब से खीचा स्टूल उन दोनो का भार नही से पाया और टूट गया रूपा झटके से मेरे उपर आ पड़ी और मुझे लिए लिए ही फरश पर आ गिरी.

अचानक से हुवी इस घटना से मैं संभाल नही पाया. पर शूकर था कि संदूक दूसरी ओर गिरा वरना हमारे सर भी फुट सकते थे कुछ पल तो समझ ही नही आया कि क्या हुआ रूपा मुझ पर लदी हुवी थी. मेरे हाथ उसके मांसल कुल्हो पर आ गये थे. उसकी सुडोल छातिया मेरे सीने मे धँसी जा रही थी मेरे लिए ये अलग सा ही अहसास था. वैसे गिरने से मुझे पीठ और पैर मे थोड़ी चोट लगी थी पर वो दर्द ना जाने कहाँ गायब सा हो गया था.

मैने देखा रूपा अपने चेहरे को मेरी बाहों मे छुपाए मेरे उपर पड़ी थी.ना चाहते हुवे भी मैने अपने हाथो से उसके दोनो कुल्हो को दबा दिया. रूपा की गरम साँसे मेरे चेहरे पर पड़ रही थी मुझे पता नही कैसा रोमांच सा चढ़ने लगा रूपा ने अपनी आँखे बंद की हुवी थी.एक पल मे ही मेरे सारे हार्मोंस आक्टिव हो गये थे. मैने धीरे से उसके कान मे कहा रूपा , पर वो कुछ ना बोली.शायद उसके लिए भी ये एक नया नया सा अहसास था.

आख़िर वो भी तो जवानी मे कदम रख चुकी थी. मैं उसकी पीठ सहलाने लगा तो उसने अपना मूह मेरे सीने मे छुपा लिया. मैने फिर से कहा रूपा उठ जाओ पर वो टाइम पता नही हमे क्या हो गया था. मैने उसे लिए लिए ही पलटी खाई और अब मैं उसके उपर वो मेरे नीचे हो गयी. उसके लरजते हुवे गुलाबी होंठो की मादकता मुझे बड़ी ही सुंदर लगी और उपर से निचले होठ पर एक छोटा सा काला तिल मैं तो कुर्बान ही हो गया जैसे मुझ पर खुमारी छाने लगी.

बड़ा ही नाज़ुक सा लम्हा था वो. मैं अपनी भावनाओ को रोकने की पूरी कोशिश कर रहा था. पर मेरा दिल मेरे काबू से बाहर हो गया था. रूपा की मासूमियत से मेरा अंग-अंग जैसे एक नये रंग मे रंग गया था. मैं अपने होशो-हवश खोते जा रहा था. और फिर मैं थोड़ा सा रूपा के उपर झुका और उसके कोमल होंठो को अपने लबो से जोड़ लिया. उफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफ़ कैसा ये अहसास था जो मेरी रूह तक मे उतर गया था.

ये मेरा पहला चुंबन था किसी लड़की के साथ.रूपा ने अपना मूह थोड़ा सा खोल दिया. मैने उसके निचले होठ को अपने मूह मे भर लिया और उसको चूमने लगा. मेरा लिंग पूरी तरह से खड़ा हो गया था और रूपा की योनि वाली जगह पर रगड़ खा रहा था. एक अजीब सी

परिस्थिति बन गयी थी मेरे लिए. जैसे समय रुक सा ही गया था. बड़ा ही अलग सा एहसास था. पर ये सब ज़्यादा देर नही चला. रूपा ने मुझे धक्का दिया और अपने से दूर कर दिया.

मैं बगल मे लुढ़क गया और अपनी तेज रफ़्तार से भागती हुवी सांसो को कंट्रोल करने लगा.रूपा उठ कर बैठ गयी और उसकी उपर नीचे होती स्तन भी उसकी बदहवासी का विवरण दे रही थी.बाहर घनघोर बरसात हो रही थी पर अंदर कमरे मे सन्नाटा पसर गया था. कुछ देर हम दोनो खामोश ही रहे जो भी कुछ पलो पहले जो कुछ हुवा था. उसने हम दोनो को एक अलग अहसास करवा दिया था.

रूपा उठी और कमरे से बाहर जाने लगी.पर दरवाजे पर जाकर ठिठक गयी और उसने नज़र भर कर मेरी ओर देखा. ना जाने वो कैसी कशिश थी उसकी नज़रो मे. उस पल मैं तो जैसे फ़ना ही होने लगा था. मैं दो कदम आगे बढ़ा और रूपा को खीचते हुवे उसे पास की दीवार से सटा दिया और एक बार फिर से अपने लबो को उसके लबो से जोड़ दिया. रूपा ने भी अपनी बाहें मेरी पीठ पर कस दी और मैं उसके शरबती होंठो से जाम पीने लगा.

मैं उसको ऐसे चूम रहा था. जैसे कि रेगिस्तान की गरम रेत पर नंगे पैर चलते हुवे किसी मुसाफिर को पानी का दरिया मिल गया हो. मैं दीवानो की तरह उसके लबो, गालो और गर्दन को चूमे जा रहा था. रूपा भी मेरे साथ उस अनकही भावनाओ के तूफान मे शामिल हो गयी थी. कुछ मिनिट तक हमारा ये सीन चलता ही रहा फिर मैने अपने होठ हटा लिए पर उसको अपनी बाहों मे जकड़े रहा.बाहर बरसती बारिश मे एक प्रेम का अंकुर फुट पड़ा था.

फिर रूपा मुझसे अलग हो गयी और गॅलरी मे आकर बारिश को देखने लगी. मैं भी उसके पास आकर खड़ा हो गया पर हम दोनो ही अब चुपचाप खड़े थे. मुझे समझ नही आ रहा था कि बात कैसे शुरू करू. आख़िर मैने चुप्पी तोड़ते हुवे कहा कि क्या हुवा तुम चुप क्यो हो. रुपा बोली कि तुमने ऐसा क्यो किया.मैने कहा मुझे नही पता बस हो गया. अपने आप मैने उसकी आँखो मे देखते हुवे कहा कि रूपा प्लीज़ मुझे ग़लत ना समझना. सब कुछ अपने आप ही हो गया.

रुपा अपनी बड़ी बड़ी आँखो को गोल गोल घूमाते हुवे बोली कि ये अच्छा है. किसी को भी तुम ऐसे करो और फिर कह दो कि अपने आप हो गया. ऐसा तुम्हारे लंडन मे होता होगा पर

यहा नही होता. अगर मेरी जगह कोई और लड़की होती तो अब तक तुम्हे बता चुकी होती.मैने कहा फिर तुमने कुछ क्यो नही कहा.वो मैं……….मैं……..करने लगी. मैने कहा रूपा एक बात कहूँ.उसने हू कहा. मैने कहा रूपा क्या तुम मेरी दोस्त बनोगी. मैं यहाँ पर बिल्कुल अकेला हूँ ,किसी को जानता भी नही तुम्हारे सिवा और तुम अच्छी लड़की हो.तो करोगी मुझसे दोस्ती. रुपा अपनी गर्दन हिलाते हुए बोली, ना बाबा ! लोग कहते है ठाकूरो की ना दोस्ती अच्छी ना दुश्मनी. मैने कहा पर मुझे तो कुछ दिन पहले ही पता चला है ना कि मैं ठाकुर हू. इसमे मेरा दोष क्या ?वो बोली ठीक है! मैं तुमसे दोस्ती करूँगी. पर तुम माँ को मत बताना. मैने कहा ठीक है.

ना जाने क्यो वो मुझे क्यो अच्छी लगने लगी थी. शाम हो रही थी बारिश की रफ़्तार भी काफ़ी कम हो गयी थी. बस अब हल्की-हल्की फुहारे ही पड़ रही थी.रुपा ने कहा कि काफ़ी देर हो गयी है मुझे घर जाना चाहिए. मैने कहा पर तुम्हारी माँ ने कहा था कि वो आएँगी. वो बोली बरसात अब रुक ही गयी है . एक काम करो तुम भी मेरे साथ घर चलो. यहाँ अकेले कैसे रहोगे.

हालाँकि मैं हवेली मे ही रुकना चाहता था. पर ना जाने क्यो मैं उसकी बात को टाल ना सका और कहा कि ठीक है चलो तुम्हारे घर चलते है.फिर हम नीचे आए.मैने गेट पर एक नया ताला लगाया और हल्की हल्की फुहारो का नज़ारा लेते हुवे हम दोनो मुनीम जी के घर की ओर चल पड़े.रास्ते मे वो मुझे गाँव के बारे मे बता ती जा रही थी.एका-एक रूपा का साथ मुझे बड़ा ही अच्छा लगने लगा था.

ऐसे ही बाते करते करते हम दोनो उसके घर पहुच गये. कौशल्या हमे देखते ही बोली अच्छा किया जो आप लोग यहाँ आ गये. बिजली का तो कोई भरोसा नही उपर से मोसम भी मेहरबान है.आप आराम करो मैं कुछ देर मे भोजन की व्यवस्था करती हू.मैं बैठक मे जाकर लेट गया और रूपा अपने कमरे मे चली गयी और कुछ देर बाद अपने कपड़े बदल कर आ गयी. अब उसने घाघरा-चोली डाल ली थी. जिसमे वो बड़ी ही प्यारी लग रही थी.

मैं अपने मन मे दोनो माँ बेटियो की तुलना करने लगा. दोनो ही बड़ी कॅटिली थी. मैं सोचने लगा कि कौशल्या की योनि मिल जाए तो मुझे मज़ा ही आ जाएगा पर सवाल ये था कि कौशल्या मुझे योनि क्यो देगी.पिछली रात भी मैं जागा था. तो खाना खाते ही मुझे नींद आ गयी.

६

सुबह जब मेरी आँख खुली तो मुझे घर मे कोई दिखाई नही दिया. मैने सोचा रूपा तो स्कूल गयी होगी.पर कौशल्या कहाँ है.मैं उसको ढूँढते हुवे घर के अंदर की तरफ चला गया.तो एक दरवाजे के बाहर से मैने अंदर झाँका तो मेरे होश ही उड़ गये. मेरा खुद पर काबू रखना मुश्किल हो गया. मैने देखा कि कौशल्या कमरे मे नंगी खड़ी हुई है. उसकी पीठ मेरी ओर थी. जिस कारण वो मुझे नही देख पाई .पर मेरी निगाह उसकी चिकनी पीठ और बड़ी सी नितंब पर जम ही गयी थी.

शायद वो कुछ देर पहले ही नहा कर आई होगी.कुछ देर वो अपने अंगो को मसल्ति रही ,शायद तेल लगा रही थी .फिर उसने कच्छि पहनी. जब उसने अपनी टाँग उठाई तो उसकी फूली हुवी मस्त योनि देख कर मेरा लिंग एक झटके मे ही खड़ा हो गया.मैं क्या कहूँ उस समय क्या हालत हुवी मेरी. कच्छि पह्नने के बाद उसने घाघरा पहना. हालाँकि उसी समय मुझे वहाँ से खिसक लेना चाहिए था.

पर ये भी एक लालच सा ही था. मैं खुद को वहाँ से हटा नही पाया. कौशल्या ने बिना ब्रा पहने ही चोली पहन ली और वो अचानक से पलटी और मैं वही दरवाजे पर पकड़ा गया. मैने सकपकाते हुवे कहा कि वो……………………वओूऊऊऊऊओ वो मैं आपको देखने आया था. कि आप कहाँ गयी और बैठक की ओर भाग लिया. थोड़ी देर बाद कौशल्या आई और शांत स्वर मे बोली की नाश्ता कर लो. फिर मैं खेतो की ओर जाऊंगी.

मैने कहा मैं भी चलू. वो बोली नही वकील साहब का फोन आया था. थोड़ी देर मे वो हवेली पहुच जाएँगे. कुछ और कागज़ी कार्यवाही करनी है उनको. मैने ड्राइवर से कह दिया है.वो आपको छोड़ आएगा. मैने कहा उसकी ज़रूरत नही है.मैं घूमते-घूमते ही निकल जाऊंगा. कौशल्या बोली नही आप गाड़ी से ही जाएँगे और हाँ बिजली विभाग से भी आज लोग आएँगे तो आप देख लेना. मैने कहा ठीक है. फिर वो बोली और हाँ दोपहर का खाना आप इधर ही खाना. तब तक मैं खेतो से वापिस आ जाऊंगी.

फिर मुझे नाश्ता करवा कर कौशल्या चली गयी और कुछ देर बाद मैं भी उनके घर से बाहर निकल आया. मैने ड्राइवर से कहा कि मालकिन जब आए तो तुम कह देना कि तुम ही मुझे हवेली लेकर गये थे और बाहर चल पड़ा. पिछले दिनो जो बारिश हुवी थी .उस से प्रकृति

जैसे शंगृार कर उठी थी. गाँव महक उठा था. ठंडी ठंडी हवा चल रही थी. पेड़ो पर कोयल कूक रही थी. ऐसा वातावरण मैने तो कभी नही देखा था. मैं थोड़ी दूर आगे चला, मैने देखा कि उसी चोपाल पर कुछ लोग बैठे है. मैं भी वही जाकर बैठ गया.

मैने उन लोगो को नमस्ते किया और उनकी बात चीत मे शामिल हो गया. कुछ लोगो ने कहा मुसाफिर तुम किसके मेहमान हो.मैने फूलचंद जी का नाम ले दिया.मैं उनको बताना नही चाहता था कि मैं ठाकुर अर्जुनसिंग का पोता हू.उनकी बातों से पता चला कि गाँव को पानी पहुचाने वाली लाइन टूट गयी है और सबको पानी के लिए नदी का सहारा लेना पड़ रहा है. कई अधिकारियो के आगे गुहार लगाई पर बस आश्वासन ही मिला है. कोई भी लाइन को ठीक नही कर रहा.

मैने कहा कि पर गाँव मे पानी की टंकी तो होगी ना एमजर्न्सी के लिए.वो बोले कि नही टंकी भी नही है. तब मुझे पता चला कि ये काफ़ी पिछड़ा हुवा गाँव है. मैने कहा आप मुझे उस अधिकारी का नाम बताए जो पानी का डिपार्टमेंट संभालता है. मैं आपकी समस्या को दूर करवाऊंगा.वो लोग मेरा उपहास उड़ाते हुवे बोले, मुसाफिर जब पूरे गाँव से कुछ ना हुवा तो तुम अकेले क्या कर लोगे. मैने कहा एक कोशिश तो कर ही सकता हू.

उनकी बातों मे मसगूल हुवा तो समय का ध्यान ही नही रहा. एकाएक मुझे याद आया कि वकील साहब आ गये होंगे हवेली. मैं वहाँ से अपने घर चल पड़ा. मैं वहाँ पहुचा तो वकील के साथ वहाँ पर कुछ लोग और थे.वकील ने मेरा इंट्रो उनसे करवाया तो उनमे से एक ज़िले के कलेक्टर थे और एक तहसीलदार था. मैने कहा बताइए मैं आपके लिए क्या कर सकता हू.

तो वकील ने कहा कि आकाश बाबू जब मैने डीसी साहिब को बताया कि हवेली का वारिस लौट आया है और फिर कुछ फॉरमॅलिटीस भी करनी थी तो ये पर्सनली आपसे मिलने आए .है फिर हमारी बाते होने लगी तो पता चला कि गाँव के दूसरी तरफ संग्रामगढ़ की सीमा पर हमारी कोई ५० एकड़ ज़मीन है. जिसपर वहाँ के ठाकुर खानदान का क़ब्ज़ा है. अब तो डीसी साहब चाहते थे कि वो मामला आराम से सुलझाया जाए और ऐसी परिस्थिति ना हो जिस से की प्रशासन को प्राब्लम हो.

मैने कहा सर आप किसी भी प्रकार की परेशानी ना ले. मैं तो अभी आया हू और मुझे अभी कुछ भी नही पता कि मेरा क्या क्या कहाँ कहाँ है. एक बार मैं सबकुछ देख लूँ जान लूँ फिर आप जैसे कहेंगे वैसा ही कर लेंगे.डीसी साहब मेरी बात सुनकर खुश हो गये और बोले

आप से मिलकर अच्छा लगा. कोई काम हो तो याद करिएगा. मैने कहा सर आपकी मदद तो चाहिए ही चाहिए.

वो बोले आप तो बस हुकम करिए. मैने कहा कि सर गाँव की पानी सप्लाइ की लाइन टूटी पड़ी है और अधिकारी ठीक नही कर रहे है. तो उन्होने तुरंत ही फोन मिलाया और अगले दिन तक लाइन ठीक करने का हुकम सुनाया. मैने उनको धन्यवाद दिया उनके जाने के बाद मैं वकील से मुख़्तीब हुवा तो उसने फिर से मुझसे कई पेपर्स पर साइन करवाए. घंटो बाद उसने कहा कि सर अब आप लीगली हवेली और सारी प्रॉपर्टी के मालिक हो गये है. तो बस मैं मुस्कुरा कर रह गया.

मैं वकील से बात कर ही रहा था.l कि तभी फूलचंद जी भी आ गये. उन्होने कहा कि आकाश बाबू सारा काम हो गया है.कल शाम तक हवेली मे बिजली लग जाएगी और कुछ दिनो मे ये हवेली फिर से रहने लायक हो जाएगी. फूलचंद जी ने घर फोन किया और कोई आधे घंटे बाद कौशल्या हम सब के लिए चाइ नाश्ता ले कर आ गयी और हम कुछ और बातों पर चर्चा करने लगे.

कल मुझे फूलचंद जी के साथ शहर जाना था. कुछ काम थे जो मेरे बिना नही हो सकते थे. तो अगले दिन हम शहर चल पड़े. उन्होने कहा आप को जो भी कार पसंद हो आप खरीद लीजि.ए मैने कहा मुझे इन सब चीज़ो की कोई आवश्यकता नही .है पर वो बोले नही कार तो चाहिए ही ना और फिर कही आना जाना हो. वो मुझे एक बड़े कार शोरुम मे ले गये और हम ने दो कार खरीदी.

मैने कुछ नये कपड़े भी खरीदे और थोड़ा ज़रूरत का सामान भी लिया. रात होते होते हम वापिस गाँव आ गये. पूरा दिन बेहद थका देने वाला था. तो आते ही मैं सीधा सो गया.

हवेली की साफ सफाई करवाई जा रही थी मैने बता दिया था कि किन दो कमरो मे रहूँगा तो उनके इंटीरियर का काम चालू था. इधर फूलचंद जी मुझे हर बारीकी का ज्ञान करवा रहे थे. उन्होने मुझे बताया कि कितनी ज़मीन है मेरे पास और कहाँ कहाँ है. मुझे तो यकीन ही नही हो रहा था कि मेरे पुरखे मेरे लिए इतना कुछ छोड़ कर गये है.

गाँव की पानी की लाइन ठीक हो गयी थी और पानी की टंकी मैने मेरी तरफ से बनवा दी थी. दिन ऐसे ही गुजर रहे थे. अक्सर मैं गाँव की चोपाल पर चला जाता था. लोगो को ये तो पता चला था कि हवेली का वारिस आया है पर उनको ये नही पता था कि मैं ही ठाकुर

आकाश हू और मैने भी इस बात का ज़िक्र करना आवश्यक नही समझा. चौबीस घंटे फूलचंद मेरे साथ रहता फिर रूपा से भी नज़र दो-चार नही हुवी थी और कौशल्या के तो कहने ही क्या थे.

७

दिन गुजर रहे थे मुझे यहाँ आए १५ दिन हो गये थे और आज हवेली का काम ख़तम हो गया था. मैं अपने बाप-दादा के घर मे रहने के लिए आ गया था. अब यहाँ का हाल देख कर कोई नही कह सकता था. कि कुछ दिन पहले ये बस एक खंडहर का टुकड़ा था. हालाँकि अभी भी कुछ हिस्सो को मरम्मत की ज़रूरत थी. पर मैं अकेला ही रहने वाला था. तो उस हिस्सो को वैसे ही रहने दिया था.

शुरू शुरू मे मुझे अकेले रहने मे थोड़ा अजीब सा लगता था. पर फिर आदत हो गयी और गाँव मे भी लोगो से जान पहचान होने लगी थी. इधर मैं कौशल्या को ठोकने की सोचता रहता था. पर कुछ बात नही बन रही थी और फिर किस्मत आख़िर मुझ पर मेहरबान हो ही गयी. एक दिन फूलचंद जी जब गाँव मे किसी से मिलने जा रहे थे तो एक पागल सांड ने उनको अपने लपेटे मे ले लिया और उनको घसीट मारा.

हम लोग तुरंत उनको हॉस्पिटल ले गये तो डॉक्टर ने बताया कि ये ठीक तो हो जाएँगे परंतु इनकी रीढ़ की हड्डी टूट गयी है. तो इनका चलना फिरना अब मुमकिन नही होगा. ये खबर हम सब के लिए बड़ी ही दुखदायक थी. ख़ासकर रूपा और कौशल्या के लिए.मैने कहा डॉक्टर आप इनका बेस्ट इलाज करिए पर ये ठीक होने चाहिए.तो डॉक्टर बोला बात ये है कि रीढ़ की हड्डी कई जगहों से टूटी है और रिकवरी नही हो पाएगी. कुछ दिन मैं उनके साथ ही हॉस्पिटल मे रहा फिर उनको छुट्टी दिलवा कर घर ले आए.

मैने फूलचंद से कहा कि आप किसी भी तरह की चिंता ना कर.ना आपका परिवार मेरा परिवार है. मैं हर घड़ी आप लोगो के साथ हू. वैसे भी मैं दिन मे दो बार उनके घर खाना खाने तो जाता ही था. कई लोगो से बात की थी पर कोई भी हवेली की रसोई संभालने को राज़ी ना हुवा था.

कौशल्या उमर मे फूलचंद जी से काफ़ी छोटी थी. तो उसके जिस्म की ज़रूरते भी थी और मैं भी उसको भोगने को तैयार था. पर शुरुआत नही हो पा रही थी.थोड़े दिन ऐसे ही गुजर गये.. खेतो मे गन्ने की फसल तैयार खड़ी थी और बागों मे आम भी तैयार ही हो गये थे. पहले तो सब काम मुनीम जी संभाल लेते थे दूसरी ओर उन्होने भी खुद के खेत मे गन्ने लगाए हुवे थे. हमे लोगो की ज़रूरत थी काम के लिए. पर कोई भी गाँव वाला ठाकूरो के यहाँ काम नही करना चाहता था. इस बात से मैं भी परेशान था.

मैने फूलचंद से कहा कि ऐसे तो हमे बहुत नुकसान हो जाएगा.तो बोले मालिक मैं तो अब अपाहिज़ हो गया हूँ. मैं खुद इस बात को लेकर चिंतित रहता हू. अब कोई चमत्कार हो जाए तो ही आस है. कौशल्या बोली फसल का नुकसान होगा तो हाथ तंग हो जाएगा. मैने कहा आप लोग कोई भी परेशानी ना लो. मैं करूँगा कुछ ना कुछ बंदोबस्त और वहाँ से बाहर निकला ही था कि रूपा दिख गयी. मैने कहा रूपा हवेली चलेगी क्या. वो बोली बापू से पूछ कर आती हू और फिर हम मेरे घर आ गये. रूपा बोली कुछ परेशान लगते हो.

मैने कहा बात ये है कि फसल कटाई पे है और मेरे खेतो मे कोई काम नही करना चाहता है.पहले तो तुम्हारे बापू बाहर से मजदूर लाकर काम करवा लेते थे.पर उनकी तबीयत बिगड़ने के बाद अब कौन मदद करेगा. दुगनी मज़दूरी पर भी गाँव वाले तैयार नही है मेरे खेतो मे काम करने को. बस वो ही परेशानी है. रूपा गाँव वालो को बुरा भला कहने लगी .

मैने कहा दुगनी मज़दूरी पर भी कोई मेरे लिए काम करने को तैयार नही है. समझ नही आता कि क्या करू. मेरे पुरखो के किए करमो फल मुझे ही भुगतना होगा. मैं उदास हो गया रूपा ने मेरा हाथ अपने हाथ मे लिया और बोली तुम दिल पे बोझ मत लो. कुछ ना कुछ हल निकल ही आएगा तभी उसने एक ऐसी बात बताई जिस से कुछ उम्मीद बँधी. वो बोली एक रास्ता है पर ये नही पता कि काम आएगा या नही. मैने कहा जो भी है जल्दी से बता.

रुपा बोली की सालो पहले किसी बात से नाराज़ होकर ठाकुरों ने गाँव के महादेव मंदिर के दरवाजे को गाँव वालो के लिए बंद कर दिए थे और तब से आज तक मंदिर बंद ही पड़ा है. अगर तुम मंदिर खोल दो तो क्या पता गाँव वालो के मन मे तुम्हारे लिए कुछ हमदर्दी हो जाए. मैने कहा रूपा ठीक है. कल ही चल कर मंदिर का दरवाजा खोल देता हू इसमे क्या है.

तू मुझे कल सुबह ही वहाँ ले चलना वो बोली कि सुबह तो मुझे स्कूल जाना होता है. मैं तुम्हे रास्ता बता देती हू तुम चले जाना. वैसे मेरा मन तो है साथ चलने को पर स्कूल की छुट्टी नही कर सकती मैं. मैने कहा चल कोई ना, मैं ही देख लूँगा. कुछ देर बाद रूपा बोली देर हो रही है. मुझे घर जाना चाहिए. मैं कहा कुछ देर और रुक जा, तू आती है तो मेरा मन भी लगा रहता है.

मैने उसका हाथ पकड़ लिया और रूपा को खीच कर अपने सीने से लगा लिया. रूपा बोली तुम ऐसे ना किया करो मुझे कुछ- कुछ होता है. मैने कहा मैं ऐसा क्या करता हू जो तुझे

कुछ होता है. वो बोली तुम जो ये शरारत करते हो तो मेरे मन के तार झनझणा जाते .है मैने कहा रूपा इधर देख जैसे ही उसने अपना चेहरा उपर किया मैने उसके चाँद से मुखड़े को चूम लिया.

रूपा मेरी बाहों मे और भी सिमट गयी. मैं उसके लबों को चूमने लगा उसकी खुश्बुदार साँसे मेरे मूह मे घुलने लगी. मेरा मन उन्माद मे डूबने लगा. बड़ी ही कशिश थी उसमे. जब जब मैं उसके पास होता था तो खुद को रोकना बड़ा ही मुश्किल हो जाता था. तो एक लंबे चुंबन के बाद मैने कार स्टार्ट की और रूपा को उसके घर छोड़ने चला गया.

मुनीम जी के घर से आते आते मुझे बड़ी देर हो गयी. जब मैं वापिस आ रहा था. तो मुझे खेतो के पास कोई पड़ा हुवा दिखाई दिया. मैं गाड़ी से उतरा और देखा की एक लड़का पड़ा हुआ था. मैने गाड़ी से पानी की बोतल निकाली और उसके मूह पर कुछ छींटे मारे तो उसको होश आया. मैने कहा कि अरे कौन हो तुम और यहा क्यो पड़े. वो कराहता हुवा बोला कि मेरा नाम किसन है.

मैने कहा ले थोड़ा सा पानी पी और बता कि यहाँ रास्ते पर क्यो पड़ा है.तो उसने कहा कि शाम को जब वो अपनी बकरी चरा कर वापिस गाँव की तरफ आ रहा था. तो गाँव के कुछ लोगो ने उसको बहुत मारा और उसकी बकरी भी छीन ली. मैने कहा ऐसे कैसे वो तुझे मार सकते है तो उसने कहा मैं नीच जात का हू ना ,हमे तो हर कोई धमकाता रहता है.

मैने कहा चल आजा बता तेरा घर कहाँ है. मैं तुझे छोड़ देता हू.वो बोला नही साहब मैं खुद चला जाऊंगा.किसी को पता चला कि आपने मुझे गाड़ी मे बिठाया फिर से मेरी पिटाई होगी. मैने कहा तू मुझे नही जानता. तू चल अभी आजा मैं तुझे तेरे घर ले चलता हू .वो घबराता सा गाड़ी मे बैठ गया. मैने कहा भूख लगी है, वो बोला हाँ साहब. मैने कहा आजा तुझे कुछ ख़िलाता हू और उसको मैं हवेली ले आया.

हवेली देखते ही वो और भी घबरा गया और बोला आप मुझे यहाँ क्यो लेकर आए है. किसी ने मुझे यहाँ देख लिया तो मेरे लिए मुसीबत हो जाएगी. मैने कहा क्या तू एक ही बात की पीप्रि बजा रहा है. ये हवेली घर है मेरा और मैं ठाकुर आकाश हू. इस हवेली का अंतिम बचा हुवा सदस्य. वो बोला ठाकुर साहब आप मुझे नीच जात को अपने घर लेकर आए. मैने कहा यार जहाँ से मैं आया हू वहाँ पर ये जात वात नही होती. मैने उसको एक बिस्कुट का पॅकेट दिया और कहा कि ले अभी ये ही है इसे ही खाले.

फिर उसको थोड़ा कुछ खिला कर मैं उसे उसके घर छोड़ने चला गया. रास्ते मे किसन ने बताया कि उसके परिवार मे बस वो और उसकी मा ही है. उसके पिता का कई साल पहले ही देहांत हो गया था. बाते करते करते हम लोग उसके घर आ गये. घर तो क्या था, बस एक टूटी-फूटी सी झोपड़ी थी. किसन को देख कर उसकी माँ बाहर आ गयी और मेरी ओर हाथ जोड़कर बोली. बाबू मेरे बेटे से कोई ग़लती हुवी हो मैं आपसे माफी मांगती हू. मैने कहा अरे पहले आप मेरी बात तो सुनिए

फिर मैने उनको पूरी बात बताई और कहा कि मैं किसन की बकरी कल सुबह वापिस दिला दूँगा. बात करते करते पता चला कि किसन की माँ का नाम सुभद्रा था. उमर कोई ३७-३८ के फेर मे होगी पर जिस्म काफ़ी भरा हुआ था और एक घिसी हुवी सूती साड़ी उसके जिस्म को ढँकने मे असमर्थ थी फिर कुछ देर बात करने के बाद मैने कहा कि किसन तू कल सुबह हवेली आ जाना. वो सकुचाते हुवे बोला कि जी आ जाऊंगा

फिर मैं घर के लिए निकल पड़ा और सीधा बिस्तर पर गिर गया मेरी आँख तब खुली जब मुझे किसी ने जगाया. मैने देखा कि एक लड़का खड़ा है.मैने कहा कौन है भाई तू. वो बोला मालिक मैं किसन कल रात को मिला था आपको. मैने कहा अरे हां याद आया किसन, पर तू अंदर कैसे आया वो बोला मालिक दरवाजा खुला पड़ा था. मैने कहा हो सकता है मैं रात को दरवाजा बंद करना भूल गया हुंगा.

मैने कहा तू थोड़ी देर बैठ, मैं ज़रा फ्रेश होकर आता हू. कोई आधे घंटे बाद मैने कहा किसन मैं तेरी बकरी वापिस दिलवाऊंगा पर पहले तुझे मेरा एक काम करना होगा. वो बोला जी हुकम कीजिए.मैने कहा मेरे साथ महादेव मंदिर चल. वो बोला जी वो तो कई सालो से बंद है. मैने कहा बंद है, पर अब नही रहेगा.

फिर मैं मंदिर पहुच गया किसन के साथ. मंदिर बेशक पुराना था, पर दिलकश था. मैने कहा यार कोई बड़ा पत्थर तो ला और फिर मैने मंदिर के ताले को तोड़ कर कपाट खोल दिए.चर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्ररररहर्र्र्र्र्र्र्र्र्ररर करता हुआ लड़की का दरवाजा खुलता चला गया और मैं अंदर चला गया. किसन ने तो साफ मना कर दिया अंदर आने से. अंदर काफ़ी जाले लगे थे.अंदर सफाई की सख़्त दरकार थी. मैं किसन को लेकर गाँव की चोपाल पर आया और जो बाबा वहाँ पर बैठते थे.मैने उनको राम-राम की और कहा कि बाबा मैने महादेव मंदिर को खोल दिया है. पर अंदर काफ़ी सफाई की दरकार है.मुझे कुछ लोग चाहिए मदद के लिए मैं सबको पैसे भी दूँगा.वो बाबा बोले पर वो मंदिर तो सालो से बंद था और तुम कैसे खोल सकते हो उसको.

आस पास कुछ और लोग भी जमा हो गये थे. मैने कहा बाबा मुझे हक था ,मैने खोल दिया.वो बोले सच बता कौन है तू. मैने कहा मैं आकाश हू बाबा, हवेली का अंतिम वारिस और मैं यहाँ अपने घरवालो की ग़लतियो को सुधारने आया हू. चूँकि कुछ लोगो से मेरा मेलजोल हो चुका था. वो बोले नही तुम ठाकुर नही हो सकते. मैने कहाँ मैं ही हू और आज से मंदिर सबके लिए खुला है मतलब कोई जात-पात नही सभी एक समान.

और हां मेरे घरवालो ने गाँव वालो के साथ जो भी किया हो मैं आप सब से हाथ जोड़कर उसके लिए माफी माँगता हू.ये सारा गाँव मेरा है मेरा परिवार है. आप लोग मुझे अपने परिवार के सदस्य के रूप मे अपनाए और हां हवेली के दरवाजे आप सब के लिए हमेशा खुले है. आपका जब जी चाहे आप आ जाइए.बाबा बोले बेटा तुमसे नाता सा जुड़ गया था. पर तुम कुछ और ही निकले.

मैने कहा नाता तो अब भी है बाबा. मैं भी आप लोगो का ही बेटा-पोता हू. मेरा परिवार तो रहा नही, जो कुछ भी है ये गाँव ही है मेरे लिए. आप चाहे मुझे दुतकारो या अपनाओ आपकी मर्ज़ी है. फिर मैने किसन को बुलाया और कहा कि बाबा कल गाँव के कुछ लोगो ने इसको मारा और इसकी बकरी छीन ली मैं चाहता हू कि इसका पशु इसे वापिस दिया जाए.

मैने कहा बाबा आप बुजुर्ग है आप ही इस ग़रीब का न्याय करो.तो बाबा ने किसन से उनलोगो का नाम पूछा और उनको वही चोपाल पर बुला कर जलील किया और उसकी बकरी दिलवाई. मैने कहा आकाश अब बस इस गाँव के लिए जिएगा आप लोगो से विनती है कि मंदिर की साफ सफाई कर देना ताकि वहाँ फिर से पूजा अर्चना की जा सके. फिर मैं किसन के साथ उसके घर चला गया.

उसकी माँ बोली मालिक आपने बड़ा अहसान किया हम पर जो हमारा पशु हमे वापिस दिला दिया. मैने कहा आप मुझे शर्मिंदा ना करे.

दोपहर हो गयी थी मैने कहा अब मैं चलता हू मुझे खाना खाने जाना है. क्या करू ,कोई भी हवेली मे काम करने को तैयार नही है. मुझे बड़ी मुश्किल हो रही है. मैने कहा क्या आप किसन को हवेली मे काम करने देंगी. मैं उसको अच्छी पगार दूँगा.

मैने कहा ये उधर रहेगा तो मुझे भी अकेला पन महसूस नही होगा. तो कुछ सोच कर सुभद्रा ने हां करदी. मैने कहा ठीक है किसन तुम कल से आ जाना और मैं हवेली आ गया. गर्मी बहुत थी मैं नाहया और थोड़ी देर लेट गया पता नही कब नींद आ गयी नींद आई तो अपने

साथ सपना भी ले आई काफ़ी दिनो बाद ऐसी गहरी नींदआई थी और सपना भी जबरदस्त था .

सपने मे मैं कौशल्या की योनि मार रहा था. आख़िर आजकल बस यही तो मेरी एक इच्छा थी और जैसे ही मेरा होने को हुआ किसी ने मुझे जगा दिया अपनी आँखे मलता हुवा मैं उठा तो देखा कि मेरी आँखो के सामने कौशल्या ही खड़ी थी. उसने कहा यहाँ क्यो सोए पड़े हो. मैने देखा कि मैं बरामदे मे पड़े तख्त पर ही सो गया था. उसने कहा कि जल्दी तैयार हो जाओ आम के बाग मे चलना है.

मैने नीचे देखा तो लिंग ने निक्कर मे टँट बनाया हुवा था. कौशल्या की नज़र जब उस पर पड़ी तो एका एक उसके होंठो पर एक मुस्कान आ गयी. मैने कहा क्या हुवा.वो बोली कुछ नही, तुम जल्दी चलो. मैने कहा तुम बैठो मैं अभी आता हू और फिर थोड़ी देर बाद पैदल पैदल ही बाग की ओर चल पड़े. कौशल्या ने अपने घाघरे को नाभि से काफ़ी नीचे बाँधा हुवा था. तो उसका पुरा पेट और नाभि चिकनी कमर को देखकर मुझ पर जैसे नशा सा छाने लगा.

मैं कुछ रुक सा गया और उसके मादकता से भरपूर चौड़े नितंबो को हिलते हुवे देखता रहा. तभी वो पीछे को पलटी और बोली रुक क्यो गये जल्दी जल्दी चलो.पर उसको कौन बताए कि जब वो ऐसे बिजलियाँ गिराते हुवे चलेगी फिर हम जैसो को होश कहाँ रह जाएगा और एक मेरा लिंग था जो कि बैठने का नाम ले ही नही रहा था. मैने निक्कर मे हाथ डाला और उसको अड्जस्ट किया. थोड़ी दूर आगे जाने के बाद मैने कहा मैं पेशाब कर लूँ.

वो बोली ठीक है और थोड़ा सा आगे जाके खड़ी हो गयी. मैने अपनी निक्कर नीचे की और अपने तने हुवे लिंग को बाहर निकाल लिया. जैसे ही उसे खुली हवा लगी वो किसी साँप की भाँति फुफ्कारने लगा. मैने तिरछी नज़रो से देखा कि कौशल्या चोर नज़रो से मेरी ओर ही देख रही है. मैं थोड़ा सा और टेढ़ा हो गया ताकि वो अच्छे से मेरे लिंग का दीदार कर सके.

फिर लिंग से पेशाब की धार निकली और नीचे धरती पर गिरने लगी.मैने देखा की कौशल्या बड़ी गहरी नज़रो से मेरे लिंग को ही देखे जा रही थी. फिर मैं उसके पास आया और बोला कि चलो जल्दी से. फिर हम बाग मे आगये. मैने आज तक ऐसा बाग नही देखा था. पता नही कितनी दूर तक फैला हुवा था वो.काफ़ी घने घने पेड़ थे और सभी पेड़ो पर ताज़ा आम लटक रहे थे. पर मुझे उन आमो से ज़्यादा इंटेरेस्ट कौशल्या के आमो मे था.

वो बोली ये तुम्हारा बाग है. पता है कोई तुम्हारे लिए काम नही करना चाहता कोई चौकीदार नही है तो पता ही नही है कि कितनी चोरी हो रही है रोज. अब तो बस जल्दी से कुछ लोग काम करने वाले मिल जाए तो किसी तरह से नुकसान रुके. मैने कहा आप फिकर ना करे मैने गाँव के लोगो से बात की है. कुछ लोग तो तैयार हो जाएँगे ही.

हम चलते चलते थोड़ा और आगे की तरफ निकल आए कौशल्या बोली आम खाओगे. मैने कहा खा लूँगा अगर आप खुद तोड़ कर खिलाओगी. वो बोली पर मैं कैसे तोड़ पाउंगी पेड़ तक तो मेरा हाथ पहुचेगा ही नही. मैने कहा वो मुझे नही पता अपने हाथो से तोड़ कर खिलाओ तो खाऊंगा. वो बोली तुम भी ना जाने कैसी कैसे ज़िद कर लेते हो. मैने कहा और आप भी कभी ज़िद पूरी नही करती हो.

कुछ देर बाद वो बोली ठीक है.आज मैं तुम्हे अपने हाथो से ही आम तोड़कर खिलाऊंगी. तुम एक काम करो मुझे उठा कर उपर करो, क्या पता कोई आम मेरे हाथ लग ही जाए. मैने कहा पर आप इतनी भारी हो ,मैं आपको कैसे उठा पाऊंगा. वो बोली अरे कहाँ भारी हू. मुनीम जी के खाट पकड़ने के बाद मैं कितनी दुबली हो गयी हू. मैने कहा क्यो मुनीम जी क्या आपको मोटा होने की घुट्टी पिलाते थे क्या. कौशल्या के गाल लाल हो गये. वो बोली इस बात को तुम अभी नही समझोगे.

मैने कहा मैं क्यो नही समझूंगा और फिर आप तो हो ही समझाने के लिए. कौशल्या बोली अच्छा छोड़ो इस बात को और मुझे उपर करो मैने कहा जी अभी करता हू. वो बिल्कुल मेरे सामने खड़ी थी मैने उसके भारी भारी नितंबों पर से उसको उठाया और उपर कर दिया. वो बोली थोड़ा सा और उपर उठाओ. मैने थोड़ा सा और किया अब हुआ ये कि उसके मोटे नितंब मेरी नाक के सामने आ गये.

वो उपर आम तोड़ने लगी उसके कूल्हे मेरे इतने पास थे कि मुझे पता नही क्या हुवा मैने अपना चेहरा उसके कुल्हो की दरार पर सटा दिया और अपने मूह से उनको दबाने लगा. आगे की तरफ मेरे हाथ जो कि उसकी ठोस जाँघो पर थे. मैने उसकी जाँघो को कसकर दबा दिया. कौशल्या के मूह से एक आह निकल गयी. मैने कहा क्या हुवा. वो बोली कुछ नही तुम मुझे अच्छे से पकड़ना कही गिरा ना देना.

मेरी नाक उसकी दरार मे घुसने को बेताब हो रही थी. कौशल्या थोड़ा कसमसाने लगी. पर मैं अपनी नाक को वहाँ पर रगड़ता रहा. मुझे पता था कि उसने अंदर कच्छि तो पहनी नही है.उसकी नितंब के इतने करीब होने के एहसास से ही मैं उत्तेजित हो गया था. तभी

कौशल्या बोली कि मैं ऐसे आम नही तोड़ पा रही हू. तुम मुझे पलटो और उन छोटी वाली टहनी की तरफ चलो .मैने उसे उतारा और उधर ले जाकर फिर से उपर कर दिया.

पर अबकी बार वो ऐसी उपर हुई कि उसकी योनि मेरे मूह पर थी. अब मैं तो पागल ही होने वाला था. मुझसे कंट्रोल नही हो रहा था. उसकी योनि बिकलूल मेरे मूह पर ही थी.मैने सोचा कि अभी सही मोका है इधर एक किस कर दूं. मैने अपना मुँह उसकी योनि पर रख दिया जैसे कौशल्या को अपनी योनि पर मेरे होठ महसूस हुए उसके बदन मे कंपन होने लगा. मैने कहा क्या करती हो. आराम से खड़ी रहो ना वरना गिर जाओगी. वो अजीब सी आवाज़ मे बोली कि सही तो खड़ी हू.

पीछे मैं धीरे से उसके नितंबों को छेड़ने लगा था. मैं बहुत ज़्यादा उत्तेजित हो चुका था. और पता नही कैसे मैने उसकी योनि पर अपने दाँत गढ़ा दिए. कौशल्या का बॅलेन्स बिगड़ गया और वो मुझे लिए लिए ज़मीन पर आ गिरी. वो मेरे उपर थी उसका घाघरा कमर तक उठ गया था.l और उसकी योनि मेरे लिंग पर अपना दबाव डालने लगी थी. कौशल्या उठना चाहती थी पर मैने उसको अपनी बाहों मे दबा लिया. अब वो मेरे सीने से बिकुल चिपक गयी थी.

पर जल्दी ही वो अपनी स्थिति को भाँप गयी और उठ गयी.उसने अपने घाघरा को सही किया. मैं भी खड़ा हो गया.मेरी निगाह उसके तेज़ी से उपर नीचे होते सीने पर गयी फिर मैं अपने होश-हवास भूल गया. मैने कौशल्या को पेड़ के तने के सहारे लगाया और पागलो की तरह उसके काटीले होंठो को पीने लगा. मैने उसको मजबूती से पकड़ लिया और उसको किस करते ही जा रहा था.

मैने उस एक पल मे ही सोच लिया था कि चाहे अब कुछ भी हो जाए. अब पीछे नही हटना. आज कौशल्या की योनि मारनी ही मारनी है. मैं अपना एक हाथ नीचे ले गया उसके घाघरे के नाडे को खोल दिया. एक पल मे ही घाघरा उसके पैरो मे आ गिरा कौशल्या भी समझ गयी थी कि अब बात हद से आगे बढ़ गयी है. तो उसने मुझे धक्का दिया और अपने से दूर कर दिया और अपने घाघरे को उठा कर कमर तक चढ़ा लिया. पर वो नाडा नही बाँध पाई. मैं फिरसे उसके पास गया. वो बोली आकाश रुक जाओ. मैं उसके पास गया और बोला नही आज मैं नही रुक सकता.मुझे आपकी ज़रूरत है. मैं आउट ऑफ कंट्रोल हो गया था. मैने उसको फिर से किस करते हुवे कहा कि प्लीज़ एक बार मुझे करने दो नही मैं मर जाऊंगा. वो बोली पर ये ग़लत है.ऐसा नही हो सकता. मैं किसी और की अमानत हू. मैने कहा हाँ पर आपके पति शायद आपको फिर कभी ये सुख नही दे पाएँगे और मैने भी कई

बार आपकी आँखो मे प्यास देखी है. जब मैने आपको कपड़े बदलते हुवे देखा तो बड़ी मुश्किल से खुद को रोका पर आज मुझे ना रोको.मैं अपना हाथ उसकी जाँघो के जोड़ पर ले गया और उसकी फूली हुवी योनि को मसलने लगा. जैसे ही मैने उसकी योनि को मसला कौशल्या सिसक उठी और उसी पल मैने उसके निचले होठ को अपने होंठो मे दबा लिया. उसके रसीले होंठो को मर्दन करते हुवे.मैने उसकी योनि मे अपनी बीच वाली उंगली सरका दी.

उसकी योनि अंदर से बहुत ही गरम थी. मैं अपनी उंगली को अंदर बाहर करने लगा.कौशल्या भी अब धीरे धीरे गरम होने लगी थी. कुछ देर योनि मे उंगली करने के बाद मैं अपने हाथ उसकी पीठ पर ले गया और उसकी चोली को भी खीच कर अलग कर दिया. अब वो पूरी नंगी मेरे सामने खड़ी थी. मैने अपनी निक्कर नीचे की और कौशल्या का हाथ अपने लिंग पर रख दिया. उसने अपनी मुट्ठी मे मेरे लिंग को पकड़ लिया और उसको दबाने लगी.

आज पहली बार किसी ने मेरे लिंग को छुआ था. औरत का स्पर्श पाते ही वो बुरी तरह से भड़क गया. कुछ देर तक कौशल्या ने मेरे लिंग को सहालाया और फिर ज़मीन पर घुटनो के बल बैठते हुए मेरे लिंग को अपने होटो मे दबा लिया. मेरे लिए बिल्लकुल ही नया अहसास था ये. वो अपनी जीभ मेरे लिंग पर फेर रही थी. मेरा पूरा बदन एक अजीब से अहसास मे डूबे जा रहा था. मैने अपने हाथ उसके कंधो पर रख दिए और अब वो मेरे लिंग को जोरो से चूसने लगी.

बड़ा ही मज़ा आ रहा था मुझे. लिंग चूस्ते चूस्ते वो मेरे अंडकोषो को भी अपनी मुट्ठी मे भर के दबाने लगी थी. एक अलग ही मस्ती मेरे तन बदन मे बढ़ने लगी थी. ८-१० मिनिट तक वो मेरे लिंग को अपने मूह मे ही लिए रही और फिर मेरा पूरा बदन एक आनंद मे डूबता चला गया लिंग से सफेद पानी निकला और कौशल्या के मूह मे गिरने लगा. जिसे वो गटा गट पी गयी.

मेरे तो घुटने ही कांप गये थे लगा कि किसी ने बदन की सारी ताक़त को निचोड़ डाला हो. कौशल्या ने अपने घाघरे से अपने चेहरे को साफ किया और फिर खड़ी होकर बोली कि अब तुम भी ऐसे ही करो अपनी योनि की ओर इशारा करते हुए और अपनी टाँगो को चौड़ा करके खड़ी हो गयी.अब बारी मेरी थी. मैने उसकी टाँगो के बीच बैठा और उसकी बालों से भरी काली योनि की पंखुड़ियो को अपने हाथो से फैला दिया और उसकी लाल लाल योनि पर अपने होठ रख दिए.

उफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफ फ़्फ़ कितनी गरम योनि थी उसकी. मुझे लगा कही मेरे होठ जल ना जाए. उसकी योनि से कुछ खारा खारा पानी बह रहा था. पर उसका टेस्ट मुझे अच्छा लगा. मैने सोचा जैसे ये मेरा लिंग चूस रही थी वैसे ही मुझे भी इसकी योनि को चाट कर इसको भी वैसा ही मज़ा देना चाहिए. मैने उसकी टाँगो को थोड़ा सा और फैलाया और अपनी जीभ को उसकी मस्त योनि पर रगड़ने लगा.

कौशल्या की टाँगे धीरे धीरे काँपने लगी और वो मेरे सर को अपनी योनि पर दबाने लगी.जब बीच बीच मे मे उसकी योनि पर काट ता तो उसकी मस्त गरम आहे सुनके मेरा लिंग दुबारा खड़ा होने लगा था. फिर वो लरजती हुई आवाज़ मे बोली कि थोड़ी तेज़ी से अपनी जीभ चलाओ. मैं जल्दी जल्दी अपनी जीभ उसकी योनि पर रगड़ने लगा और कोई ५ मिनिट बाद ही उसकी योनि से गाढ़ा द्रव्य निकल कर मेरे चेहरे पर गिरने लगा. कौशल्या की साँसे बड़ी ही तेज हो गयी थी. जबकि मेरा लिंग दुबारा खड़ा हो गया था.

थोड़ी देर बाद वो वही ज़मीन पर घोड़ी बन गयी उसका मस्त पिछवाड़ा और भी बड़ा लगने लगा था. मैं उसके पीछे आया और अपने लिंग को योनि पर टिका दिया कौशल्या ने अपने नितंबों को थोड़ा सा पीछे किया और मैने भी ज़ोर लगाते हुवे लिंग को आगे की ओर सरका दिया जैसे ही लिंग का अगला हिस्सा योनि मे घुसने लगा. कौशल्या ने एक आह भरी और बोली थोड़ा आराम से घुआसो.

पर मैं पहली बार किसी औरत की योनि मारने जा रहा था. मैने एक तेज धक्का लगाया और आधा लिंग उसकी योनि मे घुस गया. कौशल्या ने अपनी आँखे बंद कर ली. मैने हाथ आगे बढ़ा कर उसकी कमर को थाम लिया और और फिर अगले शॉट मे पूरा लिंग उसकी गरमा-गर्म योनि के अंदर था. अब मैं धीरे धीरे धक्के लगाने लगा पर थोड़ी देर बाद अपने आप मेरी रफ़्तार बढ़ती चली गयी और कौशल्या मे अपनी नितंब को बार बार हिलाते हुवे आगे पीछे कर रही थी.

मुझे बड़ा ही मज़ा आने लगा था. मन कर रहा था कि ज़ोर ज़ोर से लिंग को आगे पीछे करू उसकी योनि मे.कोई ५-७ मिनिट तक उसी पोज़िशन मे हमारी ठुकाई चलती रही. फिर वो उठ कर खड़ी हो गयी और सीधी खड़ी हो गयी मैं उसकी ओर देखने लगा तो उसने अपनी एक टाँग मेरी कमर पर लेपटि और लिंग को योनि पर रगड़ने लगी और फिर अपनी जैसे ही मैने अपनी कमर को उचकाया लिंग फिर से योनि मे घुस गया.

उसकी बड़ी बड़ी स्तन मेरे सीने मे समाने को आतुर हो रही थी. फिर उसने अपने चेहरे को मेरी ओर किया और मुझे किस करने लगी. बड़ा ही मज़ा आ रहा था. मैं उसके मोटे नितंबों को दबाते हुए उसकी योनि मार रहा था. हम दोनो का शरीर पसीने से भीग गया था. आधे घंटे तक हम लोग एक दूसरे के जिस्मो को तोल्ते रहे. फिर कौशल्या का शरीर कांपा और वो ढीली पड़ गयी और ठीक कुछ पलो बाद मेरा शरीर भी उस अजब से अहसास मे डूबता चला गया. मेरा वीर्य उसकी योनि मे गिरने लगा.

दो पल हम दोनो एक दूसरे की आँखो मे देखते रहे फिर कौशल्या ने अपने कपड़े उठाए और पहन ने लगी. मैने भी अपनी निक्कर-टीशर्ट पहन ली पर अब वो मुझसे बात नही कर रही थी. मैं उसके पास गया और कहा कि अच्छा नही लगा तुमको. वो बोली तुमने मुझे खराब कर दिया.मैने कहा ऐसी बात नही है आप मुझे बड़ी अच्छी लगती हो और फिर आप कितनी मस्त हो. मैं खुद को रोक ही नही पाया.

फिर मैने कहा आपको मेरी कसम आप सच बताना आपको अच्छा लगा या नही.वो थोड़ा सा शरमाते हुए बोली ऐसी ठुकाई तो कभी मुनीम जी ने भी नही की मेरी. मैने कहा जब भी आपको ऐसी ठुकाई करवानी हो आप मुझे बता देना.वो बोली तुम बड़े शरारती हो और ये गुण तो तुमको विरासत मे मिले है. मैं फिर से कौशल्या को चूमने लगा वो बोली काफ़ी देर हो गयी है हमे वापिस चलना चाहिए.

मुझसे रुका ही नही जा रहा था. रास्ते मे दो-चार बार आख़िर उसकी नितंब को दबा ही दिया मैने. वैसे भी मुझे खाना खाने तो उनके घर जाना ही था. मैं उसके साथ ही चला गया.

कौशल्या रसोई मे चली गयी मैं मुनीम जी से बाते करने लगा.मैने कहा जल्दी ही मजदूरो का इंतज़ाम हो जाएगा और फिर कुछ और बाते करने लगे. थोड़ी ही देर मे खाना भी लग गया.

कौशल्या मुझे खाना परोसते हुवे बोली कि आज तुम यही रुक जाना और हल्का सा मुस्कुरा दी. मैने कहा ठीक है. खाने के बाद मैं और रूपा बात करने लगे. मैने उसको बताया कि मैने मंदिर खोल दिया है. वो बोली हाँ शाम को मैं अपनी सहेली के घर गयी थी मैने देखा था और कुछ लोग वहाँ सफाई भी कर रहे थे. मैने कहा ये तो अच्छी बात है. गाँव वालो ने आख़िर मेरी बात मान ही ली.

मैने कहा रूपा कल मैं खुद वहाँ जाके सफाई के काम मे हाथ बटाउंगा और पुजारी जी को भी कहूँगा पूजा शुरू करने को. मैं बोला, रूपा अगर मेरे कहने से गाँव के लोग जब मंदिर आ सकते है. फिर खेत मे काम करने क्यो नही आएँगे.वो बोली आकाश देखो कल क्या होता है. फिर कौशल्या ने रूपा और मुझे दूध दिया पीने को. थोड़ी देर बाद रूपा बोली मुझे नींद आ रही है मैं चली सोने को.

मैं भी अपन बिस्तर पर लेट गया और बाग मे हुवी घटना के बारे मे सोचने लगा. मुझे तो यकीन ही नही आ रहा था कि कौशल्या की योनि मैने मार ली थी. मैं बिस्तर पर करवटें बदल रहा था. पर मुझे नींद नही आ रही थी. फिर मेरा ध्यान कौशल्या से हट कर किसन की मा सुभद्रा पर चला गया. मैने सोचा अगर कौशल्या की योनि मारने मे इतना मज़ा आया तो सुभद्रा जब ठुकेगी तो कितना मज़ा आएगा.

मेरा लिंग फिर से फुफ्कारने लगा था. मैने अपना ध्यान हटाने को उठा और बरामदे मे आकर पानी पीने लगा. घर की लाइट बंद थी मतलब सब लोग सो रहे थे. मैं भी वापिस बिस्तर पर आ गया और सोने की कोशिश करने लगा. मुझे नींद आई ही थी कि तभी कोई आया और मेरे बिस्तर पर चढ़ गया. मैने कहा कौन है. वो साया धीरे बोलो मैं हू कौशल्या और मेरी बगल मे आकर लेट गयी. मैने कहा आप इस वक़्त कोई आ गया तो. वो बोली सब सो रहे है. मुनीम जी और रूपा को मैने दूध मे नींद की गोली दे दी है. मैने कहा पर आपके पास गोली कहाँ से आई. वो बोली मुनीम जी जब घायल हुए थे तो दर्द से सो नही पाते थे.तब डॉक्टर ने दी थी उनको. तो कभी कभी देती ही हू. आज रूपा को भी एक गोली दे दी है अब तुम हो और मैं हू.

उसने मेरी निक्कर के अंदर हाथ डाल दिया और मेरे लिंग को जगाने लगी. मैने कहा कपड़े तो उतार दो. तो उसने जल्दी से अपने कपड़े उतार दिए और मैं भी नंगा हो गया. हम दोनो एक दूसरे से लिपटने लगे. मैं कौशल्या के बड़े बड़े नितंबों पर हाथ फेरता हुवा बोला आप बहुत ही मस्त हो. वो मेरे लिंग को दबाती हुवी बोली कि तुम्हारा औजार भी अच्छा है और लिंग पर अपने हाथ को चलाने लगी. फिर वो बोली मेरी स्तन को दबाओ. मैं अपने हाथ से उसकी स्तन दबाने लगा. कौशल्या ने एक आह भरी. उसकी बड़ी बड़ी स्तन मेरे हाथ मे समा ही नही रही थी. जितना ज़ोर से मैं उसको दबाता उतना ही वो और भी बड़ी होती जा रही थी. फिर मैने अपना मूह उसकी स्तन पर लगा दिया और उसको चूसने लगा. अब स्तन औरत का संवेदन शील अंग होता है तो जल्दी ही कौशल्या के शरीर मे वासना का कीड़ा काटने लगा.

१०-१५ मिनिट तक चूस चूस कर मैने उसकी छातियो को लाल कर दिया. मैने फिर कौशल्या ने मुझे अपने उपर खीच लिया और मेरे लिंग को अपनी बालो से भरी हुई योनि पर रगड़ने लगी. वहाँ पर रगड़ाई से मुझे गुदगुदी सी होने लगी और अच्छा भी बहुत लग रह था. कौशल्या ने अपने पाँवो को फैलाया और मुझे कहा कि अंदर डालो. मैं उस पर झुकता चला गया .जैसे जैसे मेरा लिंग उसकी योनि मे घुसता जा रहा था. मुझे लग रहा था कि मैं स्वर्ग की सैर पर जा रहा हू. उसकी कसी हुई योनि मेरे लिंग को दबा रही थी.कौशल्या ने अपनी टाँगो को थोड़ा सा उपर उठा लिया और अपनी बाहें मेरी पीठ पर कस दी और मेरे चेहरे को चूमने लगी. मैं भी उसे किस करने लगा. वो बोली धीरे-धीरे धक्के लगाओ, मैं आहिस्ता से लिंग को योनि की सैर करवाने लगा.

मैं उसके कान पर काट ते हुवे बोला कि आप सच मे बहुत मस्त हो. वो शरमा गयी और अपनी टाँगो को मेरी कमर पर लपेट दिया. मैं उसके गालो को चूमते हुए ठुकाई करने लगा. पूरा लिंग उसकी योनि से बहते पानी से भीग गया और पच-पुच की आवाज़ हो रही थी. योनि और लिंग के घर्षण से कौशल्या बहुत ही धीमी आवाज़ मे आहे भर रही थी. तभी उसने पलटी खाई और मेरे उपर आ गयी और मेरे सीने पर झुकते हुए लिंग पर उपर नीचे होने लगी. उसकी स्तन मेरे चेहरे से टकराने लगी थी.

मैने उसकी काली स्तनाग्र को अपने मुँह मे ले लिया और चूसने करने लगा. वो और भी जोश से लिंग पर अपनी नितंब मटकाने लगी. उस कमरे मे बिस्तर पर हम दोनो एक बड़ा ही मजेदार खेल खेल रहे थे अब वो बड़ी ज़ोर से लिंग पर कूदे जा रही थी मुझे लगा कि कही इसकी रफ़्तार से लिंग टूट ना जाए. पर वो खाली मेरे मन का वहम था. अब वो मेरे उपर से उतर गयी और बोली कि मेरी टाँगे अपने कंधो पर रख कर ठोको मुझे. मैं वैसा ही करने लगा. अब उसकी योनि और भी ज़्यादा गीली हो गयी थी. लिंग बार बार फिसले जा रहा था. पर मैं रुक नही रहा था. और पूरा दम लगा कर उसकी योनि को ठोके जा रहा था. मैं भी अब काफ़ी आगे आ चुका था. पल पल मेरी मस्ती और भी बढ़ती ही जा रही थी. मैं अब उसके उपर आकर उसको ठोकने लगा.

वो भी अपनी नितंब को उपर कर कर के ठुक रही थी. उसने अपनी बाहों मे मुझे कस के जकड़ लिया था और अपने नखुनो को मेरी पीठ पर रगडे जा रही थी. हमारे होठ एक दूसरे से जुड़े हुवे थे और नीचे योनि और लिंग आपस मे जुड़े हुवे थे.काफ़ी देर हो गयी थी हमे एक दूसरे से घुथम घुथा होते हुवे. पर कहते है ना कि अगर शुरुआत है तो अंत भी होगा. कौशल्या ने मुझे कस के जाकड़ लिया और झड़ने लगी.जैसे ही उसका हुआ मेरे लिंग ने भी अपना वीर्य छोड़ दिया

हम दोनो अपने अपने सुख को प्राप्त हो गये थे. पर मैं उसके उपर ही पड़ा रहा. काफ़ी देर तक लिंग अपने आप सिकुड कर योनि से बाहर निकल आया था. फिर मैं लुढ़क कर उसकी बगल मे लेट गया वो मेरे सीने पर हाथ फिराते हुवे बोली कई दिनो बाद अच्छे से झड़ी हूँ. सब तुम्हारी बदोलत है. मैने कहा मैं आपका शुक्रेगुजार हू, जो अपने मुझे अपनी योनि का मज़ा दिया.

फिर थोड़ी देर बाद वो वहाँ से चली गयी और मैं सो गया.

८

सुबह मैं उठा तब तक रूपा स्कूल जा चुकी थी और मैं भी बिना बताए हवेली की तरह निकल पड़ा. गेट पर ही किसन मिल गया. मैने कहा तू कब आया वो बोला मैं तो उठते ही आ गया था और आपका इंतज़ार कर रहा था. मैने गेट खोला और अंदर आ गये.मैने कहा पानी की मोटर चला दे और बगीचे मे पानी छोड़ दे.

मैं नहाने चला गया फिर मैं तैयार हुवा और कहा कि किसन पानी देना हो गया हो तो आजा मंदिर की तरफ चलते ह. रास्ते मे हम पुजारी के घर भी गये और उनसे थोड़ी बात चीत की फिर हम मंदिर पहुच गये तो कुछ लड़के सफाई करने मे लगे थे. मैने कहा आजा किसन हम भी इनकी मदद करते है पर किसन बोला मैं नीच जात वाला मंदिर मे नही जाऊंगा.

मैं उसे वही छोड़ कर अंदर चला गया.वो लड़के मुझे देख कर बोले अरे आप यहाँ क्यो आ गये. हम लोग कर लेंगे.मैने कहा कोई बात नही, मैं भी आप लोगो की सहयता कर देता हू और उनलोगो के साथ जुड़ गया. दोपहर तक हम लोगो ने काफ़ी काम कर दिया था. और थकान से मेरा बुरा हाल हो गया था. और सुबह से कुछ खाया भी नही था. मैने उन लड़को से कहा कि किसी का घर पास है तो थोड़ा पानी पिला दो.

तो उनमे से एक लड़का बोला, ठाकुर साहब आप हमारे घर का पानी पीओगे. मैने कहा तुम्हारे घर का पानी क्यो नही पियुंगा, जाओ थोड़ा लेके आओ. वो भागते हुए गया और पानी का जग ले आया. पानी हलक मे उतरा तो रूह को चैन मिला. मैने कहा आप लोग भी काफ़ी थक गये है. अब बाकी काम बाद मे देखेंगे. मैने कहा गाँव मे कोई जलपान की दुकान है क्या.

तो पता चला कि स्कूल के पास एक हलवाई की दुकान है. मैने उन लड़कों को कहा कि आप लोग थोड़ी देर मे मुझे वही पर मिलना फिर मैं किसन को लेकर वहाँ पहुच गया.दुकान थोड़ी छोटी सी थी. मैने सब के लिए चाइ-समोसो और कुछ मीठे का ऑर्डर दिया. वो लड़के थोड़ा संकोच कर रहे थे. पर फिर मेरे साथ घुल मिल गये फिर किसन अपने घर चला गया. और मैं चोपाल की तरफ बढ़ गया.

बाबा वही नीम की नीचे बैठे हुक्का पी रहे थे. मैं भी उनके पास जाकर बैठ गया. उन्होने मेरा हाल चाल पूछा. मैने कहा बाबा बस थोड़ा सा परेशान हू. वो बोले क्या हुआ. मैने कहा

बाबा वो ही परेशानी है लोग चाहिए काम करने को, कुछ हवेली के लिए और कुछ खेतो और बाग के लिए. समझ नही आता कि क्या करू. वो बोले आकाश तुम शाम को आ जाना. मैं लोगो को मनाने की कोशिश करूँगा. कोई ना कोई तो मेरी बात मान ही लेगा.

मैने कहा बाबा एक समस्या और है अगर कोई खाना बनाने वाली का भी इंतज़ाम हो जाता तो ठीक रहता. मैं रोज मुनीम जी के घर खाना ख़ाता हू, तो अच्छा नही लगता. मैं उनको परेशानी नही देना चाहता. वो बोले बेटा मैं देखता हू तेरे लिए क्या कर सकता हू. फिर मैं कुछ देर बाबा के पास ही रहा और फिर घर आ ग.या करने को कुछ था नही तो अपने माँ-बाप की तस्वीरो से ही बाते करने लगा कि क्यो वो मुझे अकेला छोड़ कर चले गये.

सच तो था कि मैं खुद को बहुत ही अकेला महसूस करता था. मैं खुद को कोस्ता था कि आख़िर क्यो मेरा जीवन औरो की तरह नही है. दिल कर रहा था कि बस रोता ही रहूं. मेरा दिल बहुत भारी सा हो गया था. मैं बाहर आ गया और लॉन मे लगे झूले पर बैठ गया. पर मेरा मन उधर भी नही लगा. मैने मैनगेट पर ताला लगाया और गाँव से बाहर चल पड़ा और घूमते घूमते नदी किनारे आ गया. आज यहाँ पर कोई नही था. तो एक साइड मे बैठ गया और पानी को देखने लगा.

मैं अपने ख़यालो मे डूबा हुवा था कि तभी एक लड़का मेरे पास आकर खड़ा हो गया. ये वोही था जिसने मुझे पानी पिलाया था. वो बोला आकाश साहब आप यहाँ पर क्या कर रहे है. मैने कहा यार पहले तो तुम मुझे अपना दोस्त ही समझो और मुझे बस आकाश ही कहो. मैं थोड़ा सा परेशान था.इसलिए इस तरफ आ निकला. वो बोला मैं तो रोज ही शाम को इधर आता हू.

मैने कहा तुम्हारा नाम क्या है वो बोला. जी मैं चिंटू हू. मैने कहा चिंटू तू पढ़ता है. वो बोला हाँ मैं स्कूल मे पढ़ता हू. मैने कहा तेरे घर मे कौन कौन है. वो बोला माँ-बापू और मैं. मैने कहा बापू क्या करते है.बोला पहले तो मज़दूरी ही करते थे, पर एक दिन छत से गिर गये तो टाँग खराब हो गयी. आजकल चिलम पीकर पड़े रहते है और माँ छोटा-मोटा काम करके घर चला रही है. ये बोलते बोलते वो रुआंसा हो गया.

मैने कहा घबराता क्यो है पगले देख तेरे पास कमसे कम माँ बाप तो है ना. मुझे देख मैं तो अनाथ हू. इतना बड़ा घर है मेरा, पर रहने वाला मैं एक. तू जल्दी ही पढ़ लिख के नोकरी

लग जाना फिर सब ठीक हो जाएगा. फिर वो बोला आप परेशान क्यो हो. मैने कहा यार मेरा एक आम का बाग है पर कोई राज़ी नही है चौकीदारी को. रोज लोग आम चुरा कर ले जाते है. मुझे काफ़ी नुकसान हो रहा है.बस इसी लिए थोड़ी से परेशानी है. वो बोला क्या आप मेरे बापू को चोकीदार लगा लोगे मैने कहा अगर वो काम करना चाहे तो पक्का रख लूँगा और तनख़्वाह भी औरो से ज़्यादा दूँगा. तो उसकी आँखो मी चमक आ गयी. वो बोला मैं कल अपने बापू को लेकर हवेली आता हू. मैने कहा ठीक है फिर वो जाने को हुआ. मैने कहा यार एक काम और है अगर कर सके. वो बोला आप बस हुकम करो. मैने कहा यार अगर कोई हवेली की रसोई को संभालने को तैयार हो तो बताना.

फिर मैं चोपाल पर आ गया बाबा के कहने से कुछ लोग दुगनी मज़दूरी पर काम करने को राज़ी हो गये थे. मैने कहा ठीक है आप लोग कल से खेतो पर आ जाना बाकी बाते वही पर करेंगे.मैने कहा बाबा आपने मदद की आपका अहसान है मुझ पर , पर अभी आपकी थोड़ी और सहायता चाहिए. मंदिर को फिर से पहले जैसा करना है. मेरे कहने से तो लोग आना कानी करेंगे अब आप ही उधर की व्यवस्था संभाले. तो बाबा बोले अगर तुम्हारी इच्छा है, तो ऐसा ही होगा.

मैने कहा बाबा जिस चीज़ की भी ज़रूरत हो आप बस आदेश करना. पर ये काम जल्दीही होना चाहिए. जैसे ही मैं चलने को हुवा तो बाबा बोले आकाश चाइ पीओगे. मैने कहा बाबा आप पिलाएँगे तो ज़रूर पियुंगा.वो बोले आओ मेरे साथ चलो. मैं उनके साथ उनके घर आ गया बाबा ने मुझे बैठने को मुद्ढ़ा दिया और अंदर आवाज़ लगाई. अरी ओ बहुरिया ज़रा दो कप चाइ तो बना. मेहमान आए है घर पे.

कोई दस मिनिट बाद चाइ आ गयी पर चाइ लेकर आया कौन था.
……………………… चिंटू ! मैने कहा चिंटू तुम यहाँ क्या कर रहे हो. वो बोला आकाश साहब ये मेरा घर है.बाबा बोले तुम जानते हो इसको. मैने कहा हाँ बाबा. अनजाने ही मैं उसके घर आ गया था. मैने फिर बाबा को कहा कि अगर चिंटू के पिताजी मेरे बाग की चोकीदारी करें तो ठीक रहेगा. बाबा बोले वो सारा दिन चिलम पीकर पड़ा रहता है वो क्या करेगा.

पर अगर आपकी इच्छा है वो अंदर ही पड़ा होगा आप बात कर लो. मैने चाइ का कप रखा और अंदर चला गया. चिंटू ने अपने बापू से मेरा परिचय करवाया और आने का मकसद बताया.शुरू मे तो उसने मना किया पर फिर अच्छी तनख़्वाह की बात सुनकर मान गया.

हम लोग बात कर ही रहे थे कि तभी चिंटू की माँ भी आ गयी और उसके पति को काम देने के लिए मेरा शुक्रिया करने लगी.

चिंटू की माँ बेहद ही सुंदर औरत थी. एक दम साँचे मे ढला हुवा सुतवा शरीर जो कि ग़रीबी की मार से थोड़ा सा ढल गया था. पर एक अलग ही कशिश थी उसमे. मैने मन मे सोचा इस गधे को ऐसा फूल कहाँ से मिल गया ,पर ज़्यादा देर अपनी नज़र उस पर नही रख सकता था. तभी चिंटू बोला, माँ आकाश बाबू को हवेली की रसोई मे काम करने को कोई चाहिए आप उधर काम करने लग जाओ ना तो इनका काम भी हो जाएगा और घर की हालत भी सुधर जाएगी. वो बोली पर मैं कैसीईईईईईईईईई??? पर चिंटू का बापू जो मुझे थोड़ा लालची सा लगा,उसने कहा मालिक ये आजाएगी हवेली मे रसोई का काम करने को. कल से ही आ जाएगी.

मैने कहा ठीक है मैं कल ही शहर जाके रसोई की ज़रूरत का समान खरीद लाऊँगा.आप एक दो दिन मे आ जाना. मैं भी खुश था कि चलो मेरी कुछ परेशानी तो दूर हुई.फिर मैं उनलोगो से विदा लेकर मुनीम जी के घर चला गया और सारी बात उनको बताई. कौशल्या बोली एक बार लोग आप पर थोड़ा भरोसा करने लग जाए फिर वो काम भी करने लगेंगे. वो तो मुझे आज भी उधर ही रोकना चाहती थी,पर मुझे सुबह जल्दी ही शहर जाना था. मैं खाना खाते ही निकल लिया.

९

अगले दिन मैं जल्दी ही उठ गया और शहर जाने की तैयारी करने लगा. तब तक किसन भी आ गया था. मैने उसको कहा कि मैं शाहर जा रहा हू. तू मेरे आने तक इधर ही रहना. घर की सफाई करना, पानी भरना टंकी मे और कुछ काम दिखे वो भी कर देना और हाँ परशुराम आए तो उस से कहना कि सीधा बाग मे चला जाए और वहाँ संभाल ले. फिर मैने कार स्टार्ट की और निकल पड़ा.

शहर पहुच कर मैने सबसे पहले राशन का सामान खरीदा. जो भी मुझ चाहिए था. फिर मैने किसन और चिंटू के लिए कुछ जोड़ी कपड़े खरीदे. बँक गया कुछ रकम निकाली. लंच भी वही पर कर लिया. फिर मैं कार के शोरुम गया और कहा कि मेरी दूसरी कार की डेलिवरी अभी तक नही की है. तो उन्होने बताया कि सर एक हफ्ते मे डेलिवरी हो जाएगी.

मुझे तसीलदार ऑफीस भी जाना था. अपनी पूरी ज़मीन की फिर से पैमाइश करवानी थी पर फिर वो काम पेडिंग ही रहने दिया. अब एक दिन मे क्या क्या होता. गाँव आते आते अंधेरा होने लगा था. मैं तेज़ी से आगे बढ़ा चला जा रहा था. पर फिर किसी को देख कर मैने ब्रेक लगा दिए और शीशा नीचे किया. ये किसन की माँ सुभद्रा थी. मैने कहा आप यहाँ इस वक़्त क्या कर रही है.

किसी के खेतो मे काम करने गयी थी, आते आते देर हो गयी. मैने कहा अगर आप को बुरा ना लगे तो आप मेरे खेतो मे काम करने आ जाओ. मैं पैसे भी दूसरो से ज़्यादा दूँगा . वो बोली जी ठीक है.मैं कल से आ जाऊंगी. मैने कहा आओ बैठो मैं आपको घर छोड़ देता हू. वो बोली मालिक काहे हम छोटी जात वालो को पाप लगाते हो. मैं खुद चली जाऊंगी. मैने कहा आप कैसी बाते करती है. आप मेरे दोस्त की माँ हो. आओ जल्दी और फिर मैने उनको उनके घर छोड़ा और हवेली आ गया.

हॉर्न सुन कर किसन ने गेट खोला मैने कार पार्क की और किसन से कहा कि समान उतार कर अंदर रख दो. मैं आता हू. हाथ मूह धोके मैं फ्रेश होके आया तो देखा कि चिंटू है. मैने कहा तुम इस टाइम यहाँ कैसे. वो बोला माँ ने आपके लिए खाना और दूध भेजा है. तभी किसन बोला मालिक आपका खाना तो मुनीम जी के घर से आ गया है. मैने कहा कौन आया था. वो बोला कि सेठानी जी आई थी

मैने कहा चलो कोई बात नही. फिर मैने कहा किसन तेरे लिए कुछ है और उसका पॅकेट उसको दे दिया और चिंटू का उसको.मैने कहा चिंटू माँ से कहना कि कल ९ बजे तक आ जाए. फिर मैने किसन को कुछ रुपये दिए और कहा कि माँ को दे देना. वो लोग खुश होते हुवे चले गये पता नही क्यो मुझे अच्छा लगा. मैने गेट बंद किया और खाना खाकर सो गया.

अगले दिन मैने कौशल्या को फोन किया और कहा कि कुछ लोग खेत पर आएँगे थोड़ा सा देख लेना.मैं दोपहर बाद तक आऊंगा उधर.वो बोली ठीक है मैं संभाल लूँगी. किसन सफाई के काम मे लगा था. मैने उसको कहा कि किसन मैं लकड़ी काटने पीछे की तरफ जा रहा हू. चिंटू की माँ आए तो उसको उधर ही भेज देना. वो बोला जो हुकुम. मैने कुल्हाड़ी ली और पीछे की तरफ आ गया और लकड़ी काटने लगा. लकड़ी की तो रोज ही ज़रूरत पड़ती रहती थी. मैं काटने लगा काफ़ी देर तक मैं उसी काम मे बिज़ी रहा. फिर मैने देखा कि चिंटू की माँ मेरी तरफ ही चली आ रही है.

मैं पेड़ के नीचे बैठ गया और अपना पसीना पोंछने लगा. वो बोली आप मालिक होकर भी ऐसे काम करते है.मैने कहा मैं कोई मालिक वालिक नही हू. बस आपकी तरह ही एक सामान्य इंसान हू और फिर अपना काम करने मे कैसी शरम. मैने लकड़ी और कुल्हाड़ी वही पर छोड़ी और उस से कहा आओ मैं तुम्हे रसोई दिखाता हू. पर रसोई की सफाई करवाना मैं भूल गया था.

मैने किसन को कहा कि पहले तू रसोई को चमका ताकि आज मेरे घर चूल्हा जल सके. फिर मैं उस औरत को अपने कमरे मे ले आया और बैठने को कहा. वो बोली मालिक मैं कैसे आपके सामने.... मैने कहा फिर वोही बात अगर आप ऐसा करेंगी तो मुझे बुरा लगेगा. वो कुर्सी पर बैठ गयी. मैने कहा तुम्हारा नाम क्या है. वो बोली जी मेरा नाम रंभा है. मैने कहा बड़ा ही सुंदर नाम है. वो शर्मा पड़ी.

मैने कहा देखो तुम्हे दो टाइम का खाना बनाना होगा,बर्तन माँजने होंगे और कोई मेहमान आए तो बुलाने पर आना होगा. वो बोली जी ठीक है. मैने कहा अब ये भी बता दो कि तनख़्वाह कितनी लोगि. वो बोली मालिक इतना दे देना कि गुज़ारा हो जाए. मैने कहा तुम बताओ तुम कितनी लोगि फिर इसने कहा कि जी २००० दे देना. मैने कहा मैं तुमको ४००० हज़ार दूँगा पर शर्त ये है कि खाना कल की तरह ही अच्छा होना चाहिए.

मैने अलमारी से पैसे निकाले और उसको दे दिए. मैने कहा ये तुम्हारी तनख़्वाह अड्वान्स मे ही दे रहा हू. वो बोली मालिक आपका शुक्रिया और कल जो आपने चिंटू को कपड़े दिए

कितने महंगे थे. आप उसके पैसे काट लो. मैने कहा तुम यहाँ काम करने आ रही हो तो मेरे घर की सदस्य ही हुई फिर ऐसी बात ना करना. देख लो अगर रसोई ठीक हो गया हो तो एक चाइ ही पिला दो.

वो बाहर की ओर चली गयी और मैं उसकी साड़ी से बाहर आने को बेताब नितंब को निहारने लगा. लिंग मे सुरसूराहट होने लगी.मैने सोचा देर सवेर इसको भी पटाना पड़ेगा. थोड़ी देर बाद मैं रसोई की तरफ गया तो देखा कि वे दोनो रसोई की सफाई कर रहे है. मैने कहा रंभा तुम क्यो कर रही हो किसन कर लेगा वो बोली अब ये भी तो मेरे घर का ही काम हुआ ना. मैने कहा ठीक है, मैं खेतो की तरफ जा रहा हू तुम खाना बना कर रख जाना और किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो किसन है ही यहाँ .

कोई आधे घंटे बाद मैं खेतो पर था. कौशल्या भी वही पर थी और किसी साहूकार से लग रहे आदमी से बात कर रही थी. फिर उसने मेरा परिचय उस सेठ से करवाया तो पता चला कि वो कई साल से हमारी फसल खरीदता आ रहा था. पर इस बात कटाई मे हो रही देरी से चिंतित था. मैने कहा सेठ जी आप चिंता ना करे अनाज तय तारीख पर आपको मिल मे पहुच जाएगा. फिर वो बोला कि ठाकुर साहब ये आधा पैसा है. आधा मैं बाद मे दे दूँगा.मैने कहा जो भी हिसाब है मैने सेठ से कहा आप कौशल्या जी से कर ले मैं ज़रा आता हू.

जिस ओर कटाई चल रही थी उस ओर जाकर मैने भी औजार लिया और फसल काटने लगा. वैसे मुझे आती नही थी कटाइ.पर कोशिश तो कर ही सकता था. सुभद्रा मेरे पास आई और बोली मालिक,आप ये क्या कर रहे है. आपके हाथो मे छाले हो जाएँगे. मैने कहा मैं भी इस खेत का एक मजदूर ही हू. मैं उनसे बाते करता हुआ कटाई करने लगा. सुभद्रा ने अपना पल्लू कमर पर बाँधा हुवा था. तो उसका ब्लाउज उसकी स्तनों का भार नही उठा पा रहा था.

उसकी स्तन कौशल्या की से भी काफ़ी बड़ी थी ४० की उमर मे सुभद्रा एक बेहद ही जबर दस्त माल थी. मेरा ध्यान अब कटाई पर नही था. बस उसके स्तनों पर ही था. सुभद्रा भी मेरी नज़रो को भाँप गयी थी. परंतु उसने अपनी स्तनों को छुपाने की ज़रा भी कोशिश नही की बल्कि बार बार मुझे अपनी हिलती स्तन दिखाने लगी. मेरी पँट मे उभार बन गया था.

जिस तरफ हम लोग कटाई कर रहे थे उस तरफ बस हम दोनो ही थे. उसे पता तो था ही कि मैं उसके स्तन देख लार टपका रहा हू. तो उसने ये कहते हुवे कि, आज गर्मी कुछ ज़्यादा है अपने ब्लाउज के उपर वाले बटन को खोल दिया. तो मुझे उसकी घाटी और भी

अच्छे से दिखने लगी. मेरा हाल बुरा होने लगा. आख़िर मैने पँट के उपर से अपने लिंग को मसल ही दिया.

फिर सुभद्रा ने कुछ ऐसा किया कि मैं समझ गया कि एक और योनि का जुगाड़ हो ही गया. वो बोली मालिक खड़े खड़े कटाई से मेरी तो कमर ही दुखने लगी है.मैं बैठ कर कटाई करती हू. उसने अपने साड़ी को घुटनो तक चढ़ा लिया और फिर बैठ गयी तो मेरी नज़र उसकी मोटी मोटी टाँगो पर पड़ी थी तो पूरा जबर माल थी वो. फिर मुझे तड़पाने को उसने अपनी टाँगे थोड़ा सा खोल दी तो मुझे उसकी फूली हुवी योनि दिखने लगी.मेरा तो गला ही सूख गया.

योनि पर हल्के हल्के बाल थे. शायद कुछ दिन पहले ही उसने बालो को काटा होगा. उसने थोड़ा सा और अपनी टाँगो को खोला और मैं तो जैसे पिघल ही गया. वो जान बुझ कर मुझे ये मस्त नज़ारा दिखा रही थी. पर फिर मुझे आवाज़ लगाती हुवी कौशल्या आ गयी तो सुभद्रा भी सही हो गयी और कटाई करने लगी. कौशल्या बोली मुझे आपसे कुछ ज़रूरी बात करनी है आना ज़रा.

मैने सुभद्रा को वही पर छोड़ा और कौशल्या के पीछे पीछे चल पड़ा. कुवे पर बने कमरे मे अब हम दोनो ही थे. उसने मुझे एक पॅकेट दिया और कहा कि ये लो वो सेठ जी ये पैसे दे गये थे. मैने कहा आप ही रखो मैं जब बँक जाऊंगा तो ले लूँगा. वो बोली मैं घर जा रही हू तुम भी चलो मैने कहा नही मैं रुकता हू इधर थोड़ा टाइम पास भी हो जाएगा.

वो चलने को हुई मैने कहा दो मिनिट रूको और जैसे ही वो पलटी मैने उसको अपनी बाहों मे भर लिया और उसके होठोको पीने लगा. पर एक छोटा सा किस ही ले पाया. उसने मुझे अपने से दूर कर दिया और बोली कि क्या करते हो इधर कोई भी आ सकता है.खुद का नही तो मेरा तो ख़याल करो. मैने कहा पर आपसे अकेले मिलने का टाइम ही नही मिल रहा है.

वो बोली एक दो दिन मे मैं हवेली आऊंगी फिर देखते है और अपनी नितंब को कुछ ज़्यादा ही हिलाते हुवे चली गयी. उसके जाने के बाद मैं भी वापिस खेतों पर आ गया. शाम होने लगी थी छुट्टी का समय हो गया था. मैं सब से थोड़ी बहुत बाते करने लगा फिर सबको पेमेंट

की तो एक एक करके वो लोग अपने घर जाने लगे. सुभद्रा भी जाने की तैयारी कर रही थी पर मैं उसके साथ थोड़ा और खुलना चाहता था.

मैं वहीं पर उस से बाते करने लग गया. मैं चाहता था कि सब लोग चले जाएँ.मैने कहा ज़रा कमरे मे आओ कुछ काम है. तो उसने अपनी तिरछी नज़रो से मुझे देखा और मेरे पीछे पीछे आ गयी. अंदर आते ही मैने उसको पकड़ लिया और उसके बड़े बड़े स्तनों को दबाने लगा. वो बोली आहह मालिक क्या करते हो छोड़िए मुझे.मैने कहा जब तो अपनी कॅटिली जवानी दिखा दिखा कर मुझे गरम कर दिया और अब छोड़ने को कह रही हो.

मैं और ज़ोर ज़ोर से उसकी स्तन दबाने लगा.सुभद्रा एक दर्द भरी आह भरते हुवे बोली मालिक अभी छोड़ दो मुझे जाने दो. घर जाकर पानी भरना है और किसन के लिए खाना भी बनाना है. मैं वादा करती हू कि फिर कभी आपको पक्का दे दूँगी. मैने कहा ठीक है पर जाने से पहले अपनी इस के दर्शन तो करवाती जाओ और उसकी योनि को मसल दिया. उसने अपनी साड़ी कमर तक उठाई और मुझे उसकी मस्त योनि दिखाने लगी. थोड़ी देर बाद वो वहा से चली गयी.सुभद्रा के जाने के बाद यहाँ कुछ भी नही था करने को मैं भी हवेली आ गया.

आया तो देखा कि रंभा खाना बनाने मे लगी हुवी थी उसने अपनी साड़ी का पल्लू कमर पे खोसा हुवा था. और आटा लगा रही थी. उसकी पीठ मेरी तरफ थी उसकी मोटी नितंब बाहर की तरफ निकली हुवी थी. उफफफफफफफफ़ क्या कयामत लग रही थी. दिल तो किया कि अभी इसकी नितंब मार लूँ पर वो कहते है ना कि सबर का फल मीठा होता है. मैने उसको कहा की एक कप चाइ मिलेगी.

वो पीछे को मूडी और बोली आ गये आप , आप हाथ मूह धो लीजिए मैं अभी लाती हू. मैने कहा किसन के लिए भी बना लेना. वो बोली किसन तो है नही यहाँ पर.वो आम के बाग पर गया है. मैने कहा वहाँ क्यो गया है. वो बोली कि मैने सोचा कि आपके लिए आमरस बना दूं तो बस उसी लिए भेजा है. मैने कहा ठीक है पर उसको तुम्हे अकेला छोड़ कर नही जाना चाहिए था.

हवेली अक्सर खाली ही पड़ी रहती है. वो बोली मालिक किस की इतनी हिम्मत है जो आपके घर की ओर आँख उठा कर देख सके. मैने कहा पर फिर भी उसे ऐसा नही करना चाहिए था. मैने कहा २-४ दिन मे इधर भी एक फोन लगवा देता हू ,ताकि यहाँ से कभी भी मुझसे बात हो सके.फिर मैं बाहर आ गया और वो चाइ बनाने लगी.

मैने हाथ-मूह धोया और कपड़े चेंज करके बाहर बगीचे मे डाली कुर्सी पर आकर बैठ गया और कल की प्लॅनिंग करने लगा. तभी रंभा छाई लेकर आ गयी. मैने कहा तुम्हारा कप कहाँ है ..वो बोली जी ,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,, मैने कहा तुम भी तो चाइ पियो. वो बोली पर मैं आपके आगे................ मैने कहा फिर वोही बात, जाओ और अपना कप लेकर आओ. कुछ देर बाद हम बाते करते हुवे चाइ पी रहे थे.

मैने कहा तुम खाना बहुत अच्छा बनाती हो. शहर के होटेल भी फैल है तुम्हारे आगे. वो बोली क्या आप भी मुझे चिढ़ा रहे है. मैने कहा अरे मैं सच बोल रहा हू .अपनी तारीफ सुनकर वो खुश हो गयी और मुझसे थोड़ा खुलने लगी.फिर वो मेरा खाना बना कर चली गयी. क्योंकि उसे घर जाकर अपने परिवार के लिए भी खाना बनाना था.

थोड़ी देर बाद किसन भी आ गया आम लेकर. मैने कहा किसन आगे से घर को ऐसे छोड़ कर नही जाना और अगर जाना पड़े तो मुझसे पहले बात कर लेना. कुछ दिनो मे इधर फोन लगवा दूँगा.

वो बोला जी हुकुम. फिर उसने कहा कि हुकुम एक बात कहनी थी. मैने कहा बता. वो बोला अगर एक साइकल होती तो थोड़ी आसानी होती. मैने कहा ले ले फिर पूछ क्यो रहा है. वो बोला मालिक लेकर तो आप ही दोगे ना. मैने कहा ठीक है अबकी बार शहर जाऊंगा तो लेता आऊंगा. वो बोला हुकुम अपने गाँव मे ही एक आदमी साइकल सुधारने की दुकान चलाता है. और साइकल बेचता भी है.

मैने कहा अरे वो पुरानी साइकल देगा. मैं तुझे नई साइकल लाकर देता हू ना.फिर किसन बोला मैं अब जाऊ. मैने कहा ठीक है.उसके जाने के बाद मैने डिन्नर किया थोड़ी देर अपनी घरवालो की तस्वीरो को देखता रहा और फिर सो गया. एक नये कल की उम्मीद मे …………………………. ……………………….. ……………………………… ………

१०

अगली सुबह मैं थोड़ी जल्दी ही बाग की तरफ निकल गया. परशुराम मुझे वही पर मिला. मैने कहा हा भाई सब ठीक चल रहा है ? वो बोला मालिक आपकी दया है बस. मैने कहा और बताओ. वो बोला मालिक बात ये है कि बाग बहुत बड़ा है और एक आदमी के बस की नही है. रखवाली करनी ३-४ लोग चाहिए. मैने कहा यार मैं तेरी बात समझता हू.जल्दी ही करता हू कुछ वो बोला दो लोगो को मैं राज़ी कर लूँगा आने को. मैने कहा वाह ये बढ़िया बात कही तूने.वो बोला पर थोड़ी सी परेशानी है. एक थोड़ा दारूबाज है. मैने कहा बस अपना काम ठीक से करे फिर चाहे दारू पिए या जहर मुझे कोई मतलब नही.

फिर वो बोला पीछे की तरफ तारबंदी करवानी है. मैने कहा करवाले तुझे जो करना है. काम होने के बाद बता दियो कितना खर्चा आया है. फिर मैं घर आया तो देखा कि ना किसन आया था और ना रंभा. कुछ देर इंतज़ार किया पर कोई भी नही आया. फिर मैं शहर के लिए निकल गया.

शहर मे ऐसा उलझा कि बस फिर टाइम का पता ही नही चला. आधा दिन तो तहसीलदार के ऑफीस मे लग गया. कुछ पुराने नक्शे देखे और कहा कि जल्दी से मेरी पूरी ज़मीन की पैमाइश करवाओ. फिर फोन के कनेक्शन के लिए अप्लाइ किया. मैने सोचा इधर के जो भी काम है आज पूरे ख़तम करके ही घर जाऊंगा.ताकि फिर कई दिन चक्कर लगाने की नोबत ही ना आए. आते आते रात हो गयी थी तो मैं बिना खाये ही सोगया.

सुबह जब मैं उठा तो बारिश हो रही थी.बिजली थी नही. मैं फ्रेश होकर आया मुझे चाइ के बड़ी तलब लगी थी. पर जब रंभा आए तब चाइ बने. पता नही क्यो मेरा मन हुवा बारिश मे भीगने को मैं गेट के पास आ गया और भीगने लगा. ठंडी ठंडी बूंदे जब मेरे जिस्म पर पड़ रही थी तो बड़ा ही अच्छा लग रहा था. मुझे दिल ऐसा खुश हुआ कि दिल फिर किया ही नही अंदर जाने को.

तभी छतरी लिए रंभा आ गयी काले घाघरा-चोली मे क्या मस्त लग रही थी वो. घाघरा उसकी जाँघो पर बिल्कुल चिपका हुवा था. वो बोली मालिक आप भीग क्यो रहे हो कही बीमार ना हो जाना. मैने कहा दिल किया तो भीगने लगा तुम जाओ और जल्दी से चाइ बनाओ.बड़ी तलब लगी है .वो अंदर जाने लगी और एक बार मेरी नज़र उसके नितंबों पर ठहर गयी.

ये जवानी भी एक अलग ही होती है और फिर मेरे मूह तो खून लग चुका था. कौशल्या की लेने के बाद से मैं और भी ज़्यादा तप रहा था. मुझे ज़रूरत थी एक योनि की जो मुझे ठंडा कर सके. दिल तो किया कि मुट्ठी मार के हल्का हो जाऊ पर फिर सोचा कि अब तो बस योनि ही मारनी है. बारिश अब थोड़ी और तेज होने लगी थी तो मुझे और भी मज़ा आने लगा था.

तभी रंभा अहाते से चिल्लाते हुवे बोली कि चाइ तैयार है आप आ जाइए. पर मेरा मूड आज थोड़ा सा अलग था. मैने कहा बगीचे मे ले आओ उधर ही पीऊंगा और मैं बगीचे की तरफ चल पड़ा और मेरे पीछे पीछे वो भी एक हाथ मे छतरी पकड़े और दूसरे मे कप और केतली बड़ी ही मुश्किल से संभाले हुए मेरी तरफ आने ल.गी मुझसे बस दो कदम ही दूर थी कि तभी उसका पैर गीली मिट्टी पर फिसला और छतरी और केतली उसके हाथो से छूट गयी.

मैं जल्दी से उसकी ओर भागा और गिरने से पहले ही उसे अपनी बाहों मे थाम लिया. इस कोशिश मे मेरा एक हाथ उसकी नितंब पर आ गया और दूसरे मे उसकी स्तन आ गयी. उसका सारा वजन मेरी टाँग पर आ गया था. मैने भी मोके का पूरा फ़ायदा उठाते हुवे उसके स्तन को कसकर दबा दिया तो उसके मूह से सीईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई की आवाज़ निकल गयी. दो पल हम उसी पोज़िशन मे रहे फिर वो बोली मुझे खड़ा कीजिए. मैं भीग रही हू. मैने उसको खड़ा किया मैने जल्दी से छतरी उठा कर उसको दी. इस बीच वो भी काफ़ी हद तक भीग गयी थी.

वो थोड़ा सा घबराते हुवे बोली मालिक ग़लती हो गयी मैं अभी दूसरी चाई बना देती हूँ. आगे से मैं ध्यान रखूँगी कि ऐसी ग़लती दुबारा ना होगी. मेरी नज़र तो उसके ब्लाउज मे से होते हुवे उसकी स्तनों की घाटी पर थी. तो पता ही नही चला कि उसने क्या कहा. फिर जब दुबारा उसने मुझे कहा मैने हड़बड़ाते हुवे कहा कि, वो छोड़ो पहले बताओ तुम्हे कही चोट तो नही लगी ना.वो बोली नही.

फिर हम अंदर आ गये मैने कहा पहले तुम अपने कपड़ो को सूखा लो फिर दुबारा से चाइ बना लेना. मैं भी तब तक कपड़े चेंज करके आता हू .फिर जब मैं रसोई मे गया वो गॅस के पास खड़ी चाइ बना रही थी. मैं बिस्कटो का डिब्बा उतारने के बहाने से उसके पिछवाड़े से बिल्कुल सट गया और थोड़ा सा आगे होते हुवे अपने लिंग को उसकी नितंब से सटा दिया.

इस तरह से वो स्लॅब की पट्टी और मेरे बीच मे आ गयी. मैने बस खाली निक्कर ही डाली हुवी थी तो लिंग भी थोड़ा सा आज़ाद फील कर रहा था. वो उसकी नितंब की दरार पर रगड़ खाने लगा. मुझे भी डिब्बा उतारने की कोई जल्दी नही थी पर हटना भी तो था. फिर मैं वही उसके पास खड़ा हो गया और उस से बाते करने लगा.

उसने कहा कि मैं कल आई तो बड़े गेट पर ताला लगा थामैने काफ़ी देर आपका इंतज़ार किया फिर शाम को भी ताला ही था. तो काफ़ी राह देखने के बाद मैं वापिस चली गयी. मैने कहा किसन मिला. वो बोली नही. वो भी पिछले तीन दिन से नही दिखा है. मैने कहा आज जाता हू उसके घर पर पता करता हू. वो बोली मालिक बुरा ना माने तो एक बात कहूँ.मैने कहा बोलो. वो बोली कि आप इन नीच जात वालो को कुछ ज़्यादा ही मूह लगाते है.

अब तो गाँव मे भी लोग यही चर्चा करते है कि एक नीच जात वाले के ज़िम्मे पूरी हवेली खुली छोड़ कर चले जाते है.मैने कहा मुझे कोई फरक नही पड़ता कि लोग क्या कहते है और फिर वो भी तो एक इंसान ही है ना और फिर वो हर काम पूरी ज़िम्मेदारी से करता है. रंभा बोली मालिक आपके विचार बड़े ठाकूरो से बिल्कुल अलग है. मैने कहा तुम भी तो और गाँव वालो से बहुत अलग हो.

वो बोली क्या आप भी मुझसे मसखरी कर रहे हो. मैने कहा मैं तो सच बोल रहा हू.तुम देखो कितनी सुंदर हो.तुम्हे देखते ही लगता है जैसे ही कोई खिला हुआ गुलाब हो .तो रंभा बुरी तरह से शरमा गयी .उसके गोरे गालो पर लाली छा गयी. वो बोली मैं कहाँ इतनी सुंदर हू आप तो ख़ामाखाँ मे ही इतनी तारीफ़ कर रहे है .मैने उसको अपने साथ लिया और मेरे कमरे मे शीशे के सामने लाकर खड़ी कर दिया.

मैने कहा ज़रा गोर से देखो आईना और फिर वो बताओ जो मैने कहा. जब तुम बिना शंगृार के इतनी सुंदर हो तो जब तुम शंगृार करोगी तो कितनी सुंदर दिखोगी. रंभा अपनी तारीफ़ सुनकर बड़ी खुश हो गयी और मुझ से थोड़ा और खुल गयी. मैने कहा तुम ऐसे ही हँसती रहा करो. अच्छी लगती हो. उसने कहा मैं खाना बना देती हू फिर मैं शाम को आ जाऊंगी.

मैने कहा जाते टाइम गेट की दूसरी चाबी ले जाना. ताकि अगर मैं बाहर होउँ तो तुम घर मे आ सको. वो बोली मालिक आप अन्जान लोगों पर कुछ जल्दी ही भरोसा कर लेते है. मैने

कहा तुम कोई अजनबी थोड़ी ही हो. वो बोली भरोसे के लिए शुक्रिया. वो रसोई मे चली गयी.

मैने कौशल्या को फोन किया वो बोली कि आज तो बारिश हो रही है, वो घर पे ही है. मैने कहा हवेली आ जाओ तुम्हारी बड़ी याद आ रही है.

वो बोली कि आज रूपा भी घर पर ही है और बारिश है तो कुछ बहाना भी नही बना सकती और ऐसे ही आऊंगी तो कही मुनीम जी शक़ ना कर लें. मैने कहा तुम्हारी मर्ज़ी है. जब तक तडपाओगी तड़पना पड़ेगा. फिर थोड़ी बातें कर फोन काट दिया. रंभा की वजह से लिंग बार बार खड़ा हो रहा था. पर मैं उस से कुछ कह भी नही सकता था.

मैं टाइम पास करने को उपर चला गया. इधर के पोर्षन की अभी सफाई नही करवाई थी. सब कुछ पहले जैसा ही पड़ा था. बाल्कनी मे बारिश की कुछ कुछ बूंदे आ रही थी तो अच्छा लगने लगा. यहाँ से काफ़ी दूर तक का नज़ारा दिखाई देता था. जहाँ तक नज़र जाती बस चारो तरफ हरियाली ही हरियाली.प्रकृति के इतने करीब मैने पहले खुद को नही पाया था.

पता नही कितनी देर तक मैं वही पर बैठा रहा. फिर मुझे ढूँढते ढूँढते रंभा भी उपर आ गयी और बोली मालिक आप यहाँ क्यो बैठे है. सब कही ढूँढकर यहाँ आई हू. मैने कहा कुछ नही थोड़ा सा दिल उदास सा हो रहा था. तो एकांत मे आकर बैठ गया. मैने कहा रंभा अकेला रहता हूँ इस घर मे तो खाली घर काटने को दौड़ता है. दिल भी नही लगता पर घर है तो रहना ही पड़ता है ना. कोई सन्गि-साथी है मेरा कोई भी नही है वो. बोली मालिक आप खुद को अकेला ना समझे, हम लोग है ना आपके साथ. मैने कहा वो तो है पर फिर भी जीना तो मुझे इसी अकेलेपन के साथ ही है ना और और उठकर बाल्कनी मे खड़ा हो गया.रंभा बोली आप खुद को कभी भी अकेला ना समझना और वो भी मेरे पास आकर खड़ी हो गयी.

कुछ देर तक चुप्पी रही फिर मैने कहा अगर मैं तुमसे कुछ कहूँ तो बुरा तो नही मनोगी. वो बोली मेरी क्या मज़ाल जो आपकी बात का बुरा मानू. आप कहिए जो कहना है मैने कहा रंभा वो बात ऐसी है कि कि…………………. वो बोली अब कहिए भी मैने कहा कि

क्या तुम मुझसे दोस्ती करोगी. ये सुनते ही उसके चेहरे का रंग उड़ गया और वो बोली मालिक ये आप क्या कह रहे है.

मैने कहा वही जो तुमने सुना , वो बोली पर मालिक मैं आपसे दोस्ती कैसे कर सकती हू मैं शादी शुदा हू और फिर आपमे और मुझमे ज़मीन आसमान का फरक है. आप ऐसा कैसे सोच सकते है और वैसे भी गाँवो मे ये दोस्ती वोस्ती कहाँ चलती है. ये तो शहरो के चोंचले है. मैने कहा देखो अभी मेरे दिल मे ख़याल आया तो बोल दिया. वैसे भी मैं तुम्हे अपना समझता हू तभी तुमसे कहा.

वो बोली पर मालिक मैईईईईईईई मैईईईईईईई…………………… और अपनी बात को अधूरा छोड़ दिया.मैने कहा कि देखो दोस्ती मे कोई शर्त नही होती है और फिर दुनिया के आगे नही तो कमसे कम हवेली मे तो तुम मेरी दोस्त बन ही सकती हो ना. वैसे कोई ज़बरदस्ती तो है नही. तुम्हे अच्छा लगे तो हाँ कर देना .मैं तुम्हारे जवाब का इंतज़ार करूँगा. फिर हमारे दरमियाँ खामोशी छा गयी.

थोड़ी देर बाद उसने कहा कि खाना ठंडा हो रहा है.आप खा लो और नीचे चल गयी. फिर मैं भी उसके पीछे पीछे नीचे आ गया. फिर मैने खामोशी से खाना खाया. पर रंभा कुछ बात नही कर रही थी. मैने पूछा नाराज़ हो क्या. वो बोली आपसे नाराज़ होकर कहा जाऊंगी. मैने कहा फिर बात क्यो नही कर रही.वो बोली कर तो रही हू ,मैने कहा देखो तुम इस बात की परेशानी ना लो. अगर तुम्हारे दिल मे हाँ हो तो हाँ कह दो और ना तो ना कह देना सिंपल सी बात है.

कोई एक घंटे बाद उसने अपना सारा काम समेट दिया और बोली मैं जाती हू शाम को आऊंगी. मैने कहा मोसम वैसे ही खराब है तो तुम कल ही आना. वो बोली पर खाना. मैने कहा जो बचा है वो ही खा लूँगा तुम उसकी चिंता ना करो और कल मैं तुम्हारा इंतज़ार करूँगा और तुम्हारे जवाब का भी. मैने गेंद उसके पाले मे डाल दी थी.

रंभा बोली पर मैं आजाऊंगी ना गरम खाना बनाने को. मैने कहा कोई बात नही और वैसे भी शाम को मुझे कही जाना है इस लिए बोला. फिर वो चली गयी और मैं रह गया वही पर अपने अकेले पन के साथ. शाम होते होते बरसात भी थम चली थी. मैने सोचा कि थोडा

घूम भी आऊंगा और किसन से पूछ आता हू कि वो आ क्यो नही रहा. मैं पैदल ही चल पड़ा उसके घर की ओर.

पैदल था और फिर कच्चा रास्ता भी बारिश से खराब हो गया था. तो जब मैं किसन के घर पहुचा तो अंधेरा हो गया था. मैने किवाड़ खड़काया तो सुभद्रा ने किवाड़ खोला और मुझे देख कर एक शरारती मुस्कान बिखेरते हुवे बोली, अरे हुकुम आप यहाँ इस वक़्त. मैने कहा हाँ वो मैं इस तरफ कुछ काम से आया था. और पिछले कुछ दिनो से किसन भी हवेली पर नही आ रहा तो बस पूछने आ गया.

और फिर मैं अंदर घुस गया. मैने कहा किसन कहाँ है वो बोली कि जी वो तो अपनी बहन के ससुराल गया है कुछ काम से और थोड़े दिन मे आएगा. आप हम को माफ़ करदो आप को सूचना बिना दिए ही चला गया. मैने कहा कोई बात नही पर वो नही है तो थोड़ी दिक्कत हो रही है. वो बोली हुकुम कल से उसकी जगह मैं आ जाऊंगी. मैने कहा कल से क्यो तुम अभी चलो मेरे साथ हवेली.

वो बोली पर मैं इस टाइम कैसे चल सकती हू. मैने कहा क्यो नही आ सकती और फिर जो काम खेत मे अधूरा रह गया था. वो भी तो पूरा करना है. ये कहते ही मैने उसको अपने आगोश मे भर लिया और उसकी छातियो को दबाने लगा. वो बोली आ ऐसा ना कीजिए. मैने कहा चल ना हवेली आज मज़े करेंगे. मैं बोला तू मुझे खुश कर मैं तुझे खुश रखूँगा.

वो बोली पर मैं कैसे आउ.मैने कहा मैं अभी जाता हू तू थोड़ी देर बाद आ जाना.कुछ सोच कर उसने कहा जी ठीक है.आप चलिए मैं आती हू. मैं वापिस हवेली आ गया फटा फट से अपना डिन्नर निपटाया और सुभद्रा का इंतज़ार करने लगा कि तभी कौशल्या का फोन आया. मैने कहा रात को फोन किया क्या बात है. वो बोली कुछ नही बस ऐसे ही कर लिया.

वो बोली खाना खाया तुमने मैने कहा हाँ बस अभी बर्तन रखे है.वो बोली कल मैं मुनीम जी को लेकर डॉक्टर के यहाँ जा रही हू तो आते आते देर हो जाएगी. मैने रूपा से कह दिया है कि वो स्कूल से आते ही हवेली चली जाए.तो थोड़ा देख लेना. मैने कहा ठीक है और जो भी बात हो मुझे फोन करके बताना फिर कुछ और बातों के बाद फोन कट हो गया और मैं सुभद्रा की राह देखने लगा.

कोई घंटे भर बाद आख़िर सुभद्रा आ ही गयी. मैने कहा बड़ी देर लगाई आते आते वो बोली क्या करूँ हुकुम बस देर हो ही गयी.मुझसे अब रुका नही जा रहा था. मैने सुभद्रा की बाँह पकड़ी और उसे लाकर बेड पर पटक दिया और उस पर चढ़ गया.वो बोली आराम से मालिक अब मैं आपकी ही हूँ. मैने उसकी साड़ी को खोलना शुरू किया और ब्लाउज भी उतार कर फेक दिया अब वो पूरी नंगी मेरे सामने खड़ी थी.उसका था था करता हुआ भरा हुवा जिस्म मेरे बदन मे गर्मी पैदा कर रहा था.

मैने अपनी निक्कर निकाल दी. कच्छा मैं वैसे भी नही पहनता था. मेरा लिंग देखते ही सुभद्रा की आँखे चमकने लगी. मैने उसका हाथ पकड़ा और अपने लिंग पर रख दिया. सुभद्रा उस पर दबाव डालते हुवे बोली काफ़ी गरम है. मैने कहा तुझे देख कर ही हो गया है. वो हँसी मैने उसकी नितंब पर थपकी मारते हुवे कहा कितनी मस्त औरत है तू .कब से चाह रहा था कि तुझे बिना कपड़ो के देखु. आज मोका लगा है.

वो मेरे लिंग को हिलाने लगी और मैं उसकी स्तनों की घुंडीयों से खेलने लगा. वो सी सी करने लगी.क्या मस्त पहाड़ो की खड़ी चोटियो सी स्तनँ थी उसकी. जितना दबाता उतनी ही वो फूलती हुवी चली जाती. मैने कहा सुभद्रा ज़रा ज़रा झुक के तो खड़ी हो. जैसे ही वो झुकी उफ्फ क्या मस्त नज़ारा था. वो ऐसा हसीन नज़ारा कि क्या बताऊ. मैं उसके झुकने पर उसके मोटे मोटे नितंब और भी खुल गये थे और भी बड़े लगने लगे थे. उसकी जाँघो के बीच दबी हुवी उसके फूली हुवी काली काली योनि. मेरा लिंग किसी गुस्से वाले नाग की तरह झटके खाने लगा. वो नज़ारा देख कर अब रुकना बड़ा ही मुश्किल था. मैं उसके पीछे गया और अपने लिंग को उसकी योनि पर सटा दिया. सुभद्रा के मूह से एक आह सी निकली. मैने उसकी कमर को थामा और धक्का लगाते हुवे लिंग को आगे की ओर ठेल दिया.

उसकी योनि की मुलायम फांको को चीरता हुवा लिंग योनि मे घुसने लगा.सुभद्रा थोडा सा आगे को हो गयी. मैने उसकी कमर से पकड़कर फिर से उसको अपनी ओर खीच लिया और स्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्रर करता हुवा मेरा लिंग उसकी योनि मे आगे को

सरकता गया. वो एक आह भरते हुवे बोली कि क्या मार ही डालोगे कई दिनो बाद लिंग ले रही हू थोड़ा आराम से मालिक.

मैं खुद मस्ती मे डूब गया था. मैने एक सिसकी लेते हुवे कहा कि बस हो ही गया और जो कुछ हिस्सा बचा था वो भी अंदर कर दिया.सुभद्रा थोड़ा सा आगे को और झुक गयी और अपनी नितंब को और फैला दिया. अब वो तो ठुकाई की पूरी खिलाड़ी थी और हम ठहरे नोसखिए बस कौशल्या को ही रगड़ पाए थे.मैने लिंग को किनारे तक खीचा और फिर से झटके से अंदर घुसा दिया.

तो सुभद्रा आह भरते हुवे बोली मालिक आहिस्ता से इतना ज़ुल्म ना करो. पर मुझे मज़ा आने लगा था. आगे हाथ बढ़ा कर मैने उसकी ढाई ढाई किलो की स्तनों को पकड़ लिया और उसको ठोकने लगा. सच कहा था किसी ने कि जो मज़ा औरतो की ठुकाई मे है को कमसिन कलियों मे कहाँ. लिंग अब अच्छे से उसकी योनि मे फिट हो गया था. मैने उसको झुकाए झुकाए ही ठुकाई शुरू कर दी. अब बस कमरे मे सुभद्रा की सिसकारियो की ही आवाज़ आ रही थी

कितने मुलायम नितंब थे उसके. जब जब मेरे अंडकोष उनसे टकराते तो बड़ी ही मधुर ध्वनी उत्पन्न होती थी. जिसको केवल ठुकाई का मारा ही समझ सकता था. थोड़ी देर बाद मैने उसको सोफे पर पटका और उसकी टाँगो को उठा कर अपने कंधे पर रख लिया और फिर से धक्कम पेल शुरू हो गयी. उसकी योनि के चिकने पानी से भीगा हुआ लिंग तेज़ी से अंदर बाहर हो रहा था. और सुभद्रा भी अपनी नितंब को पटाकने लगी थी.

ठुकाई का खुमार जोरो पर था. पर मैं ज़्यादा देर तक उसकी वजनी टाँगो को थाम ना पाया तो उसके उपर आ गया और उसके रसीले होंठो को चूस्ते चूस्ते सुभद्रा को ठोकने लगा. उसकी योनि इतनी ज़्यादा टाइट तो नही थी पर ठीक ही थी अपना काम निकाल रही थी.

मेरे हर धक्के पर उसकी मोटी मोटी स्तन किसी शराबी की तरह झूम रही थी. सुभद्रा भी अब मेरा पूरा साथ दे रही थी.

वो आह अया आआआआआआआआआआआआआआआआआआआआआआआआआ आआआआआआ

आआआुउउइईईईईईईईईईईईईईई

ईई

ईईई करते हुए मेरे लिंग को अपनी योनि मे ले रही थी. वो बोली मालिक आप बहुत ही अच्छा ठोकते है मुउउउउउउउउउउउज्ज्ज्ज्ज्ज्ज्ज्ज्ज्ज्ज्जीईईईई तूऊऊऊऊऊऊ तोड़ ही डाला आपने आअहह आअहह

फिर उसने अपनी टाँगे मेरी कमर पे लपेट दी और अपनी नितंब को उचका उचका कर ठुकाई का मज़ा लेने लगी. योनि से रिस्ता पानी उसके कुल्हो तक आ गया था. साथ ही मेरी गोलियो को भी गीला कर चुका था. सुभद्रा की साँसे अब बेहद भारी हो गयी थी. उसकी आँखे मस्ती से बार बार बंद हो रही थी और उपर से मैं दे दना दन तूफ़ानी धक्के लगाते हुए उसकी योनि ठोके जा रहा था. कसम से बड़ा ही मज़ा आ रहा था.

और फिर सुभद्रा किसी छोटे बच्चे की तरह मुझसे चिपक गयी और एक तेज आवाज़ करते हुए ढीली पड़ गयी और योनि से पानी का फव्वारा बह चला. बड़ा ही अच्छा सा एहसास था. वो अब निढाल पड़ गयी थी पर मैं अभी भी लगा हुआ था. तो थोड़ी देर बाद मैं भी अपनी सीमा पर आ गया मैने लिंग को योनि से भर निकाला और उसके चेहरे पर अपने वीर्य की पिचकारियाँ छोड़ने लगा.

एक के बाद एक कई पिचकारियो से उसका चेहरा लिसलिसे सफेद गाढ़े रस से नहा गया. वो मेरे वीर्य को अपने हाथोसे पोंछते हुवे बोली चाइयीयियीयियी च्ीईईईईईईईईईई क्या किया मालिक ऐसा भी कोई करता है क्या और अपना मूह धोने को बाहर चली गयी और मैं वही पर बैठ गया और अपनी उखड़ी सांसो को जोड़ने लगा. कुछ देर बाद मैं भी बाहर आ गया और पेशाब करने लगा.

फिर मैं अहाते पर पड़े तख्त पर ही लेट गया सुभद्रा भी आ गयी.मैने कहा यार अच्छा मज़ा करवाया तूने और तेरी नितंब तो बड़ी ही प्यारी है. जी कर रहा है यहाँ भी अपना लिंग घुसा दूं वो बोली ना मालिक आपके मूसल को वहाँ नही ले पाउंगी मैं.मेरी जान लेनी है तो वैसे ही बता दो. मैने कहा आज तो नही पर फिर कभी तो ले ही लूँगा. मैने कहा लिंग चुसेगी.वो इठलाई और उपर चढ़ि और अपने चेहरे को मेरी टाँगो पर झुका दिया और अपने होंठो से लिंग की पप्पी ले ली. मज़ा ही आ गया फिर उसने अपनी कातिल नज़रो से मेरी ओर देखा और आँख मारते हुवे लिंग के सुपाडे को अपने मुँह मे भर लिया. उसकी जीभ के स्पर्श से ही लिंग मे सुरसुराहट होनी शुरू हो गयी और वो उत्तेजित अवस्था मे आने लगा.

मैं अपने हाथोसे उसके नितंबों को सहलाने लगा था. और बीच बीच मे योनि को भी दबाने लगा था. योनि भी गीली होने लगी थी और मेरा लिंग भी अब पूर्ण रूप से खड़ा हो गया था. पर वो चूसे ही जा रही थी फिर मैने उसको अपने उपर से हटाया और उसको टेडी करके लेटा दिया इस पोज़िशन मे उसकी नितंब मेरी तरफ हो गयी थी. मैने उसकी एक टाँग को थोड़ा सा ऊपर किया और अपने लिंग के गरम सुपाडे को रसीली योनि पर टिका दिया और एक धक्का लगा दिया सुपाडा योनि मे घुस गया.

तभी मैने उसके स्तनों को पकड़ लिया और उनको दबाते हुवे लिंग को अंदर घुसाने लगा. सुभद्रा आह भरते हुवे बोली मालिक पूरे खिला दी हो और अपनी नितंब को थोड़ा सा पीछे कर दिया. अब मैं धीरे धीरे अपनी कमर को हिलाते हुवे उसकी योनि मारने लगा. क्या गरम

योनि थी उसकी एक बार जो लिंग घुसा फिर बस मज़ा ही मज़ा. सुभद्रा बोली मालिक ऐसे ही फाड़ दो मेरी योनि को ऐसे ही करो बड़ा अच्छा लग रहा है.

सुभद्रा की मस्त बाते सुनकर मुझे भी जोश चढ़ने लगा और मैं कस कस के उसको ठोकने लगा.काफ़ी देर तक मैं उसको उसी पोज़िशन मे रगड़ता रहा.फिर सुभद्रा ने मुझे अपने उपर ले लिया और पूरा मज़ा करवाती अपनी योनि मुझे देने लगी. आधे पोने घंटे तक अच्छे से बजाया उसको. मैने कहा मेरा होने ही वाला है वो बोली मैं भी बस गयी हीईईईई आप अंदर ही छोड़ना और फिर कुछ देर बात मेरा अंग अंग एक अलग से अहसास मे डूब गया और हम दोनो साथ साथ ही झड़ने लगे.

रात काफ़ी हो गयी थी फिर पता नही कब मेरी आँख लग गयी.

११

सुबह जब मैं उठा तो देखा कि दस बज रहे थे. मैने एक जमहाई ली और कच्छे मे ही बाथरूम की ओर चल पड़ा. फ्रेश होकर बस चाइ ही पी रहा था कि पुजारी जी आ गये. कुछ बातें उनके साथ हुई तो पता चला कि मंदिर सोमवार तक इस कंडीशन मे हो जाएगा कि पूजा की जा सके मैने कहा जी जैसा आप ठीक समझे.

मैने कहा मैं शाम तक आता हू उधर. थोड़ी देर और बाते करने के बाद वो चले गये. रंभा ने पूछा कि खाना लगा दूं. मैने कहा नही अभी भूख नही है. मैने कहा सुभद्रा कहाँ है तो पता चला कि वो झाड़ू-पोछा लगा कर अपने घर चली गयी थी. मैने रंभा से कहा कि आज तुम यही पर रहना मुझे कुछ काम से बाहर जाना है. पीछे से रूपा आएगी तो उसके खाने पीने का इंतज़ाम कर देना और उसके साथ ही रहना जब तक मैं नही आता.

असल मे मैने उसको बताया नही था कि मेरा क्या प्लान है. आज मैं अपनी उस ज़मीन को देखने जा रहा था. जिसे संग्रामगढ़ वालो ने दबाया हुआ था. मैने कार निकाली और चल पड़ा उस ओर. करीब आधे घंटे बाद मैं वहाँ पर पहुच ही गया. गाड़ी पार्क की और पैदल ही बढ़ चला उस ओर. तो थोड़ा सा आगे जाने पर मैने देखा कि एक बहुत बड़े भू-भाग पर फार्महाउस टाइप कुछ बनाया गया था.

कुछ ज़मीन खेती के लिए थी. पर ज़्यादातर खाली ही पड़ी थी .एक बड़ा सा दरवाजा बनाया गया था अंदर जाने के लिए परंतु वो बंद नही था. मैने इधर-उधर देखा और अंदर प्रवेश कर गया. अंदर एक साइड मे कुछ पेड़ लगे हुवे थे. मैं उधर ही घूमने लगा तभी कुछ ५-६ आदमी मेरे पास आए और बोले के तू यहाँ पर क्या कर रहा है. मैने कहा जी भाई मैं एक मुसाफिर हू. ऐसे ही इधर आ निकला.

तभी उनमे से एक आदमी जो काफ़ी हॅटा-कट्टा सा था. मुझे घूरते हुवे बोला कि चल जा अभी इधर से और दुबारा इधर ना आना.क्या तुझे पता नही कि ये ज़मीन ठाकुर प्रजापति सिंग की मिल्कियत है .ठाकुर प्रजापति सिंग ये नाम मैने पहली बार ही सुना था. मैने उनसे कहा कि पर भाई लोगो मैने तो सुना था कि ये ज़मीन विश्रामगढ़ के ठाकुर अर्जुनसिंग की है.

ये सुनकर वो चारो काफ़ी देर तक हंसते रहे और फिर वो ही बोला कि तुझे भाई किसने कह दिया. विश्रामगढ़ के ठाकूरो का खानदान तो बरसो पहले ख़तम कर दिया हमारे ठाकुर साहब ने. पर तू अभी इधर से निकल जा छोटे साहब का इधर आने का टाइम हो गया है और उनका स्वभाव बड़ा ही गुस्से वाला है और ख़ासतोर से वो अजनबियों को पसंद नही करते है. तू जा खामखाँ मारा जाएगा.

मैने कहा आने दो तुम्हारे साहब को. अब मैं जब खुद चल कर यहाँ आया हू तो उनसे भी ज़रा मिलता ही चलूं. वो बोले भाई तू है कौन.मैने कहा अरे तुम इसकी फिकर ना करो कि मैं कौन हूँ. वो कुछ सोच मे पड़ गये और वो लोग बोले कि बस तेरी भलाई इसी मे है कि तू यहाँ से चला जा .अगर उन्होने तुझे यहा देख लिया तो तेरे साथ साथ हमारी शामत भी आ जाएगी.

अब तू जा भी या हम धक्के दे कर तुझे यहाँ से बाहर फेक दे. मैने कहा गुस्सा ना कर भाई ,मैं जा ही रहा हू. वैसे भी मैं पंगा नही करना चाहता था. क्योंकि अभी मैं उस हालत मे नही था. मैं आकर अपनी कार के पास खड़ा हो गया और कुछ सोचने लगा. मेरे दिमाग़ मे कुछ सवाल घूमड़ आए थे. जिनका जवाब मुझे बस फूलचंद जी ही दे सकते थे. तो उनका इंतज़ार ही करना था.

शाम होते होते मैं वापिस हवेली आ गया तो देखा कि रंभा मेरा ही इंतज़ार कर रही थी. मैने पूछा रूपा कहाँ है.वो बोली कि वो तो खाना खाते ही सो गयी है .मैने कहा ठीक है और मैं अपने कमरे मे जाने लगा तो रंभा बोली मालिक आप कहे मैं थोड़ी देर बाग मे हो आउ , उनसे भी मिल आऊंगी थोड़ी देर और मुझे आम खाने का भी बड़ा मन हो रहा है

मैने कहा एक काम करो रूपा को उठा दो फिर सब लोग साथ ही चलते है.मैं भी उधर का चक्कर लगा आऊंगा. मैने तब तक अपने कपड़े चेंज कर लिए थे. फिर कोई आधे घंटे बाद हम लोग निकल पड़े बाग की तरफ. वहाँ पहुचते ही परशुराम ने हमारा स्वागत किया था. मैने देखा कि तार बंदी लगभग हो ही गयी थी और एक नया कमरा भी आधा बन ही गया था.

रंभा को देख कर परशुराम खुश हो गया था. मैने उन दोनो को वहाँ पर छोड़ा और रूपा और मैं आगे की तरफ बढ़ चले. उसका नाज़ुक हाथ मैने अपने हाथ मे थमा हुवा था. बात

करते करते हम दोनो काफ़ी दूर निकल आए थे. बाग के लास्ट वाले हिस्से मे काफ़ी घने पेड़ थे तो थोड़ी ठंड सी भी थी और अंधेरा सा भी था. तभी मुझे वो वाला पेड़ दिखाई दिया जहाँ मैने कौशल्या को ठोका था. तो मेरे चेहरे पे मुस्कान सी आ गयी.

रूपा पूछने लगी क्या हुआ बिना बात के ही मुस्कुरा रहे हो. मैने कहा कि बस ऐसे ही. अब उसको क्या बता ता कि इधर ही उसकी माँ ठुकि थी मुझसे. फिर हम थोड़ा और आगे चले तो बाग ख़तम ही हो गया और अब हम नदी किनारे पर आ गये थे.बस ठंडी हवा चल रही थी तो एक जगह देख कर मैं और रूपा बैठ गये .मैने कहा रूपा क्या बात है तू तो पहले से और भी सुंदर हो गयी है.

वो बोली कहाँ तुम तो ऐसे ही कह रहे हो. मैने कहा अरे नही सच्ची बोल रहा हूँ. तो अपनी तारीफ सुनकर वो थोड़ा सा शरमा गयी. उसके गाल सुर्ख हो गये. मैं थोड़ा सा उसकी ओर और सरक गया.रूपा बोली आज कहाँ गये थे तुम मैने उसे सबकुछ बताया. वो बोली तुम्हारे पास पहले से ही सबकुछ है और फिर ना जाने कितनी ज़मीन तुम्हारी लोगो ने दबा ली है. अब पहले जैसा वक़्त कहाँ रहा है और फिर तुम अकेले क्या क्या करोगे. तो मेरी मानो तो जाने दो उस टुकड़े को.

मैने कहा रूपा परंतु वो बस ज़मीन का टुकड़ा ही नही है.मेरे पुरखो की विरासत है.मैं उसको कैसे किसी और को दे दूं. रूपा बोली मैने किताब मे पढ़ा है कि दुनिया मे जितनी भी लड़ाइयाँ हुई है वो या तो ज़मीन पर हुवी है या फिर औरत के लिए. तुम इन पचड़ो मे ना पडो और आगे अपनी ज़िंदगी का सोचो. मैने उसकी बात का कोई जवाब नही दिया.मैने कहा जाने दे ना अब इन बातों को अपनी बाते करते है.

बाते करते करते समय का कुछ पता ही नही चला हल्का हल्का सा अंधेरा हो चला था. मैने कहा आजा चल वापिस चलते है. जब वो खड़ी हो रही थी तो उसका पाँव थोड़ा सा लड़खडाया और वो गिरने से बचने के लिए मेरी बाहों मे समाती चली गयी.रूपा की नुकीली छातियाँ मेरे सीने मे दबाव देने लगी तो मुझ पर उसके बेपनाह खूबसूरत हुस्न का नशा सा चढ़ने लगा.

रूपा के बदन से फुटती कशिश मुझे उसकी ओर खीचने लगी और फिर मैने आख़िर उसके रसीले लाल लाल होटो को अपने होटो से जोड़ ही लिया. रूपा ने अपने निचले होठ को

थोड़ा सा खोल दिया.जिसे मैने अपने मूह मे दबा लिया और उसकी मिठास का अनुभव करने लगा. उसने अपनी पकड़ मेरी पीठ पर और भी तेज कर दी बस फिर हमें कुछ याद ना रहा. याद रहा तो उसके खुशबुदार सांसो की महक जो मेरे मूह मे घुलने लगी थी. काफ़ी देर मैं उसको चूमता ही रहा फिर कही जाकर हम अलग हुवे.

रूपा ने अपनी नज़रे चुराते हुवे कहा चलो देर हो रही है.वापिस चलते है. मैने कहा जैसी तुम्हारी मर्ज़ी फिर आते आते काफ़ी देर हो गयी.जब हम उन लोगो के पास पहुचे तो रंभा और परशुराम हमारा ही इंतज़ार कर रहे थे. परशुराम बोला मालिक किधर रह गये थे आप इस तरफ कुछ जानवरो का भी ख़तरा रहता है और अंधेरा भी हो गया है.आप ऐसे अकेले ना निकला करें.मैने कहा आगे से ध्यान रखूँगा फिर थोड़ी देर और बाते हुई परशुराम को कुछ पैसे दिए ताकि वो बचा हुआ काम भी जल्द से जल्द पूरा करवा सकें.

मैने रंभा से कहा कि तुम यही रुकोगी या चलोगि. वो बोली क्या मालिक आप भी घर तो जाना ही पड़ेगा ना. फिर मैने कार स्टार्ट की और हम हवेली आ गये. मैने रूपा से कहा कि तुम अंदर जाओ और खाने की तैयारी करो. आज मैं तुम्हारे हाथ का खाना खाना चाहूँगा. तुम जाओ मैं रंभा को घर छोड़ कर आता हू और फिर हम गाँव की ओर चल पड़े.

मैने हवेली के गेट पर गाड़ी रोकी और रूपा को कहा कि तुम अंदर चलो. मैं रंभा को उसके घर छोड़ कर आता हूँ तब तक तुम खाने की व्यवस्था देख लो. तो रंभा बोली मालिक मैं हूँ ना मैं बना दूँगी खाना . पर मैने मना करते हुए कहा कि नही आज मैं रूपा के हाथो से बना हुआ खाना ही खाऊंगा . फिर रूपा हवेली मे चली गयी और मैने कार गाँव की ओर बढ़ा दी. बस्ती आने से थोड़ी देर पहले ही रंभा ने कहा कि मालिक गाड़ी यही पर रोक दीजिए.

मैने कहा पर घर तो अभी दूर है.वो कहने लगी कि अगर कोई देखेगा कि आप मुझे गाड़ी मे छोड़ने आए है फिर कई बाते चलेंगी. मैं हूँ औरत जात आप समझ ही सकते है. मैने गाड़ी वही पर रोक दी वो बाहर उतर गयी. मैं भी उसके पीछे पीछे उतर गया वो जाने लगी मैने कहा ज़रा रूको, तुमने मेरे सवाल का जवाब नही दिया अभी तक.

तो उसने एक बड़ी ही गहरी जालिम नज़र से मेरी ओर देखा और फिर पलट कर तेज तेज कदमोसे बस्ती की ओर बढ़ गयी और मैं रह गया वही पर. कुछ देर उसको जाते देखता रहा

फिर मैं भी वापिस हवेली की तरफ बढ़ गया. गाड़ी पार्क की और सीधा रसोई की तरफ हो लिया.पर रूपा वहाँ पर नही थी.

मैने उसको फिर कमरे मे देखा पर वो वहाँ पर भी नही थी, तो मेरे दिल थोड़ा घबरा सा गया. मैं उसको पुकारते हुए इधर उधर देखने लगा कि देखा वो बाथरूम की तरफ से चली आ रही थी. गीले रेशमी बाल जिन्होने उसके सूट को भी आधे से ज़्यादा भिगो दिया था. माथे से टपकती शबनमी बूंदे उसके चंद्रमा से चेहरे की रोनक को और भी बढ़ा रही थी.

वो बोली क्यो चिल्ला रहे हो तुम, नहाने ही तो गयी थी. मैने कहा वो तुम मुझे दिखी नही मैं थोड़ा सा घबरा गया था. वो मुस्कुराते हुवे बोली इतनी फिकर क्यो करते हो आख़िर हम आपके है ही कौन? मैने कहा ये तो पता नही कि तुम मेरी कौन हो. पर मेरी कुछ तो हो ही और मैं भी मुस्कुरा दिया. मैने कहा आगे से ज़रा बता कर जाया करो. मुझे फिकर है तुम्हारी.

अपने गीले रेशमी बालो को तोलिये से झटकते हुवे बड़े ही प्यार से उसने मेरी ओर देखा और बोली कि तुम बस थोड़ा सा इंतज़ार करो मैं अभी फटा फट से खाना बना देती हू और रसोई की ओर जाने लगी. मैं भी उसके पीछे-पीछे रसोई मे चला गया और उस से बाते करने लगा. ना जाने रूपा मे कैसी कशिश थी जो मुझे बरबस ही उसकी ओर जाने को मजबूर करती रहती थी.

पता ही नही चला कि कब उसके ख़यालो मे में डूब सा गया तभी उसने मेरी तंद्रा तोड़ी और बोली कहाँ खो गये. मैने कहा कुछ नही इधर ही हूँ. दिल तो कर रहा था कि बस उसको हमेशा ऐसे ही देखता रहूं एकटक पर फिर मैं रसोई से बाहर आ गया. रूपा जब जब मेरे पास होती थी मुझे पता नही एक अलग सा ही एहसास सा होने लगता था. मैं जैसे कहीं खो सा जाता था.

फिर हमने साथ साथ ही डिन्नर किया. वो बोली मैं कहाँ सोउंगी, मैने कहा इतना बड़ा घर है जहा मर्ज़ी हो उधर सो जाओ. वो बोली इतने बड़े घर मे बस दो ही तो कमरे खुले है और बेड तो तुम्हारे ही कमरे मे है .मैने कहा तो मेरे साथ उधर ही सो जाओ , वो बोली ना बाबा ना तुम्हारा क्या भरोसा फिर से मुझे शरारत करने लगोगे. मैने कहा फिर क्या हुवा………

वो बोली बाते ना बनाओ , मुझे बहुत नींद आ रही है और फिर सुबह स्कूल भी जाना है. मैने कहा तू बेड पर ही सो जा. मैं बाहर सो जाता हू.

वो तो पड़ते ही सो गयी थी. पर मेरी आँखो मे नींद नही थी आज पता नही क्यो मेरा मन भटक रहा था. जैसे की वो मुझे कोई संकेत देना चाहता हो, कहना चाहता हो कुछ रात आधे से ज़्यादा बीत चुकी थी.

चंदा की चाँदनी चारो ओर बिखरी हुई थी. हवा हल्की हल्की सी चल रही थी और एक मैं था अपने अशांत मन के साथ, जब रहा नही गया मैं उस कमरे मे चला गया जहाँ मेरे माँ-पिता की तस्वीरे थी.एक ख़ालीपन सा था मेरे अंदर. कितनीही बाते थी जो मैं उनके साथ करना चाहता था. पर मेरी सुन ने के लिए वो नही थे वहाँ पर मेरा गला भर आया.

आख़िर मेरे पास भी तो एक दिल था. , इमोशंस थे पता ही नही चला कब मेरी सूनी आँखो से आँसू निकल कर बहने लगे. माँ की तस्वीर मैने दीवार से उतारी और उसको अपनी बाहों मे लेकर मैं रोने लगा. टपकते आँसू तस्वीर की धूल को भिगोने लगे. फिर जब रहा नही गया मैं वहाँ से बाहर आ गया और कुर्सी पर बैठ गया.

तभी मुझे ऐसे लगा कि जैसे हवेली मे कुछ हलचल हुई हो. पर वहाँ तो बस मैं और रूपा ही थे. फिर ये कैसी आवाज़ थी. मैं उस ओर चला, मैने देखा कि कुँए की तरफ से जो दीवार टूटी हुई है उधर तीन लोग थे और अंदर की तरफ ही आ रहे थे. मैने सोचा कि कौन होंगे चोर ,या फिर कोई दुश्मन.

तभी मुझे रूपा का ख़याल आया और मैं अंदर की ओर भागा और जो बंदूक मुझे फूलचंद जी ने दी थी उसको उठाया और बाहर आया. वो लोग भी अब अंदर आ चुके थे बस कुछ ही दूरी थी. वैसे मैं घबरा तो गया था. पर फिर भी हिम्मत करते हुए मैने थोड़ा दिलेरी दिखाते हुवे कहा कि कौन हो तुम लोग और इतनी हिम्मत की ठाकुर अर्जुनसिंग की हवेली मे घुस गये.

वो लोग थोड़ा सा सकपका गये, तभी ना जाने कैसे मेरे हाथोसे उसी टाइम गोली चल गयी हालाँकि इस से पहले मैने ऐसा कभी नही किया था. पता नही कैसे शायद घबराहट के मारे पर वो गोली उनमे से एक को लग गयी और वो वही पर गिर पड़ा और उसके वो दोनो साथी तुरंत ही रफूचक्कर हो लिए .गोली की आवाज़ चली तो दूर तक गयी रूपा भी दौड़ते हुए बाहर आई और अपनी सांसो को संभालते हुवे बोली

आकाश………………………………………………………………………
……………………………………………………………………………
…………….

आकाश, आकाश तुम ठीक तो होना. ये क्या हुआ कौन है ये आदमी बताओ. मैने कहा शांत हो जाओ. मैं ठीक हू तीन लोग थे. पर ये यहाँ पर क्यो ? मैने उस आदमी के चेहरे से नकाब हटाया ,पर अब मुझे क्या पता वो कौन था. रूपा बुरी तरह से घबरा गयी थी और मुझसे बिल्कुल चिपक कर खड़ी थी. पसीना उसके माथे से बह चला था. तभी हवेली के गेट पर किसी की दस्तक हुवी.मैं उस ओर गया एक आदमी था. हाथ मे लालटेन लिए हुए.

मैने कहा तुम कौन हो.वो बोला साहब इधर पास मे ही मेरा खेत है. मैं उधर ही सोया हुआ था तो गोली की आवाज़ सुनी तो इधर आ गया. मैने कहा अंदर आओ और गेट खोला. मैने कहा कुछ लोग थे पता नही कौन थे कोई दुश्मन या चोर थे एक को धर लिया.तुम देखो ज़रा कि पहचान हो पाएगी या नही और उसको उसे दिखाया.पर वो भी पहचान नही पाया.

फूलचंद जी हॉस्पिटल मे थे और गाँव मे मेरा कोई ऐसा था. नही जिसपर मैं भरोसा कर सकूँ बड़ी मुश्किल हो गयी थी. मेरे लिए मैने रूपा के घर पर फोन किया और उसके नोकर से कहा कि अभी इसी वक़्त कुछ आदमियो को लेकर हवेली आ जाओ. सच तो था कि मैं बेहद घबरा गया था. अगर मानलो कुछ ज़्यादा लोग हमला कर देते तो कुछ भी हो सकता था.

आधे घंटे भर बाद फूलचंद जी के घर से कुछ लोग हवेली पर आ गये थे. मैने कहा आप सभी को यहाँ की सुरक्षा करनी है. बाकी सब काम बाद मे. तभी रूपा बोली पुलिस बुला लो. मैने माथे पर हाथ मारा कि ये ख़याल मेरे दिमाग़ मे क्यो नही आया.

सुबह होते होते ५-६ जीप मे पुलिस वाले हवेली आ गये थानेदार खुद आया था. मैने उसको पूरी बात बताई. उसने मुझे पूरी सुरक्षा का वादा किया. पर सवाल ये था कि कौन थे वो लोग?????????????????????????

१२

काफ़ी तहकीकात की गई पर पता नही चला कि आख़िर वो लोग कौन थे.मुझे खुद की इतनी फिकर नही थी जितनी कि उन लोगो की थी जो हवेली मे काम करने आते थे.इधर महादेव मंदिर की पूजा वाला दिन भी नज़दीक आ रहा था. मैने तय किया कि मंदिर का काम निपट जाए फिर हवेली की टूटी दीवार की भी मरम्मत करवा लूँगा. पर फिर भी कुछ आदमी तो चाहिए ही थे हवेली की चोकीदारी के लिए.

आख़िर मैने कौशल्या को फोन लगाया और कहा कि वो कब तक आएगी. तो पता चला कि उन्हे आने मे कुछ दिन और लग जाएँगे.मैं और परेशान हो गया. अब करूँ तो क्या करूँ कुछ समझ ना आया. फिर दिल को ये कहकर समझा लिया कि कोई चोर होंगे.अबकी बार कुछ होगा तो देखेंगे फिर बस मंदिर के प्रोग्राम की तैयारियो मे जुट गया. ऐसे ही सोमवार आ ही गया.

मंदिर को बहुत ही अच्छे तरीके से सजाया गया था. मैने अपनी तरफ से गाँव वालो के लिए भोज का आयोजन किया था. एक कोशिश की थी गाँव वालो को अपना बनाने की. बस देखना बाकी था कि कामयाबी मिलती है या नह. तय समय पर कार्यक्रम शुरू हुआ और अच्छे से पूजा संपन्न हो गयी और फिर भोज शुरू हो गया. इन सब कामो मे शाम ही हो गयी थी मेरा पूरा दिन उधर ही लग गया था.

उधर ही प्रसाद ले लिया था. फिर इतनी भूख भी नही थी. मैं वहाँ से निकला और गाँव से बाहर की ओर चल पड़ा .जब मैं थोड़ा जंगल की ओर बढ़ा तो देखा कि एक पेड़ के नीचे कुछ लोग शराब पी रहे थे. मैं भी उनके पास चला गया और राम राम करके पता पूछने के बहाने से उधर ही बैठ गया और बाते करने लगा. तो पता चला कि वो लोग संग्रामगढ़ के थे और अक्सर नशा करने को इधर जंगल मे आते रहते थे.

अब वो लोग फुल नशे मे थे और अजीब अजीब बाते कर रहे थे. तभी उनमे से एक बोला, यार तूने सुना क्या विश्रामगढ़ की हवेली मे कल गोली चल गयी.एक आदमी मारा गया.मैने चोन्के हुए कहा नही भाई मैं तो परदेसी आदमी मुझे तो नही पता. कुछ तुम ही बताओ. वो बोला कि अरे कुछ नही यार, सुना है ठाकूरो का वारिस लौट आया है.तो पक्का हमारे गाँव के मालिकों ने ही हमला करवाया होगा. पर गाँव मे कोई चर्चा सुनी नही.

मैने कहा भाई कुछ हमें भी बताओ इस बात के बारे मे. तो एक आदमी जो खुद को स्पेशल सा समझ रहा था वो बोला, भाई हम तो मजदूर आदमी है. हम को कुछ नही पता. पर कल जब मैं अफ़ीम के खेत मे थोड़ी अफ़ीम चुराने गया था. तो वहाँ के चोकीदार आ गये मैं मार से बचने को छुप गया वो लोग कुछ बात तो कर रहे थे इसी बारे .मे एक जना कह रहा था रामू तुझे क्या लगता है कि उधर हमला अपने ठाकुर सहाब ने करवाया होगा.

तो दूसरा बोला नही रे ऐसा नही है ठाकुर साहब तो विलायत गये है और छोटे मालिक भी नही है. तो कौन ऐसा करेगा. तो दूसरा बोला कि हाँ भाई बात तो सही है. फिर भाई मैं उधर से खिसक लिया बस हमे तो इतना ही पता है. फिर थोड़ी देर बाद मैं भी वहाँ से उठ कर चल दिया पर अब मेरा दिमाग़ खराब और भी हो गया था क्योंकि जो मैं सोच रहा था. वैसा तो कुछ नही था फिर आख़िर कौन थे वो लोग.

मैं जब हवेली पहुचा तो बाबा और तीन-चार और लोग गेट के बाहर खड़े थे. मैने कहा अरे आप सब लोग यहाँ सब ठीक तो है ना. वो बोले ठाकुर साहब हम लोग रात को इधर ही रहेंगे और चोकीदारी करेंगे.मैने कहा अरे आप सब लोग क्यो कष्ट करते है. वो बोले जब आप गाँव वालो की मदद कर सकते है, तो हमारा भी कुछ फ़र्ज़ तो बनता ही है ना.

फिर मैं अंदर गया तो देखा कि रूपा भी थी. मैने कहा माफ़ करना रूपा तुम्हारे बारे मे तो मुझे ध्यान ही नही रहा था. आने मे थोड़ी देर हो गयी. पर तुम यहाँ क्यो चली आई. वो बोली

मुझे तो आना ही था ना, वो बोली खाना खा लो.मैने कहा भूख नही है और सर भी बड़ा दुख रहा है तो बस सो ही जाता हू और अपने कमरे मे चला गया और सोने की कोशिश करने लगा .फिर थोड़ी देर मे रूपा भी एक कटोरी मे थोड़ा सा तेल लेकर आ गयी और बोली लाओ मैं सर की मालिश कर देती हू तो थोड़ा आराम मिलेगा.

सचमुच उसके हाथो मे जादू ही था. पल भर मे ही मेरा दर्द गायब हो गया. पता ही नही चला कि कब नींद आ गयी. जब मैं उठा तो देखा कि रूपा मेरी बगल मे ही सोई पड़ी है. मैने उसे नही जगाया और बाहर आ गया बाहर बाबा और बाकी सब लोगो से राम राम हुई. मैं फ्रेश होने चला गया आया तबतक रंभा भी आ चुकी थी. मैने कहा सबसे पहले बाहर जितने भी लोग है उनके लिए चाइ-नाश्ते का इंतज़ाम करो.

रूपा अभी तक उठी नही थी. मैने सोचा आज स्कूल नही जाएगी क्या ये. पर फिर जगाया नही उसको रंभा ने मेरा नाश्ता टेबल पर लगा दिया था. मैने चुप चाप नाश्ता किया सुबह सुबह ही मैने कुछ सोच लिया था. मैने गाड़ी निकाली और उसको अपनी उस ज़मीन की तरफ मोड़ दिया जिस पर संग्रामगढ़ वालो का कब्जा था. मैं कुछ करने जा रहा था. पर पता नही था कि ये सही है या ग़लत.

रेतीले रास्ते पर धूल उड़ाती हुई मेरी गाड़ी सरपट दौड़ी चली जा रही थी. आधे-पोने घंटे बाद मैं उस फार्महाउस के सामने था. मैं गाड़ी से उतरा और अंदर चल दिया पर आज गेट पर ही उन्ही लोगो ने मुझे रोक दिया और बोले कि तुझे उसी दिन मना किया था ना की दुबारा इधर ना आना. मालिक को पता चलेगा तो ठीक नही रहेगा. मैने कहा पर इस ज़मीन का मालिक मैं ही हू.

वो ठहाका लगाते हुवे बोला अबे जा जा , काहे दिमाग़ खराब करता है सुबह सुबह. मैने कहा तो ठीक है जा तेरे मालिक को ही बुला ला वो खुद ही बता देगा कि मैं कौन हू. वो मुझे हड़काते हुवे बोला, अगर दो मिनिट मे तू यहाँ से नही निकला तो तेरी हड्डिया सलामत नही बचेंगी. मुझे भी तैश आने लगा था. मैने जेब से पिस्टल निकाली और उसके माथे पर लगा दी.

ऐसा होते ही उसके माथे से पसीना बह चला. मैने कहा जब भी तेरा मालिक आए उस से बस इतना ही कहना कि विश्रामगढ़ से ठाकुर आकाश आया था. फिर मैं वापिस हो लिया. मैने सोच लिया था की एक बार अपने रिश्तेदारो से मुलाकात कर ही लेनी चाहिए. मैने अपनी तरफ से शुरुआत कर दी थी.बस अब इंतज़ार था रेस्पॉन्स का .वहाँ से मैं सीधा खेतो मे गया कई दिन हो गये थे इधर आया ही नही था. तो दोपहर तक इधर का काम काज ही देखता रहा.

फिर मैं वापिस हवेली आ गया लंच किया और बाहर बैठ कर बाबा से बात चीत करने लगा. उन्होने कहा कि आकाश आप किसी भी तरह की परेशानी ना लें. अब आपको हवेली की फिकर करने की बिल्कुल भी ज़रूरत नही है इतने आदमियो की व्यवस्था हो गयी है जो ये काम संभाल सके आधे लोग दिन मे रहेंगे और आधे लोग रात को. मैने कहा बाबा सब आपकी ही मेहरबानी है.तो बस वो मुस्कुरा गये.

फिर कुछ और मुद्दो पर बात हुई , फिर मैं उठ कर अंदर चला गया तो रंभा के दीदार हुए वो बोली मालिक आपके गंदे कपड़ो का ढेर लगा था. मैने सारे धो दिए है. मैने कहा पर इसकी क्या ज़रूरत थी सुभद्रा कर लेती वो काम. वो बोली मालिक मैने धो दिए कोई बात नही मैने कहा रूपा कहाँ है.तो उसने बताया कि वो तो अपनी किसी सहेली के घर गयी है.

पीले ब्लाउज और नीले घाघरे मे रंभा का मादक बदन और भी खिला खिला सा लग रहा था. मैने कहा रंभा मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बात करनी .है वो बोली मुझे मालूम है मालिक आप क्या कहना चाहते है.मैने कहा वो नही मैं तो बस इतना पूछ रहा था कि क्या मैं तुम पर भरोसा कर सकता हू. तो रंभा हाथ जोड़ते हुए बोली कि मालिक आपकी वजह से मेरे जीवन मे थोड़ा सुख आया है.आप कहकर तो देखो जान भी दे दूँगी …

आकाश- वक़्त आने पर तुमको मेरा एक काम करना होगा

रंभा- जी जैसा आप कहे ,

मैने कहा अभी तुम जाओ और मेरे लिए एक कॉफी भेज देना. मैने कौशल्या को फोन किया और मुनीम जी की तबीयत के बारे मे पूछा. तो उसने बताया कि हालत कुछ ठीक नही है .मैने कहा ठीक है मैं कल ही शहर आता हू. पर वो मना करने लगी. पर मैने ज़ोर देते हुवे कहा कि नही मैं आता हूँ कल.

मुझे कौशल्या का व्यवहार कुछ अजीब सा लगा.पर फिर मैने सोचा कि अब हॉस्पिटल का माहौल है तो ,बंदा थोड़ा चिड़चिड़ा हो ही जाता है तभी. रंभा कॉफ़ी लेकर आ गयी. मैने कहा तुम बैठो ज़रा . मैने उस से पूछा कि तुम हवेली के बारे मे क्या जानती हो. तो उसने बताया कि जी जितना सब लोगो को पता है उतना ही मुझे पता है .पर एक बात याद आई कि पहले ठाकुर साहब के यहाँ एक बुजुर्ग रहते थे.वो ही उनके छोटे-मोटे काम किया करते थे. मैने कहा तुमको कैसे पता. रंभा बोली वो दरअसल हमारे घर के सामने जो परचून की दुकान है, वो अक्सर वहाँ आते थे. तो बस ऐसे ही पता चल गया पर जब बड़े ठाकुर का देहांत हुआ उसके बाद से मैने उनको कभी नही देखा.मैने कहा उनका कुछ नाम-पता. वो बोली साहब अब मैं क्या जानू.मैने कहा चल कोई नही मैं पता कर लूँगा. पर इस बात ने मुझे और भी उलझा दिया था.

खैर रात गुजर गयी, सुबहहुई मुझे शहर के लिए निकलना था. मैने बाबा से कहा कि बाबा हवेली की ज़िम्मेदारी आप पर है. मुझे आने मे देर हो सकती है.क्या पता मैं शहर मे ही रुक जाऊ वो बोले आकाश आप बेफिकर हो कर जाइए. मैं चल पड़ा शहर.

हॉस्पिटल गया ,मुनीम जी से मिला. कुछ सुस्त से लगे फिर डॉक्टर्स से तस्सली से बात की तो पता चला कि दवाइयाँ असर नही कर रही थी .मैने कहा पर ऐसा कैसे हो सकता है डॉक्टर साहब. वो बोले यही बात तो हमे भी उलझन मे डाले हुवे है. मैने कहा ये घर कब तक जा सकेंगे तो पता चला कि हफ्ते भर बाद. फिर मैने कौशल्या से कहा कि मुझे अकेले मे मुनीम जी से कुछ बात करनी है.

वो बाहर चली गयी, फिर मैने उनको पिछले दिनो की घटना बताई. वो बोले मालिक ये ज़रूर बाहर वालो से करवाया काम है.वरना आप ही सोचो हवेली सालो से खामोश खड़ी है. पर आज तक एक पैसे की चोरी ना हुई. फिर एक दम से चोर कैसे आ सकते है बात मे दम था. , मैने कहा कुछ लोग राज़ी हो गये है .हवेली की चोकीदारी करने को पर कुछ हथियार भी चाहिए.

तो उन्होने अपनी पुरानी डायरी निकाली जेब से और फिर किसी को फोन किया. फिर मुझसे कहा मालिक कल तक व्यवस्था हो जाएगी आप की सुरक्षा बेहद ज़रूरी है. पर तकदीर देखिए, मैं अपाहिज़ खुद मोहताज हो गया हू मैने कहा आप बस आराम करे. फिर काफ़ी देर तक मुनीम जी से मेरी ख़ास बाते होती रही पर रिज़ल्ट सेम था. उनका शक़ भी संग्रामगढ़ की ओर ही था.

शाम होने लगी थी मैं चलने को हुआ. कौशल्या ने कहा कि आज इधर ही रुक जाओ काफ़ी दिन से इधर ही पड़ी हू.तुम रहोगे तो थोड़ा होसला मिलेगा और कुछ बाते भी हो जाएँगी. मैने कहा ठीक है फिर मैने हवेली फोन किया और बताया कि मैं आज नही आ पाऊंगा तो सब चोकस रहना और रंभा को विशेष रूप से कहा कि आज वो घर ना जाए बल्कि रूपा के साथ ही रहे कुछ और बाते उसको समझाई.

फूलचंद जी सो रहे थे मैने कौशल्या से कहा आओ बाहर चलते है. कुछ खाना वाना खा कर आते है. तो हॉस्पिटल से थोड़ी दूर ही एक होटेल था. हम वहाँ चले गये खाते खाते बाते भी होने लगी. आज काफ़ी दिन बाद कौशल्या के चेहरे पर मुस्कान देखी थी तो मुझे भी अच्छा लगा. डिन्नर के बाद हम फिर से वापिस आ गये रात भी घिर आई थी .कौशल्या ने फूलचंदजी को खाना खिलाया फिर दूध के साथ कुछ दवाइयाँ दी.

फिर एक छोटा सा बातों का दॉर चला , बाते करते करते ही मुनीम जी नींद के आगोश मे समा गये अब बचे कौशल्या और मैं. मैने कहा सोएंगे कहाँ तो उसने कहा मैं तो नीचे ही बिस्तर लगा के सो जाती हू. तुम भी मेरे पास ही सोओगे क्या. उसने अपनी निचले होठ को दाँतों से काट ते हुए कहा और फिर एक नशीली मुस्कान मुझे दी. मैं समझ गया कि आज तो ये ठुक के ही रहेगी.

उसने फटा फट से बिस्तर बिछाया और लाइट बंद करके ज़ीरो पॉवेर वाला बल्ब जला दिया. मैने कहा ये भी बंद करदो वो बोली रात को कई बार नर्स राउंड पे आ जाती है. इस लिए इसको जलने दो फिर मैं और वो बिस्तर पर लेट गये. कुछ देर वो शांत रही फिर उसने मेरा हाथ पकड़ा और अपने स्तनों पर रख दिया और दबाव डालने लगी. मैं तो पहले से ही तैयार था. मैने उसकी तनी हुई स्तनों को कस कर दबाना शुरू किया.तो उसने मेरी पँट की ज़िप खोली और मेरे लिंग को बाहर निकाल लिया और मेरे आंडकोषो को अपनी मुट्ठी मे भरकर दबाने लगी तो बड़ा ही मज़ा आया मुझे. मैने उसके ब्लाउज को हुक को खोला और फिर ब्रा भी हटा दी और उसकी पुस्त स्तनों पर टूट पड़ा. इस उमर मे भी ऐसी कसी हुई स्तन उफफफ्फ़ मैं तो पागल सा ही होने लगा. मैं पूरे दम से उसके उभारों को दबा ने लगा. कौशल्या हौले हौले सिसकारिया निकालने लगी उपर मैं उसकी स्तनों से खेल रहा था. और नीचे वो मेरे लिंग पर आनी उंगलियो का जादू चला रही थी.

मैने अपने होंठो मे उसके स्तनाग्र को दबा लिया और उस पर अपनी जीभ फिराने लगा. कौशल्या के तन बदन मे बिजलिया रेंगने लगी. वो मदहोश होने लगी. उसकी स्तन उसके

सेंसिटिव पॉइंट्स थे. १०-१२ मिनिट तक मैं उसके स्तनों को ही पीता रहा.आग अब बढ़ती ही जा रही थी. फिर मैं जब उसकी साड़ी खोलने लगा तो उसने मुझे रोक दिया और अपनी साड़ी को कमर तक कर लिया और खुद ही पेंटी भी उतार दी.

मैने उसकी योनि को अपनी मुट्ठी मे भर लिया और भीचने लगा. उफ्फ क्या गरम योनि थी उसकी.तभी कौशल्या ने अपना कमाल दिखाया और मेरे उपर आते हुवे ६९ मे आ गयी और झट से मेरे लिंग को अपने मूह मे दबा लिया और मज़े से चाटने लगी और अपनी योनि को मेरे चेहरे पर दबाने लगी. मैने भी उसके मोटे मोटे कुल्हो को अपने हाथो से थाम लिया और उसकी योनि पर अपना मूह लगा दिया.

जैसे ही मेरी जीभ उसकी योनि से टकराई तो उसने अपनी जाँघो मे मेरे चेहरे को भीच लिया और मस्त हो गयी. वो भी कस कर अपनी खुरदरी जीभ मेरे लिंग पर रगड़ रही थी. मुझे लगा कि बस मैं तो गया काम से ,पर गजब तो जब हुआ जब उसने अपने मूह मे मेरे अंडकोसो को भर लिया. मैं तो जैसे पिघल ही गया .उस जादुई अहसास मे मैने भी अब उसकी योनि को चाटना शुरू कर दिया.

काम रस से भीगी हुई उसकी योनि के होठ जब जब फड़फड़ाते. तो कसम से बड़ा ही मज़ा आता था.काफ़ी देर तक हम दोनो एक दूसरे के अंगो का रस पान करते रहे. फिर उसने मेरे लिंग को अपने मूह से बाहर निकाला और फिर अपनी योनि को वहाँ पर रगड़ने लगी.उसकी रागड़ाई से मुझे बड़ा ही मज़ा आ रहा था. फिर झट से वो मेरे लिंग पे बैठ ती चली गई. कुछ ही पलो मे पूरा लिंग उसकी योनि मे घुस चुका था और वो करने लगी मेरी सवारी.

उसकी झूलती स्तन मेरे चेहरे से टकराने लगी.मैने उनको अपने मूह मे भर लिया और चूसने लगा कौशल्या और भी ज़्यादा मस्ती मे आ गयी और धप धप से मेरे लिंग पर कूदने लगी और मैं उसकी मोटी नितंब को मसलने लगा. बड़ा ही मज़ा आ रहा था. फिर थोड़ी देर बाद वो उतर कर लेट गयी और मैं उसके उपर आ गया तो उसने खुद ही अपनी टाँगे उठा कर मेरे कंधे पर रख दी और मैने एक बार फिर से योनि और लिंग का मिलन करवा दिया.

अब शुरू हुवा धमाल , मैं कस कस के उसकी योनि पर धक्के लगाए जा रहा था. कौशल्या ने बड़ी मुश्किल से अपनी आहो को दबाया हुवा था. कुछ देर बाद मैं पूरी तरह से उसपर चढ़ गया और उसके होंठो को चूस्ते हुए ठुकाई करने लगा बड़ा ही मज़ा भर गया था मेरी नस नस मे. आधे घंटे से भी ज़्यादा देर तक मैं उसकी योनि मारता रहा और वो भी पूरा मज़ा ले रही थी.

अब मैं झड़ने के करीब आ गया था. उसका हाल भी कुछ ऐसा ही था. तभी उसने मुझे कस्के अपनी बाहों मे दबा लिया और मस्ती से मेरे होंठो को चूस्ते हुए अपने काम सुख को प्राप्त करने लगी और फिर मैने भी अपना गाढ़े रस से उसकी योनि को भर दिया.

कुछ देर मैं उसके उपर ही लेटा रहा. फिर जब वासना का तूफान शांत हुआ, मैं उसकी बगल मे आ गया और उसके होटो की पप्पी लेकर उसका शुक्रिया अदा किया. वो मेरे सीने से सट गयी हालाँकि मैं एक बार और उसको ठोकना चाहता था पर उसने मना कर दिया. फिर बस सोना ही रह गया था.

१३

सुबह हुई अब मुझे वापिस गाँव आना था तो कुछ देर और फूलचंद जी से गुफ्त गु हुवी और करीब दस बजे मैं वहाँ से गाँव के लिए चल पड़ा.पर तभी मुझे याद आया कि मुझे बँक मॅनेजर से मिलना है मैं बँक हो लिया. असल मे मुझे मेरे कुछ खातो का पिछले समय की ट्रांजेक्शन डीटेल्स चाहिए थी, तो बँक मे बड़ी ही देर लग गयी.कुछ पैसे भी निकल वा लिए थे. अब काफ़ी डेटा था. तो मॅनेजर ने कहा सर टाइम लग रहा है आप एक काम करो अभी आप घर जाओ मैं १-२ दिन मे पोस्ट से डीटेल्स भिजवा देता हू. .

फिर मैं बँक से निकला तो तीन बज रहे थे .मैं गाँव के लिए निकला फिर मुझे कुछ याद आया मैने फोन निकाला और एक नंबर डाइयल किया तो उसने मुझे मिलने के लिए बुला लिया .असल मे ये वो आदमी था जो कुछ हथियारो की व्यवस्था करने वाला था. अब ये काम बेहद ज़रूरी था तो उस से फिर डील होने लगी. उसने कहा कि वो एक हफ्ते बाद सब काम कर देगा.तो कुछ पैसे अड्वान्स देकर मैं गाँव की ओर हो लिया.

शाम हो रही थी मुझे जल्दी से जल्दी घर पहुच ना चाहिए था. गाँव से थोड़ी ही दूर पर जब मैं था तो एक आदमी ने हाथ के इशारे से कार को रुकवाया मैने गाड़ी रोक दी. वो बोला बाबूजी मेरे पैर मे चोट लगी है क्या आप मुझे गाँव तक छोड़ देंगे. मैने कहा हाँ आजो उसके पास एक बॅग भी था. मैने सोचा कि मैं ही उठा कर रख देता हू मैने गाड़ी का गेट खोला और बाहर आ गया पर ये तो गजब ही हो गया.

मेरे बाहर आते ही झाड़ियों से कुछ ७-८ लोग और बाहर निकल आए और मुझे घेर लिया. मैने कहा लुटेरे हो लूटने आए हो. तो उनमे से एक बोला ना ठाकुर साहब ना.. धन ना चाहिए हमको आपका. मैने कहा फिर क्या चाहते हो. वो बोला हमारे मालिक ने कहा है कि ज़रा ठाकुर साहब की थोड़ी सी खातिरदारी करके आओ,तो आ गये. मैने कहा तो ठीक है फिर अपने मालिक का पता बताओ आज का डिन्नर उधर ही करता हूँ मैं.

मैं अंदर ही अंदर समझ गया था. की आज बेटा कलदाई आ गयी है आज तो गया तू काम से.मैने फुर्ती करते हुवे जेब से पिस्टल निकाल ली तभी किसी का लात मेरे हाथ पर पड़ा और पिस्टल गिर गयी.मैं कुछ समझ पाता उस से पहले ही दना दन वार होना शुरू हो गया मुझ पर. कुछ रियेक्शन करने का टाइम ही ना मिला. बस फिर मेरी चीख ही गूंजने लगी उस वीराने मे.

मैं तो प्रतिरोध भी ना कर पाया था. पता नही कब मेरे होश गुम होते चले गये. जब मेरी आँख खुली मैं हॉस्पिटल मे था. आँखे खुलते ही मैने माहौल देखा फिर, मैने आवाज़ लगाई तो नर्स दौड़ते हुए आई और बोली अरे आप आराम करो ज़रा फिर उसने मुझे बैठने मे मदद करी और डॉक्टर को बुलाने चली गयी.

तब तक किसन अंदर आ चुका था.उसने पानी भरी आँखो से मेरी ओर देखा और रोने लगा. मैने कहा पगले कुछ नही हुआ., मुझे बस कुछ चोट है. ठीक हो जाएँगी. फिर देखा कौशल्या भी अंदर आ गयी और मेरे पास स्टूल पर बैठ गयी और मेरा हाथ पकड़ कर पूछा कि ठीक हो. मैने कहा जी ठीक हू.तो पता चला कि आज ४ दिन बाद होश आया है .डॉक्टर ने आकर कुछ इंजेक्शन दिए.

फिर पता चला कि कोई हड्डी तो नही टूटी पर कुछ पसलियो मे चोट है और गुम चोट तो पूरे शरीर मे ही थी. तबीयत से मारा था सालो ने मुझे. पुलिस ने आकर बयान लिया. मैने झूट बोलते हुए कहा कि सर मुझे कुछ याद नही है. शायद कुछ चोर-लुटेरे थे.तो इनस्पेक्टर ने कहा कि ठाकुर साहब चोर नही थे वो लोग. गाड़ी से हमे १२ लाख रुपये मिले है. अगर चोर होते तो ले जाते पर सिर्फ़ आप पर हमला. पहले हवेली मे कोसीश और अब ये कुछ तो है जो आप बता नही रहे है .मैने कहा मुझे कुछ भी नही पता है और वैसे भी ये पुलिस का काम है.आप तहकीकात शुरू कीजिए.

इनस्पेक्टर ने बड़ी घहरी नज़रो से देखा मुझे और फिर कहा कि कुछ याद आए तो इत्तिला दीजिए, फिर चला गया. कौशल्या बोली मुझे तो पक्का यकीन है,कि संग्रामगढ़ वालो न ही

हमला करवाया है. मैने कहा ऐसा क्यो लगता है तुम्हे. जबकि मुझे भी यही लग रहा था. मैने पूछा क़ी मुझे यहाँ तक किसने पहुचाया. तो पता चला कि किसन उसका बहनोई और उसकी बहन गाँव आ रहे थे ,तो रास्ते मे उन्हे मेरी कार दिखी उसके पास ही मैं बेसूध पड़ा था. उसका जीजा किसी सेठ का ड्राइवर था. वो ही हॉस्पिटल लाया कार को, फिर गाँव सूचना दी गयी. मैने उन सबका धन्यवाद किया. ५-६ दिन बाद हॉस्पिटल से छुट्टी हो गयी. मैं हवेली आ गया. हवेली की सुरक्षा कड़ी हो गयी थी .अब गाँव के लोग भी थोड़ा सा दुखी थे मेरे उपर हुवे हमले को लेकर.

बस दिन गुजर रहे थे कौशल्या एक दो दिन मे चक्कर लगा जाया करती थी .सुभद्रा तो थी ही.पर भी रंभा पूरे दिल ओ जान से मेरी तीमार दारी मे जुटी हुई थी. अब वो चौबीस घंटे ही हवेली मे रहा करती थी. कुछ ज़रूरी हो तो ही घर जाती थी. वहाँ उसकी सास तो थी ही संभालने को. धीरे धीरे मेरी हालत मे भी सुधार होने लगा था.

एक दोपहर रंभा ने मुझे दवाई पकडाई और बोली मालिक आपको क्या लगता है. कौन ऐसी हरकत कर सकता है.मैने कहा कोई भी हो सकता है , मेरे मामा भी हो सकते है.वो बोली अरे एक मिनिट मे अभी आई.मैने कहा कहाँ जा रही हो बताओ तो सही.पर वो बाहर दौड़ पड़ी पाँच मिनिट बाद वो आई ,तो उसके हाथ मे एक लिफ़ाफ़ा था. उसने कहा कि मालिक जिस दिन आप शहर गये थे उस दिन संग्रामगढ़ से दो लोग आए थे और ये देकर गये थे .फिर आप पे हमले की खबर आई फिर दिमाग़ से निकल गया.

मैने कहा तू बैठ ज़रा , तो पास रखी कुर्सी पर बैठ गयी. मैने वो लिफाफा खोला तो उसमे एक रजिस्ट्री थी जिसमे संग्रामगढ़ की फॅमिली ने मेरी वाली ज़मीन जो कई सालो से दबाई हुई थी वो मुझे वापिस दे दी थी.मैने ३-४ बार वो रेजिस्ट्री पढ़ी.अब ये क्या हो गया था मुझे समझ नही आ रहा था.ये तो बात ही घूम गयी. मैने कहा रंभा टेबल पे रखी डायरी मे से वकील साहब को फोन लगाओ और उन्हे कल यहाँ बुलाओ.फिर मैने उसको सारी बात बताई. वो बोली मालिक कही कोई खेल ना खेल रहे हो वो लोग. मैने कहा हो सकता है पर ज़मीन तो वापिस करदी उन्होने.

अगले दिन वकील आया. मैने फूलचंद जी को भी गाड़ी से इधर ही बुलवा लिया. फिर विचार विमर्श होता रहा. मैने कहा अब उनका धन्यवाद तो करना ही चाहिए. वैसे भी अब मैं काफ़ी हद तक ठीक हो गया हू.मुझे अब रिश्तेदारो से मिल ही लेना चाहिए.तो फूलचंद जी घबरा गये और बोले आप वहाँ नही जाएँगे बस. मैने उनका मन रखने को बोल दिया ठीक है नही जाऊंगा ,पर मैने अपना इरादा कर ही लिया था.

वकील बोला मैं कल ही जाकर वो ज़मीन अपने क़ब्ज़ मे ले लेता हू. मैने कहा ठीक है.फिर मैं और फूलचंद जी अनुमान लगाते रहे कि आख़िर हमला किसने करवाया.क्योंकि वो घात लगा कर किया गया वार था. तो किसी को तो पता था ही कि मैं आ रहा हू .साला कौन हो सकता है.अगले कुछ दिनो मे हवेली के लोगो को हथियार भी मिल गये थे. खेतो का काम कौशल्या देख रही थी तो चिंता नही थी.

हफ्ते भर बाद की बात है. उस दिन सुबह से ही बड़ी बारिश हो रही थी.तो रात तक सिलसिला चलता रहा , पर रात को बारिश तूफ़ानी हो गयी थी. रात के खाने के बाद मैं किताब पढ़ रहा था. तो रंभा दूध लेकर आई मैने पूछा बाहर लोगो का खाना हो गया .वो बोली हाँ मलिक रात वाले लोग घर से ही खाकर आते है .मोसम ठंडा सा है मैं बस उनको चाइ पकड़ा कर ही आई हू .आज रंभा काली साड़ी मे बड़ी ही गजब लग रही थी.

मेरे दिल पर तो कटार ही चल गयी थी उसके उस रूप को देख कर. मैने कहा रंभा मुझे तुमसे आज एक बात करनी है. वो बोली जी कहिए मैने कहा ज़रा इधर तो आओ.वो बेड के पास आकर खड़ी हो गयी. मैने कहा मेरे पास बैठो, वो सकुचाने लगी. पर मैने उसको अपने पास बिठा लिया और उसका हाथ पकड़ कर बोला कि, रंभा मैने कई दिन पहले तुमसे एक सवाल किया था. उसका जवाब नही मिला मुझे अभी तक.

उसका सुन्दर मुखड़ा लाल हो गया पर वो चुप ही रही. मैने कहा तुम्हे तो पता ही है. मैं तुमको दिल से अपना मानता हू क्या तुम मुझे दोस्त होने का हक़ भी नही दे सकती हो. वो बोली मालिक ऐसी बात नही है पर ……. …….. मैने कहा पर क्या .वो बोली हवेली मे इतने लोग होते है, बात खुल गयी तो मेरा क्या होगा. मैं उसकी हथेली को दबाते हुए कहा

कि क्या तुम्हे भरोसा नही मुझ पर.वो बोली आप कैसी बात करते है.मैने उसे सीधा आमंत्रण देते हुवे कहा कि ठीक है, मैं तुम्हारा इंतज़ार कर रहा हू.सारा काम निपटा कर आओगी ना. वो उठी और दरवाजे की तरफ चल पड़ी और वहाँ पहुच कर जब उसने मुझे मुस्कान दी मैं तो मर ही गया ……

बाहर मोसम भी आज रोद्र रूप मे था. घनघोर बरसात हो रही थी फिर बिजली भी चली गयी. मैं उठा और रोशनी की फिर खिड़कियो के पर्दे लगा दिए ताकि कुछ बाहर का शोर कम हो जाए. मैने लालटेन ली और बाहर का हाल देखने जा निकला गेट पे जाके देखा कि वो लोग जो वहाँ कमरा बनाया था उधर बैठे थे. मैने कहा आप आराम से रहना. बारिश मे ना भीगना. वो बोले मालिक आप चिंता ना करो और आराम कीजिए. मैं फिर से अपने कमरे मे आ गया.

तो देखा कि रंभा सोफे पर बैठी है. मैने गेट बंद किया और उसके पास जाकर बैठ गया और उसके हाथ को अपने हाथ मे ले लिया. वो बोली मालिक !....मैने कहा क्या हुआ. वो कहने लगी कुछ होता है मुझे. मैं बस हँस दिया. उसकी टाँग से मेरी टाँग रगड़ खाने लगी थी. मैं आज पूरी रात उसको भोगना चाहता था. मैने उसकी ठोडी को अपने हाथ से उठा कर उसके चेहरे को उपर की ओर किया और बिना कुछ कहे अपने होंठो से उसके होंठो को मिला लिया.

रंभा उसी समय मेरी बाहों ने पिघल गयी.मलाईदर होंठो को चूसने मे मुझे बड़ा ही मज़ा आ रहा था. ऐसा लगा कि जैसे ताज़ा ताज़ा मलाई हो. वो दस पंद्रह मिनिट तक बस उसके अधरो का रसपान ही करता रहा मैं. फिर वो अलग हुई. मैने उसे खड़ा किया और अपने से चिपका लिया और साड़ी के उपर से ही उसकी गदराई नितंब को सहलाने लगा.एक बार फिर से मैं उसको किस करने लगा था.

फिर मैने उस से कहा कि रंभा बिल्कुल भी शरमाओ ना, वरना मैं तुम्हे प्यार कैसे कर पाऊंगा. मैने उसकी साड़ी का पल्लू पकड़ा और साड़ी को खोलने लगा वो सिर्फ़ ब्लाउज

पेटिकोट मे थी. वो शरम के मारे अपना मूह मेरे सीने मे छुपाने लगी और मैने मोके का फ़ायदा उठाकर उसके पेटिकोट का नाडा भी खोल दिया .जैसे ही पेटिकोट उसके पैरो मे गिरा, मैं तो पगला ही गया. नीचे से वो पूरी नंगी हो गयी थी.मैं कुछ देर उसके नितंबों से खेलता रहा फिर उसके ब्लाउज को भी उतार दिया और उसको बेड पर पटक दिया. उसने एक चादर अपने उपर ओढ़ ली. मैने जल्दी से अपने कपड़े उतारे और चादर मे घुस गया और उसके उपर आ गया फिर एक लंबा सा किस किया और उसके हाथ मे अपना लिंग दे दिया.

तो उसने अपना हाथ पीछे खीच लिया. मैने कहा पकडो ना इसे फिर उसने मेरे लिंग को अपनी मुट्ठी मे भर लिया और तभी उसके मूह से निकल गया ये तो बहुत ही लंबा और मोटा है. मैने कहा परशुराम का ऐसा नही है क्या. वो बोली नही वो तो इस से काफ़ी छोटा है. पर तभी उसे अपनी बात का अहसास हुआ वो शर्मा गयी. मैने कहा रंभा तुम खुश तो हो ना. वो शरमाते हुवे बोली हाँ मालिक.

मैं उसके निचले होठ को अपने दाँतों से काटने लगा वो मेरे लिंग को मसलने लगी. रंभा कौशल्या से भी बहुत ज़्यादा हॉट और जबरदस्त पीस थी. काफ़ी देर तक बस चूमना चाटना ही लगा रहा. बाहर बारिश से जो ठंड हो गयी थी तो मज़ा और भी बढ़ गया था. फिर मैं अपना हाथ उसकी योनि पर ले गया. गहरे बालो से ढकी हुवी गुलाबी योनि मैं तो देख कर खुश हो गया.

उसकी बालों पर मैं अपनी उंगलिया फिराने लगा. वो अपनी जाँघो को कसने लगी. आख़िर फिर मैने अपनी बीच वाली उंगली उसकी योनि के अंदर डाल दी. वो सिसकते हुवे बोली आहह मालिक आराम से दर्द होता है. मैने कहा अब इस उमर मे कहाँ दर्द होगा. अब तो मज़ा लेने की उमर है.ज़रा अपनी टाँगे थोड़ी सी फैला, तो उसने पाँवो को चौड़ा कर दिया. मैं आहिस्ता आहिस्ता से योनि मे उंगली रगड़ने लगा.

रंभा भी आहिस्ता आहिस्ता से इस आग मे जलने लगी थी. अब तन की प्यास जब भड़के फिर बस भड़क ही जाती है. योनि मे उंगली करते करते मैने रंभा को किस भी करना शुरू कर दिया. उसने अपना मूह खोला मैं उसकी जीभ को चूसने लगा. उसके तन बदन मे तरंग दौड़ गयी और उसने भी अब मेरे लिंग पर अपना हाथ चलाना शुरू कर दिया.मैं भी मस्त होने लगा.

काफ़ी देर की चूमा चाटी के बाद अब मैं उठा और उसकी टाँगो को बेड के किनारे पर फैलाते हुवे अपने चेहरे को उसकी योनि पर झुका लिया. वो बोली छी मालिक क्या कर रहे हो गंदी जगह पर कोई मूह रखता है क्या. मैने कहा परशुराम तेरी योनि को चाट ता नही है क्या वो बोली जी मैने तो आज तक अपनी योनि नही चटवाई है. मैने कहा फिर आज तू देख और मैने अपने होठ उसकी गरमा गरम योनि पर रख दिए.

जैसे ही मैने अपनी लप लपाती हुवी जीभ उसकी नमकीन योनि पर फेरी उसके जिस्म मे तो भूचाल ही आ गया. रंभा एक अंजाने से अहसास मे डूबती चली गयी थी. उसकी टाँगे अपने आप चौड़ी होती चली गयी.मीठा सा टेस्ट था उसकी रस से भरी योनि रूपी कटोरी का .रंभा की सिसकारिया बाहर बरसती बारिस की टिप टिप मे डूबती चली गयी. थोड़ी देर योनि को चाटने के बाद मैने उसके दाने को अपने होटो मे दबा लिया तो बस अब उसके मूह से आहे ही फुट रही थी. अपनी मांसल जाँघो को बेड पर पटकते हुवे वो मुझे अपनी योनि का रस पिलाए जा रही थी. मैं भी उसे अच्छे से उत्तेजित करना चाहता था. ताकि वो लाज शरम सब भूल जाए. मैं दाने को चूस्ते चूस्ते योनि मे उंगली करने लगा तो रंभा का फिर खुद पे किसी भी तरह का काबू ना रहा.

१०-१२ मिनिट तक टूट के मैं उसकी योनि को पीता रहा और फिर आख़िर उसका बदन ऐंठ गया और उसने अपने रस की नदी मेरे मूह मे छोड़ दी. मैं चतकारे लेते हुवे उसकी योनि से रिसती छोटी से छोटी बूँद को भी पी गया. फिर मैं उठा रंभा अपनी आँखे बंद किए बेड

पर पड़ी थी. मैं उसकी बगल मे लेट गया और उसको पूछा मज़ा आया. वो बोली ज़िंदगी मे आज पहली बार योनि चटवाई .है बड़ा ही मज़ा आया, सुकून सा मिला है मुझे.

मैं उसके बदन को सहलाने लगा तो थोड़ी देर मे ही वो फिर से गरम हो गयी. मैने उसकी योनि पर अपने बेकाबू लिंग को रखा और रगड़ने लगा और फिर एक धक्का लगाते हुए सुपाडे को अंदर पहुचा दिया. रंभा दर्द से चीख पड़ी और बोली रुकिये ज़रा बहुत दर्द हो गया है ,ज़रा आराम से.मैने कहा दर्द? वो बोली दो-ढाई साल बाद आज ठुक रही हू तो दर्द तो होगा ही ना. मैने कहा बस एक मिनिट की बात है और एक तेज धक्का और लगा दिया. अब आधा लिंग उसकी बेहद ही तंग योनि मे घुसने लगा. उसकी योनि का छेद लिंग के हिसाब से फैल गया था. वो जैसे तड़पने ही लगी. मैने उसके होटो को अपने होटो से चिपका लिया और थोड़ा थोड़ा करके लिंग को योनि मे डालने लगा .कुछ देर की कोशिश के बाद आख़िर पूरा लिंग अंदर हो ही गया.

मेरा पूरा वजन उस पर पड़ गया था. मैं लेटे लेटे उसके रसीले होटो का मदिरा पान करता रहा. फिर करीब ५ बाद मैने अपनी कमर हिलानी शुरू कर दी थी. अब तक उसकी योनि भी फैलकर लिंग के साइज़ की हो गयी थी. मैने अब उसके होठ छोड़े और कहा करूँ वो बोली धीरे धीरे करो और दर्द भरी आवाज़ निकालने लगी. मैं उसकी गुलाबी स्तनों सहलाते हुवे हल्के हल्के धक्को के साथ रंभा को ठोकना शुरू किया. मैं बोला तेरी योनि बहुत ही टाइट है. लगता है जैसे कुँवारी कन्या हो. वो शर्मा गयी और बोली कई सालो से ठुकि नही हू तो टाइट हो गया है. कुछ देर मे उसको भी मज़ा आने लगा वो मेरी पीठ को सहलाने लगी और फिर खुद ही मेरी गर्दन पर अपने दाँतों से काटने लगी. बेड के नरम गद्दो पर हमारी मस्त ठुकाई चालू हो गयी थी.

बाहर घनघोर बरसात और अंदर बेड पर वासना का तूफान. कौशल्या तो रंभा के आगे कुछ भी नही थी. रंभा तो खरा सोना निकली थी. कोई बता ही नही सकती थी कि उसका बेटा भी होगा .मैने उसकी दोनो टाँगे उपर कर दी और फिर उसकी लेने लगा. रंभा की सिसकारियाँ छत से टकराने लगी थी. मैं खुद उसके जिस्म की गर्मी मे पिघलता जा रहा था.

लिंग पूरा उसकी योनि से रिस्ते काम रस मे गीला हो गया था. और पच पुच करते हुवे योनि के अंदर बाहर हो रहा था. पर जल्दी ही उसके बोझ से मैं थकने लगा. मैं उसे बेड से उठा कर सोफे पर ले आया और उसको घोड़ी बना दिया. सोफे पर उसकी बड़ी नितंब और भी फूल गई. मैं उसके कुल्हो को चूमने लगा और वो अपनी नितंब को हिलाने लगी.अब ठुकती योनि से अचानक से लिंग बाहर निकाल लो तो कोई भी औरत अधीर हो गी ही. रंभा बोली मालिक अब आप रुक क्यो गये जल्दी से डालो ना अंदर. मैने उसकी बलखाती हुवी कमर को थामा और अपने नटखट लिंग को योनि मे डाल दिया. रंभा इस प्रहार से आगे की ओर को झुक गयी और फिर अपनी नितंब को पीछे करते हुए ठुकाई का लुत्फ़ उठाने लगी. मैं तो खुद मस्ती के सागर मे डूबा पड़ा था.

८-१० मिनिट तक मज़े से घोड़ी बनाके ठोकने के बाद मैने उसे वही सोफे पर लिटा दिया और उसके उपर आकर ठोकने लगा. रंभा ने अपनी टाँगे मेरी कमर पर लपेट दी और आँखे बंद करके ठुकाई का मज़ा ले ने लगी. मैं अब पूरी ताक़त से उसको ठोक रहा था. बस अब आहे ही सुनाई दे रही थी और फिर कुछ देर बाद रंभा मुझसे किसी बच्चे की तरह चिपक गयी और उसकी योनि की पंखुड़िया मेरे लिंग पर दबाव डालने लगी. उसका बदन झटके खाते हुवे झड़ने लगा. रंभा फिर से अपने चरम की ओर अग्रसर हो गयी थी पर मैं अभी भी लगा हुवा था. जब उसे थोड़ा होश आया वो बोली मालिक आप अपना पानी अंदर मत गिराना वो कह ही रही थी की मैने अपना लिंग फॉरन छूट से बाहर खीचा और उसके पेट पर अपना गरम पानी गिरा दिया और उसकी बगल मे पड़ गया.

कुछ देर बाद मैं उठा और अपनी निक्कर से उसके पेट को साफ किया. पास रखे जग से पानी पिया और उसको भी गिलास भर के दिया .फिर उसके पास लेट गया रंभा मेरे सीने पर अपना हाथ फिराते हुए बोली.मालिक आज तो आपने मुझे ऐसा सुख दिया है जो ब्याह के पंद्रह साल मे कभी ना मिला और मेरे होंठो पर एक किस कर दिया.

मैं उसकी स्तन को सहलाते हुवे बोला पर तुम ऐसा क्यो कह रही थी कि दो ढाई साल बाद ठुक रही हू.वो बोली मालिक ये एक ऐसी बात है जो मैने किसी से नही बताई पर आपको

बता ती हू. दरअसल चिंटू के बापू एक बार काम पर थे तो लेंटर गिर गया था. तो उनकी टाँगो पर काफ़ी चोट लगी थी तब से ही उनकी पौरुष शक्ति चली गई है. फिर मैने भी अपनी इच्छा को मार लिया था.

फिर आप आ गये और आज तो बस आपने मुझे अपनी गुलाम ही बना लिया है.कसम मे मैं तो आपकी हो गई हू आज से. मैने प्यार से उसके सर पर हाथ फेरा. वो मेरे सीने से लग गयी.मैने कहा तूने लिंग चूसा है. तो बोली ना जी पर आज आपका ज़रूर चुसुंगी. फिर वो उठी और मेरे लिंग को अपने मूह मे ले लिया और अपनी जीभ को गोल गोल करके लिंग पर फिराने लगी. वो भी फिर से अपने रंग मे आने लगा. ८-१० मिनिट तक वो अच्छे से लिंग को चुस्ती रही.

पूरा लिंग उसके थूक से सना हुआ था. उसने अब अपनी टाँगे फैलाई और बोली मालिक आ जाइए अपनी दासी को फिर से मज़ा दीजिए और मैं फिर से उसको ठोकने लगा. हम दोनो एक दूसरे की जीभ को पूरी मस्ती से जीभ को चूसे जा रहे थे. कसम से ऐसी ठुकाई करके मैं तो बड़ा ही खुश हो गया था. अब मेरे हर धक्के का जवाब वो अपनी नितंब को उचका उचका के दे रही थी. ये ठुकाई तो और भी लंबी हो गई थी. उसका मादक जिस्म पल पल मेरे हार्मोंस को और भी आक्टिव करते जा रहा था.

मैं दीवानों की तरह उसके गालो होटो गर्दन को चूमे जा रहा था. उसके नाख़ून मेरी पीठ गर्दन मे धन्से जा रहे थे. बड़ा ही मस्त आलम था. उस कमरे के अंदर पता नही कितनी देर तक हम एक जिस्म हुए रहे. पर हर शुरआत की तरह अंत भी होना ही था. आख़िर मैने उसकी योनि को अपने पानी से भर दिया और फिर पता नही कब नींद ने हम दोनो को अपने आगोश मे ले लिया.

१४

अगली सुबह जब मैं उठा तो देखा कि बारिश रुक गयी थी. पर रंभा नही थी. पूछने पर पता चला कि वो घर गयी थी. मैं बाहर आया तो देखा कि सुभद्रा बरामदे मे पोछा लगा रही थी. उसने साड़ी को जाँघो तक किया हुआ था. तो उसकी ठोस जांघे जैसे निमंत्रण दे रही हो और फिर उसके ब्लाउज से बाहर को झाँकते आधे उभारों का तो कहना ही क्या. सुबह सुबह ही मेरे लिंग मे फिर से तनाव आने लगा.

मैं उसको नजरअंदाज करते हुए बाथरूम मे घुस गया. नहा कर आया तो वकील साहब आए थे. उन्होने बताया कि ज़मीन पर क़ब्ज़ा ले लिया गया है बिना किसी परेशानी के. पर वहाँ पर कई एकड़ मे अफ़ीम खड़ी है, उसका क्या करना है.मैने कहा या तो उसको उन्ही को दे दो या फिर जला दो. मैं नही चाहता कि किसी को उसकी लत लगे. फिर उसने बताया कि शहर मे भी एक मॅरेज हॉल है, जो सालो से बंद पड़ा है. कई पार्टी है उसको खरीदने को तैयार और अच्छा ख़ासा पैसा भी मिल जाएगा. अगर आप कहे मैं बात करू. मैने कहा हाँ ठीक है आप देख लेना फिर कुछ हो तो मुझे बता देना. बाप दादा इतना कुछ छोड़ गये थे कि मुझसे सम्भल ही नही रहा था. मैं संग्रामगढ़ जाना चाहता था. एक बार पर फूलचंद जी के दबाव की वजह से जा नही पा रहा था.

लंच ख़तम किया ही था कि थाने से इनस्पेक्टर साहब आ गये.मैने आने का सबब पूछा. तो उन्होने बताया कि ठाकुर साहब बात दरअसल ये है कि कुछ दिनो मे बलदेव का मेला लगेगा. तो दोनो गाँवो के लोग मेला देखने आएँगे. मैने कहा फिर उसमे क्या है, जो रीत है उसे चलने दो. वो बोला आप पहले मेरी बात सुने ज़रा , बात ये है कि पुराने जमाने मे रीत चली आ रही है,कि ठाकूरो की तरफ से देवता को बलि दी जाती है.बरसो से आपके पुरखे ये परंपरा निभा रहे थे फिर जब हवेली मे वो घटना हुवी तो उसके बाद से विजय स्वरूप संग्रामगढ़ के ठाकूरो ने बलि देना शुरू कर दिया. मैने कहा फिर मैं क्या करूँ. वो बोला आप समझ नही रहे है. अब हालत पहले जैसे नही है. अब आप आ गये है तो आपका अधिकार है वो. पर उधर से वो लोग भी ज़िद करेंगे तो कही शांति-व्यवस्था बिगड़ ना जाए.

मैने कहा आप की ज़िमेदारी है सुरक्षा की. आप अपना काम कीजिए.वो बोला क्यो मज़ाक करते है ठाकुर साहब.अब आप लोगो के सामने हमारी क्या चलती है. बस आपसे गुज़ारिश है कि मामले को बिगड़ने ना देना. मैने कहा ठीक है देखता हू क्या कर सकता हू.

इनस्पेक्टर के जाने के बाद मैं सोचने लगा मुझे मोका मिल गया था अपने रिश्तेदारो से आमना सामना करने का.मैने कौशल्या को तुरंत बुलावा भेजा और कुछ देर बाद वो मेरे साथ थी .मैने कहा मेला लगने वाला है ,तो हमारी तरफ से देवता को कुछ भेंट चढ़ाई जाए. वो सुकचाते हुवे बोली आकाश तो आख़िर तुम्हे पता चल ही गया. पर हम ऐसा नही कर सकते.अगर तुम वहाँ जाओगे तो तुम्हे दुश्मनो की चुनोती स्वीकार करनी पड़ेगी और अभी तुम पूरी तरह से ठीक नही हुए हो.

मैने कहा तुम ज़ख़्मो की चिंता ना करो और वैसे भी ज़ख़्म तो क्षत्रियो का गहना होता है. तुम आज शाम ही गाँव मे मुनादी करवा दो कि इस बार देवता को बलि ठाकुर आकाश सिंग चढ़ाएँगे.कौशल्या बोली सोच लो आकाश ये बात मज़ाक की नही है. बल्कि प्रतिष्ठा की है.अगर तुम कामयाब ना हुए तो विश्रामगढ़ का सर झुक जाएगा. मैने कहा जो होगा देख लेंगे.

फिर मैने गाँव से सुनार को बुलवाया और कहा कि देवता को सोने का छत्र चढ़ाएँगे इंतज़ाम करो , और हलवाई को महा प्रसाद बनाने का हुकम दिया. अब मुझे इंतज़ार था बस मेले के दिन का.जो अभी थोड़ा दूर था. शाम को मैं नदी किनारे बैठा था. तो किसन आया बोला, हुकुम आप इस बार बलि चढ़ाने वाले है. मैने कहा हाँ. वो बोला ये बड़ा अच्छा किया आपने .वरना हर बार हमे शर्मिंदा होना पड़ता है उनके सामने. मैने कहा इस बार नही होगा .वो मुस्कुराया और मेरे ही पास बैठ गया.वो बोला आप रोज यहाँ आते है.मैने कहा नही जब मैं उदास होता हू तभी इधर आता हू. उस से बाते करते अंधेरा सा होने लगा था. फिर वो बोला मैं अब चलता हू घर पर. मैं उधर ही बैठा रहा सच तो था कि मुझे ये अकेला पन काटता था. कभी कभी तो मन मे आता था कि सब कुछ बेच कर मैं वापिस लंडन चला जाऊ.पर अब तो जीना भी यही और मरना भी यही पर था.

फिर मैं भी हवेली आ गया. डिन्नर मे अभी देर थी. मैं उपर की तरफ चला गया.आज मैने एक और कमरे को खोल दिया और समान को देखने लगा. तो मुझे एक अलमारी मे गहनो के कई बॉक्स मिले. सोने चाँदी हीरे हर तरह की ज्वेल्लरी थी उसमे. मैने फिर उनको साइड मे रख दिया और वहाँ दीवारों टन्गी तलवारो को देखने लगा.कुछ अब वक़्त के असर से जंग खा गयी थी और कुछ ऐसी थी जैसे बस आज ही खरीदी गयी हो.एक तो बड़ी ही सुन्दर थी. चाँदी की मूठ वाली. मैने उसे मेज पर रख दिया. फिर एक अलमारी मे कुछ तस्वीरे निकली जो अब बस नाम की ही रह गयी थी. मैं उन्हे देखने लगा पर कुछ समझ नही आया,क्योंकि वो काफ़ी पुरानी थी पर थी तो मेरे अपनो की ही.

फिर दरवाजे पर दस्तक हुवी. मैने देखा कि रंभा थी. वो बोली मालिक भोजन तैयार हो गया है. आप को बुलाने आई थी. मैने कहा ज़रा इधर आओ और उसको वो गहने दिखाते हुवे कहा कि जो भी तुम्हे पसंद आए रख लो. कुछ लम्हो के लिए वो गहनों को देख कर मंत्रमुग्ध हो गयी. पर फिर बॉक्स को वापिस रखते हुवे बोली ,नही मालिक मुझे कुछ नही चाहिए.

मैने उसे बार बार कहा पर उसने नही लिए फिर हम नीचे आ गये. डिन्नर के बाद वो बोली मालिक दूध ले लीजिए. मैने कहा बैठो ज़रा और उस से बाते करने लगा. मैने रंभा से पूछा कि मुनीम जी और उनके परिवार के बारे मे बता कुछ. वो बोली मैं क्या बताऊ. मैने कहा जैसे कि गाव के लोगो के प्रति उनका व्यवहार कैसा है.जब मैं नही था तो हवेली वो ही तो संभालते थे ना,बस इसी लिए पूछ रहा हू.

वो बताने लगी कि मुनीम जी तो भले मानस है. पर कौशल्या बड़ी ही तेज औरत है. हरदम बस रोब झाड़ती रहती है और कई औरतो से उसका लड़ाई झगड़ा चलता ही रहता है. तो गाँव के कम लोग ही उसके मूह लगते है. कभी किसी ने मुनीम जी से सूद पर रुपया ले लिया और टाइम पर ना दे सका फिर बस कौशल्या के ड्रामे देखो. ना जाने कितने ग़रीबो की ज़मीन दबा कर बैठी है और बेटी के बारे मे तो आप जानते ही है.मैने कहा हाँ. वो बोली

पर एक बात और है जो आपको नही पता. मैने कहा क्या बता ओ ज़रा.वो बोली मुनीम जी का एक बेटा भी है.जो बाहर कहीं पर पढ़ाई करता है. सुना है कि वकील का कोर्स कर रहा है.मैने कहा पर उन्होने तो कभी बताया नही इस बारे मे.रंभा बोली मालिक कौशल्या बड़ी ही घाग औरत है. मैं तो बस इतना ही कहूँगी कि आप उसे ज़्यादा मूह ना लगाना.जब से मुनीम जी खाट मे पड़े है कौशल्या के तो सुर ही बदल गये है.

मैने कहा ठीक है ! मैं ध्यान रखूँगा. पर अभी तू मेरा ध्यान रख और उसको अपनी गोद मे उठा लिया. वो बोली मालिक वैसे तो मेरी हसियत नही है कि मैं आपको मना कर सकूँ पर मैं चाहती हू कि मेले के बाद जब आप विजयी होकर आए मैं आप के साथ सोऊ. मैने कहा ठीक है तेरी फरमाइश है तो पूरी करनी ही पड़ेगी. फिर वो रसोई मे चली गयी और मैं सोचने लगा कि कही मेरे मामा लोग कोई साजिश तो नही बुन रहे मेरे खिलाफ.

पर जो भी था.अब इंतज़ार था मेले के दिन का. मैने सब कुछ उपर वाले के हाथ मे छोड़ दिया, पर हक़ तो मेरा ही था. बलि देने का मैं कुछ उलझ सा गया था. अपने ही सवालो के घेरे मे पर ऐसा कोई था नही जो मुझे मेरे सवालो के जवाब दे सके. तो बस यही सब सोचते सोचते मैं सो गया.

दो दिन बस उधेड़बुन मे ही निकल गये और आख़िर वो दिन आ ही गया. मेरी तरफ से सब तैयारी पक्की थी. मेले वाले दिन मैने महादेव मंदिर मे पूजा की और महादेव जी से आशीर्वाद लिया. आज तो जैसे सारा गाँव ही आरती मे उमड़ आया था. हालाँकि मुझे अंदर ही अंदर घबराहट हो रही थी. पर शायद ठाकूरो का खून मेरी नसों मे उबलने लगा था.

मैने आज कुर्ता और धोती पहनी थी जिसमे बड़ा ही तेजस्वी लग रहा था. ऐसा कौशल्या ने मुझे बताया था. फिर मैं चल पड़ा बलदेव के मेले मे. अब सुबह सुबह ही थी तो इतनी भीड़ भी नही थी. पर मंदिर के कपाट खुले हुवे थे.मैं मंदिर के अंदर गया और पुजारी को अपना परिचय दिया और अपने आने का उद्देश्य बताया. वो कुछ सकुचाते हुए से बोले कि ठाकुर साहब संग्रामगढ़ के लोग अब इस परंपरा को निभा रहे है.

मैने कहा पर हक़ तो मेरा है ना. फिर वो कुछ नही बोले.मैने कहा आप बलि की तैयारी करवाईए. अब पुजारी की कहाँ इतनी हिम्मत कि वो मुझे मना कर सके ,तो आख़िर मंदिर मे तूत्नि बज ही गयी. ये संकेत था कि देवता के लिए बलि की तैयारिया शुरू हो गयी है. आस पास के सारे इलाक़े मे इसी बात को लेकर बड़ा ही कौतूहल था. तो धीरे धीरे पूरा प्रांगण ही भीड़ से भरता चला गया.

ये बात मुझे भी महसूस हुई कि मेले मे लोगो का ध्यान ना होकर बस इसी बात मे था कि बलि कौन चढ़ाएगा. कौशल्या मेरे पास आई और बोली कि आकाश ना जाने क्यो मेरा मन बड़ा ही घबरा रहा है कल रात से. मैने कहा तुम ऐसे ही परेशानी ले रही हो सब ठीक ही होगा. मैं और कौशल्या बाते कर ही रहे थे कि तभी एक सफ़ारी गाड़ी मंदिर की सीढ़ियो पर आकर रुकी और एक मेरी ही उमर का नोजवान बड़े ही गुस्से मे उतरा और चीखते हुए बोला कि कौन है आकाश ठाकुर जो यहाँ आया है अपना शीश दान करने. मैने कौशल्या को पीछे किया और तेज तेज कदमो से सीढ़िया उतरने लगा और उसके सामने जाकर खड़ा हो गया. मैने कहा मैं ही हूँ आकाश, और तू जो भी है तमीज़ से ठाकुर साहब बोल. तो उसने अपनी बंदूक मेरे सीने से सटा दी और बोला तू मुझे तमीज़ सिखाएगा.जानता भी है कि मैं कौन हू.

मैने शांत स्वर मे कहा बंदूक को हटा ले.अगर तुझे चलानी होती तो आते ही सीधा फायर कर देता और वैसे भी ये देख कि तेरे सामने कौन खड़ा है. वो झुंझलाते हुवे बोला कि मैं संग्रामगढ़ का युवराज हू. मैने कहा अच्छा तो तू है अफ़ीम की खेती वाला. मेरा फार्महाउस तो चुपचाप वापिस कर गया था. जा आज देवता का दिन है ,चला जा कहीं ऐसा ना हो कि आकाश के हाथो कुछ ग़लत हो जाए.

तभी वो हंसता हुवा बोला तकदीर वाला हूँ जो कि विश्रामगढ़ के आख़िरी ठाकुर का खून बहाने का सोभाग्य मुझेही मिलेगा. आज तू देखना, ये आसमान भी रुदन करेगा और मरने से पहले तू ज़रूर ये महसूस करेगा की कैसे मेरे खानदान ने तेरे घरवालो को तडपा तडपा कर के मारा था. आज फिर से इतिहास दोहराया जाएगा. वो चीखते हुवे बोला कि गाँव वालो आज विश्रामगढ़ का आख़िरी ठाकुर भी हलाल हो जाएगा. क्या किसी ने इसे नही बताया था कि कैसे इसके चाचा का सर काट कर हम ने दरवाजे पर टांक दिया था. मैं ही बचा हुआ था. पर आज इसको मारकर मैं भी अपना पराक्रम साबित कर दूँगा उसकी बाते सुनकर मेरे जिस्म का अंग अंग गुस्से से फड़कने लगा था. क्रोध की ज्वाला से मैं जलने लगा था.

मैने एक मुक्का उसके मूह पर दे मारा.वो पीछे की ओर फीक गया और ठीक उसी पल मैं उसकी छाती पर सवार हो गया और उसके चेहरे पर मुक्को की बरसात कर दी. मेरी आँखो मे जैसे खून सा उतर आया था. पर उस टाइम वो झड़प कुछ ही देर मे ख़तम हो गयी.क्योंकि थानेदार साहब ने हम को अलग कर दिया. पुलिस हमारे बीच आ गयी थी.

मैने कहा कसम है महादेव जी की, बलि मैं ही चढ़ाउंगा और कोई रोक सके तो रोक ले ये ठाकुर आकाश की ज़बान है.अगर संग्रामगढ़ मे किसी माँ ने कोई सूरमा पैदा किया है तो आए आकाश की तलवार आज बरसो की प्यास को बुझाएगी. क्रोध से मेरा अंग अंग कांप रहा था. थानेदार मुझे समझाते हुए बोला, ठाकुर साहब मेरी विनती है !आप बात को ना बढ़ाइए. आप जाने दीजिए ! मैने कहा ना जी ना अब तो जो होगा वो होकर ही रहेगा. ये साला इतिहास को दोहराएगा .ये हवेली की शान मे गुस्ताख़ी करेगा. मुझे पता ही नही था कि गुस्से मे मैं क्या क्या बोल रहा था.

तभी कुछ और गाडिया आकर रुकी तो मेरा ध्यान उधर ही चला गया. मैने देखा कि गाड़ी से एक पुरुष और महिला उतरी कौशल्या मेरे पास दौड़ते हुए आई और बोली आकाश तुम्हारे मामा और मामी जी है. बेशक दुश्मन है ,पर तुम पहली बार मिल रहे हो तो थोड़ा जज्बातो पर काबू रखना.

मामा मामी के चेहरे तेज से चमक रहे थे.वो सीढ़िया चढ़ते हुए मेरी ही ओर आ रहे थे. थानेदार ने उनको सलाम ठोका और बोला वो ठाकुर साहब वो वो ………… ………….. …….. तो उन्होने अपना हाथ उठा कर उसे चुप करवा दिया और सीधा मुझसे मुखातिब होते हुए बोले आकाश…….. आँखे ही तरस गयी थी तुम्हारी एक झलक देखने को और उन्होने अपना हाथ मेरे सर पे रख दिया. मैने कौशल्या की तरफ देखा उसने मुझे शांत रहने को इशारा किया. मामा बोले आकाश बिल्कुल ही अपने पिता की तरह दिखते हो. बस आँखे तुम्हारी माँ जैसी है, पता तो लग गया था कि तुम आ गये हो, कब से इच्छा थी कि तुम्हे देखें पर आ ही नही सके. पर मैं शांत खड़ा रहा. तभी पुजारी ने आकर कहा कि बलि का समय हो गया है.

मैने कहा चलिए पुजारी जी, और मैं दो कदम ही बढ़ा था. कि पीछे से किसी ने मेरे कंधे पर हाथ रख कर रोक लिया. मैं मुड़ा तो मामा जी ने कहा कि रूको आकाश, बलि चढ़ाने का हक़ तुम्हारा नही है. बल्कि तुम्हारे भाई का है और अपने बेटे को बुला लिया. मैने उनका हाथ अपने कंधे से हटाया और उनकी आँखो मे देखते हुवे बोला कि मामा जी बलि मैं ही चढ़ाउंगा बाकी आप जाने.

मामा बोले बच्चे ज़िद नही करते. जाओ लौट जाओ. मैने कहा आकाश को बात दोहराने की आदत नही है. बलि तो आज ठाकुर अश्विनप्रताप सिंगका बेटा ही चढ़ाएगा. किसी मे दम है तो रोक ले. तो उन्होने कहा फिर ठीक है,आज फ़ैसला हो ही जाएगा. दोनो घरानो के युवराज इधर ही है ,फिर हो ही जाए मुक़ाबला. ज़रा हम भी तो देखे की हवेली के अंतिम चिराग मे कितनी लौ बाकी है.

ना जाने क्यो उसकी बात मुझे चुभ सी गयी.मैने कहा मामाजी अब भी समय है. कदम पीछे हटा लो वरना फिर मुझे दोष ना देना. वो बोले कल के लोंडे हो और फिर तुम्हे पता ही क्या है.मैने कहा फिर ठीक है हो ने दो जो होता है. तो ये तय हो गया कि मल्लयुध मे जो जीतेगा वो ही बलि चढ़ाने का अधिकार पाएगा .

पुजारी ने हम दोनो योधाओ का तिलक किया और फिर शुरू हो गया मुक़ाबला जो किसी एक के रक़्त से ही ठंडा होना था. मामा की उपहास उड़ाती नज़रे मेरे दिल मे घाव करती चली गयी और मेरा गुस्सा बढ़ने लगा. मुकाबला बराबर सा ही था. ताक़त मे वो मेरे जैसा ही था. पर बस मैं उस से लंबाई मे कुछ ज़्यादा था. कभी वो प्रहार करे कभी मैं.मेरा ज़रा सा ध्यान भटका और उसने ऐसा प्रहार किया मेरे पेट मे कि बस मैं तो बुरी तरह से तड़प कर ही रह गया. आँखो के आगे तारे नाच गये और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा. तो उसने कई लात मेरी पेट मे लगा दी मैं दर्द से दोहरा होता चला गया.उसने मुझे खड़ा किया और दना दन ४-५ मुक्के नाक पर जड़ दिए तो नाक फट गयी और खून का फव्वारा बह चला.संग्रामगढ़ के लोग जय जय कर करने लगे. जब थोड़ा सा दर्द कम हुआ मैं उसके प्रहारो को रोकने लगा.

अब मेरी बारी थी. मैं उसे पीटने लगा.उसके कान को फाड़ दिया मैने. वो भी चीत्कार करने लगा.मैने उसकी छाती मे लात मारी वो दूर जा गिरा और तड़पने लगा. मेरी नाक से बहता खून मेरे गुस्से को और भी भड़का रहा था. तो मेरा दिमाग़ बुरी तरह से खराब हो गया. मैने उसको फिर लात और घूँसो से धर लिया और उसकी फुटबॉल बना दी मैने. मामा जी के चेहरे पर घबराहट के भाव देखे. अब बारी थी विश्रामगढ़ के लोगो की जयकारा लगाने की.

मेरे मन मे आई कि चल छोड़ अब साले को कहीं मर ना जाए. पता नही उस एक पल को कैसे मेरे मन मे दया आ गयी और ठीक उसी पल उस कमीने ने धोखा करते हुए मेरी आँखो मे धूल गिरा दी. मैं रेत आँखो मे जाते ही तड़प उठा. कुछ देर के लिए मैं तो जैसे अँधा ही हो गया.उसी पल का लाभ उठाते हुवे उसने तलवार ले ली और फिर मेरी पीठ पर वार कर दिया.

मेरे गले से एक तेज चीख उबल पड़ी और मेरी पीठ पर एक लंबा घाव होता चला गया. एक तो आँखो से कुछ दिख नही रहा था. और दूसरी तरफ उसके पास पूरा मोका था. अगला वार मेरे पाँव पर हुवा और मैं धरती पर गिर पड़ा लगा कि जैसे टाँग तो कट ही गयी मेरी. फिर कुछ लाते और पड़ी मुझ पर तो मेरी घिग्गी बँध गयी. वो अट्टहास करता हुआ बोला देखो गाँव वालो ये है ठाकूरो का वारिस दो पल मे ही ढेर हो गया.ये लेगा बदला अपने परिवार का ये आया है. देखो इसे......

उसने अपना पाँव मेरी छाती पर रख दिया और मुझे मसलते हुवे बोला. आकाश ठाकुर बड़ा दंभ भर रहे थे तुम.बड़ी गाथा गा रहे थे तुम.क्या हुआ निकल गयी सारी हेकड़ी. तू तो शेर की खाल मे बकरी निकला रे. कुछ तो ज़ख़्मो का दर्द और कुछ आँखो मे तेज जलन हो रही थी. मैने कहा ....हे महादेव जी.. लाज रखना मेरी.अब तो आप ही मदद करो..

उसने फिर से मुझ पर वार किया तो लगा कि जैसे किसी ने छाती मे मिर्च भर दी हो. मैं बुरी तरह से दर्द से बिलबियाने लगा. उसने कुछ मुक्के लात और बरसाए मुझ पर और फिर मुझे उठा कर फेक दिया और बस यही पर देवता की कृपा हो गयी मुझ पर. जब उसने मुझे फेका मैं पशुओ के लिए बनाई गयी पानी की खेली मे जा गिरा और आँखो का कचरा पानी ने साफ कर दिया.

मैं महादेव जी कि जय बोलता हुवा पानी से बाहर आया. बदन तो जैसे दर्द से बिखर ही रहा था. पर मैं उस दर्द को पी ही गया. उसकी कही हर एक बात मेरे प्रतिशोध की अग्नि को धधका रही थी. जैसे ही उसने अबकी बार तलवार लहराई मैने उसका हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से एक घूँसा उसकी पसलियो मे जड़ दिया. तलवार उसके हाथ से छूट गयी. मैने उठा ली ,अगले ही पल मैने उसकी कलाई पर वार किया तो खून की धारा बह निकली. मैने रुदन किया और उसको उठा कर पटक दिया और उसके उपर टूट पड़ा

मैने कहा हेमराज उठ.आज तू देखे गा कि नरक की यातना कैसी होती है.आज तू साक्षात मृत्युदेव को अपनी आँखो से देखेगा. मैं उसकी छाती पर चढ़ गया और बस मारता ही रहा, उसको मारता ही रहा उसकी छाती को फाड़ दिया मैने. रक्त उसके पूरे जिस्म से बह रहा था. पर प्राण अभी बाकी थे उसके.

रक्त तो मेरे ज़ख़्मो से भी काफ़ी बह रहा था. पर अब मुझे किसी भी जख्म की कोई परवाह नही थी. मैने उसकी टाँग पकड़ी और उसे घसीट ते हुए मंदिर की सीढ़िया चढ़ने लगा और मैं मंदिर मे आ ही गया. अब मैने तलवार उठाई और भयंकर रुदन करते हुवे बोला ,हेमराज

आँखे खोल देख आकाश ठाकुर आज तेरे सर की बलि चढ़ाएगा. देख कमिने उठ.मैने उसको लात मारी और कहा साले उठ , उठता क्यो नही,आँखे खोल.मैं बस उसका सर काटने ही वाला था. कि मेरी मामी भागते हुए आई और मेरे पैरो मे गिर गयी और रोते हुवे बोली. आकाश, बेटे रुक जाओ , भगवान के लिए रुक जाओ. इसे बख्स दो. भाई है ये तुम्हारा. मैं तुमसे माफी मांगती हू. एक माँ तुमसे अपने बेटे के प्राणो की भीख मांगती है.उसने अपना आँचल मेरे पाँवो मे फैला दिया.पता नही मुझे क्या हुआ. मैने कहा ले जाओ इसे और आगे से कह देना इस से कि अपनी हद मे रहे.आकाश का संग्रामगढ़ पर ये एहसान है.

वातावरण मे एक अलग सा ही डर सा छा गया था. मैने चिल्लाते हुवे पुजारी से कहा कि आओ और बलि दने की रस्म को पूरा करवाओ.तो उसने तुरंत ही मंत्रोचारण शुरू कर दिया और मैने बलि चढ़ा दी .

पर हालत मेरी भी कुछ ज़्यादा अच्छी नही थी. तो बस फिर कौशल्या ने मुझे संभाला और हवेली ले आई डॉक्टर पहले ही आ चुका था. उसने घाव को साफ किया और कुछ घाव पर टाँके लगाए और कुछ पर दवाई लगा कर पट्टी बाँध दी. वो बोला शूकर है ठाकुर साहब ज़ख़्म ज़्यादा गहरे नही है पर पाँव मे जो घाव लगा है, उसका विशेष तोर पर ध्यान रखना और अभी कुछ दिन आराम ही करे आप.

डॉक्टर के जाने के बाद कौशल्या बोली आकाश, जो भी हुआ अच्छा नही हुआ. अब हमे और भी चोकस रहना होगा. आज तुमने बरसो से दबी चिंगारी को हवा दे दी है. भगवान ही जाने अब क्या होगा.मैं तुम्हारी सुरक्षा को और भी चोकस करवा देती हू .आज से ही कम से कम २०-३० लोग तो हमेशा ही तुम्हारी सुरक्षा मे रहेंगे.

मैने कहा फिलहाल इसकी ज़रूरत नही है तुम बस मेरा एक काम करो, थोड़ी देर मेरे साथ यू ही रहो मुझे दर्द हो रहा है. तुम साथ रहोगी तो आराम रहेगा.कौशल्या बोली आकाश अभी मुझे जाना होगा मुनीम जी सुबह से ही अकेले है और तुम तो जानते ही हो कि आजकल उनकी तबीयत भी ठीक नही रहती है.पर मैं जल्दी ही वापिस आ जाऊंगी. मैने कहा ठीक है.

कौशल्या के जाते ही थोड़ी देर बाद रंभा हल्दी वाला दूध ले आई बोली मालिक इसे पी लीजिए आराम मिलेगा.मैं दूध पीने लगा.वो वही पर बैठ गयी और बोली हुकुम मेरा तो दिल ही निकल आया था आज, जब आपकी पीठ पर तलवार का वार हुआ था. मैने कहा छोटी

सी चोट है,ठीक हो जाएगी .वो बोली मालिक पूरी पीठ इतनी गहरी चिर गयी है और आप कह रहे है कि छोटी सी है. बड़े ही जीवट वाले है आप.

मैं हल्का सा मुस्कुरा दिया,पर उस मुस्कान मे भी दर्द था जिसे मैं छुपा ना सका.मैने कहा रंभा , जब बिन माँगे उन लोगो ने मेरी ज़मीन वापिस कर दी फिर बलि को लेकर ऐसा क्यो हुआ. इस घटना से मैं उलझ सा गया हू.तो रंभा बोली मालिक मैने भी एक बात पर गोर किया कि मंदिर मे आपके छोटे मामा और उनका परिवार ही था. पर बड़े वाले ठाकुर नही दिख रहे थे.मैने कहा उनसे बड़े भी हैं क्या.वो बोली हा, उनका नाम रविंद्रनाथ है.

मैने कहा हो सकता है कि कुछ गड़बड़ हो. पर इन सवालो के जवाब आख़िर है कहाँ. वो बोली मालिक अब मैं क्या जानू. मैने कहा रंभा तू कुछ दिन इधर ही ठहर जाएगी क्या. वो बोली ये भी कोई कहने की बात है क्या. जब तक आप की सेहत सुधर नही जाती मैं इधर ही हू आपकी सेवा मे दिन रात.

१५

कुछ दिन गुजर गये इलाज जारी था. पर उस दोपहर कुछ अलग ही हो गया.मैं खाना खा कर आराम ही कर रहा था. कि रंभा भागते हुए आई और बोली कि हुकुम ज़रा बाहर आइए.मैने कहा क्या हुआ क्यो परेशान कर रही हो तो रंभा हान्फते हुवे बोली कि मालिक वो वो आपके बड़े मामा और मामी आए है.मैने कहा पर वो यहाँ क्यो आए है. वो बोली मालिक गाड़ी गेट पर ही रुकी है कहो तो वापिस कर दूं.मैने कहा ,नही ! घर पे आया दुश्मन भी मेहमान होता है.

तो उनको आदर से मेहमान खाने मे बिठाया जाए और अच्छे से उनके लिए जलपान की व्यवस्था की जाए. अब वो खुद चल कर आए है तो मेहमान नवाज़ी तो बनती ही है और बाहर से बाबा को बुला लाओ ताकि वो मुझे मेहमान खाने तक ले चले. वो सर हिलाते हुवे बाहर चली गयी और फिर बाबा की सहायता से मैं भी मेहमान खाने मे आ गया.

मामा रविंद्रनाथ बड़े ही ओजस्वी थे.गर्व जैसे साक्षात झलक रहा था उनके मुख से और वैसा ही तेज मामी जी का था.मैने हाथ जोड़ कर उनको प्रणाम किया और सोफे पर बैठ गया. उनसे ये पहली मुलाकात थी. मैं थोड़ा सा नर्वस सा हो रहा था. मामी उठी और प्यार से मेरे सर पर हाथ फेर कर बोली आकाश अब तबीयत कैसी है तुम्हारी. मैने कहा जी ज़ख़्म ताज़ा है तो बस दर्द ही होता रहता है .पर उम्मीद है जल्दी ही भर जाएँगे.तभी उनका ड्राइवर और हमारे दो आदमी कई सारी मिठाइयो के डब्बे और उपहार ले आए.

मामा बोले आकाश ये कुछ भेंट है तुम्हारे लिए. मैने कहा अरे इसकी क्या ज़रूरत थी वो बोले अब बहन के घर आए है तो खाली हाथ कैसे आ सकता था. तभी रंभा नाश्ता लेकर आ गयी.मैने उन्हे नाश्ता करने को कहा.मामा पहली नज़र मे बड़े ही सज्जन से लगे मुझे. फिर नाश्ते के बाद फिर से बातों का सिलसिला शुरू हो गया. वो बोले सूचना तो कई दिन पहले ही मिल गयी थी कि तुम विलायत से वापिस आ गये हो पर फुरसत ही ना मिली. कुछ कामो मे इतना उलझे पड़े थे कि बस चाहकर भी तुमसे मिलने आ ही ना सके.पर आज तुम्हारी मामी का भी मन था. तो हम खुद को रोक ना सके. बिल्कुल तुम्हारे पिता से ही लगते हो तुम.मैने पूछा हेमराज कैसा है. वो बोले ठीक है, अब हालत मे सुधार है पर २-३ महीने तो हस्पताल मे लग ही जाएँगे.

मैने कहा माफी चाहता हू उसकी हालत का ज़िम्मेदार मैं ही हु, पर क्या करू हालात ही कुछ ऐसे हो गये थे.वो बोले जो हुआ सो हुआ. उस दिन हमें अर्जेंट बाहर जाना पड़ा वरना

ऐसा कुछ होता ही नही. मामा जी बोले आकाश हमे पता चला था कि पहले भी तुम पर हमला हुआ था. हम ने अपनी तरफ से भी खोज करवाई थी पर कुछ हाथ ना लगा.मैने कहा जाने दीजिए वो बात अब पुरानी हो गयी और वैसे भी छोटी मोटी बाते तो चलती ही रहती है. वो बोले बेटा अब तुम्हे पुरानी बातों का तो सब पता चल ही गया होगा. मैं बस इतना ही कहना चाहूँगा कि अतीत के बारे मे हम जितना सोचेंगे वो उतना ही हमें दुख देगा और फिर तुम या हम कोई भी चाहकर अतीत को नही बदल सकता है.. ना झुटला सकता है. बस उसे भूलने की कोशिश ही कर सकते है.और फिर तुम तो हमारी बहन की एकलौती निशानी हो.तो अगर तुम्हारी इजाज़त हो तो कभी कभी आ जाया करेंगे तुमसे बात करने को, तो हमारा पाप भी कुछ कम हो जाएगा.बल्कि हम तो ये भी कहेंगे कि हमारा घर भी तो तुम्हारा ही है. जब भी दिल करे आ जाना. सदा इंतज़ार रहेगा तुम्हारा. मैं मुस्कुरा दिया मैने बाहर से एक आदमी को बुलवाया और कहा कि रंभा से जाकर कहो कि महमानों के लिए उच्च स्तर के पकवान और लज़ीज़ भोजन तैयार किया जाए.वो लोग मना करने लगे.मैने कहा आज पहली बार हवेली मे मेरे रहते मेहमान आए है.आपको भोजन तो करके ही जाना पड़ेगा फिर वो मेरा आग्रह टाल ना सके.तो इसी तरह उन लोगो से बाते करते हुवे ना जाने का सांझ ढा गयी पता ही नही चला.जाते जाते मामा ने मुझसे वादा लिया कि जल्दी ही मैं भी संग्रामगढ़ आऊ. मैने भी हाँ कह ही दी.

वापिस आकर मैं लेट सा गया काफ़ी देर सोफे पर बैठने के कारण कुछ दर्द सा होने लगा था. रंभा बोली हुकुम जो मिठाइया वो लोग लाए थे उनको बाहर फिकवा दूं क्या.मैने कहा किसलिए.वो कहने लगी, क्या पता जहर मिला दिया हो उन लोगो का आप बिल्कुल भरोसा ना करे.

मैने कहा अरे पगली ऐसा कुछ नही होता तू इतनी फिकर ना किया कर.वो बोली मालिक अगर आप की इजाज़त हो तो थोड़ी देर चिंटू के बापू से मिल आऊ कई दिन हो गये है.मैने कहा चली जाना पूछने की बात क्या है इसमे.जब भी तेरा दिल करे चली जाया कर.वो मुस्कुराती हुई चली गयी मुझे भी भूक तो थी नही. मैं भी फिर बस सो गया.

अगली सुबह मैं नाश्ता कर ही रहा था कि रूपा आ गयी मिलने. मैने कहा क्या बात है तुम तो भूल ही गयी हो. तो उसने बताया कि उसकी अर्ध वार्षिक परीक्षाएँ थी पर अब वो फ्री है .मैने कहा आओ तो नाश्ता कर लो वो बोली मैं घर से खा कर आई हूँ.माँ ने ये कुछ घी भेजा है तुम्हारे लिए.मैने कहा रंभा को दे आ.रुपा रसोई मे चली गयी मैने भी अपना नाश्ता ख़तम कर ही लिया था.

फिर मैं और रूपा दोनो बगीचे मे आ गये.ठंड थी तो आज मैने सोचा कि रूपा से बाते भी कर लूँगा और धूप भी सेंक लूँगा.रूपा बोली मेले वाले दिन क्या ज़रूरत थी इतना खून ख़राबा करने की. अब पड़े हो. कितनी चोट लगी है. मैने कहा चोट तो लगी है.पर तुझे एक पल भी याद ना आई. तूने तो पराया ही कर दिया है.

रूपा,- अरे बताया तो सही ना कि मैं पढ़ाई को लेकर व्यस्त थी और फिर माँ तो बताती ही रहती है घर पर.

आकाश- ज़्यादा बाते ना बना माँ को भी तो कितने दिन हो चले है.आई ही नही इधर.

वो बोली आकाश क्या बताऊ पिताजी की तबीयत तो तुम जानते ही हो. ना जाने किसकी नजर हमारी खुशियो को लग गयी है.

आकाश – रूपा, तू चिंता ना कर सब ठीक हो जाएगा

रूपा- चलो वो सब छोड़ो और बताओ कि अब तबीयत कैसी है.

आकाश- ठीक ही है.बस चलने फिरने मे कभी कभी तकलीफ़ होती है.बाकी कुछ ज़ख़्म भर गये है.कुछ भर जाएँगे.

हम बात कर ही रहे थे कि रंभा आई और बोली- हुकुम दवाई लगाने का समय हो गया है.रुपा बोली तुम जाओ मैं लगा दूँगी दवाई.तो रंभा ने गहरी नज़रो से उसको देखा और फिर चली गयी और मैं और रूपा वापिस कमरे मे आ गये.

रूपा- बताओ कहाँ लगानी है दवाई

आकाश-पीठ पर और पैरो पर और थोड़ा सा जाँघ के उपर वाले हिस्से पर भी

रुपा ने मेरी टी-शर्ट निकाली और बोली चलो अब सीधे बैठ जाओ. मैं लगाती हूँ दवाई.मैं सीधा होकर बैठ गया रूपा अपने नरम नाज़ुक हाथो से मेरी पीठ पर दवाई मलने लगी तो लगा कि आज कुछ ज़्यादा ही सुकून सा मिल रहा है. मैने कहा यार तेरे हाथो मे तो बड़ा ही जादू सा है.वो बोली क्या कुछ भी बोलते रहते हो पीठ पर दवाई लगाने के बाद उसने कहा निक्कर उतारो गे तभी मैं दवाई लगा पाउंगी. मैने निक्कर उतार दी अब मैं खाली अंडर वेअर मे ही था. और उपर से रूपा की नाज़ुक उंगलियो का मादक स्पर्श जब वो जाँघ पर दवाई लगा रही थी तो उसका हाथ बार बार लिंग से छू रहा था. वो धीरे धीरे करेंट मे आने लगा था.

रूपा अपनी आँखो मे शरारती मुस्कान लाते हुए कहने लगी खाट मे पड़े हो पर हरकते वही है तुम्हारी. मैने कहा अब तुम हो ही इतनी प्यारी और फिर मिली भी कितने दिनो बाद हो फिर अब हाल तो बुरा होना ही है.वो कच्छे के उपर से ही मेरे लिंग को पकड़ ते हुवे बोली लगता है इसे भी इलाज की ज़रूरत है. मैने कहा है तो सही पर करेगा कौन.

ये सुनकर रूपा दरवाजे तक गयी और उसको बंद करके मेरे घुटनो के नीचे फर्श पर बैठ गयी और कच्छे को भी उतार दिया और मेरे खड़े लिंग को सहलाते हुवे बोली.आकाश ये तो बड़ा ख़ूँख़ार लग रहा है. मैने कहा तुम्हे देखकर ही हो रहा है .वो धीरे धीरे से मेरी मुट्ठी मारने लगी मैने अपनी आँखे बंद कर ली रूपा उफ़ फफफफफफफफफफफफफफ़ उफफफफफफफफफफफफफफफफफ़

कुछ देर बाद मुझे लिंग पर गीला गीला सा लगा.मैने आँखे खोल कर देखा रुपा लिंग को अपनी जीभ से चाट रही थी. उसने अपनी आँखे मेरी तरफ की और आँख मार दी. मैने उसके सर को दबा दिया तो लिंग उसके गले मे अड़ गया. रूपा के थूक से मेरी जांघे भी गीली होने लगी थी. अब वो भी जवान थी और शायद कच्ची कली थी तो उसकी भी सहवास की इच्छा भड़कने लगी थी.

अब वो पूरी तरह से मेरे लिंग पर झुक गयी थी बार बार उसे मूह मे लेती और निकाल देती.मेरे बदन मे एक मज़े की तरंग दौड़ रही थी.पूरी रफ़्तार से १०-१५ मिनिट तक मज़े से वो मेरा लिंग चूस्ति रही फिर मेरे लिंग से सफेद द्रव्य की धार निकली और उसके गले से टकराई तो उसने घबरा कर लिंग को मूह से बाहर निकाल दिया .पर लिंग से जो पिचकारी फुट पड़ी थी तो उसकी नाक , और गले को भिगोति चली गयी. रूपा खाँसते हुए बोली बड़े ही कमिने हो तुम. सारा मूह खराब कर दिया और पास रखे तोलिये से अपना मूह साफ करने लगी फिर उसने कुल्ला किया और बोली आइन्दा से मूह मे नही लूँगी.मैने कहा तू इतनी ज़ोर से चूस रही थी कि फिर कंट्रोल हुआ ही नही.

कुछ पल बाद रूपा अपनी सलवार का नाडा खोलते हुवे बोली,आकाश इधर मेरी ये भी नीचे से बहुत ही गीली हो गयी है और इसमे लग रहा है कि जैसे चींटिया काट रही हों. इधर भी कुछ करो ना. मैने कहा एक काम कर तू बेड पर लेट जा. उसने अपनी सलवार और पैंटी उतारी और झट से बिस्तर पर चढ़ गयी और मैं भी उपर आ गया. मैने कहा ज़रा टाँगे तो फैलाओ तो उसने अपनी सुडोल जंघे विपरीत दिशाओ मे फैला दीzजिस से मुझे थोड़ी जगह मिल गयी और फिर मैने भी उसकी रस से भीगी हुवी रोयेन्दार बालो वाली गुलाबी योनि पर अपने होठ रख दिए तो लगा कि जैसे समुन्दर का ढेर सारा खारा नमक किसी ने

मेरे मूह मे भर दिया हो और रूपा का तो हाल उस एक चुंबन से ऐसा हो गया कि क्या कहूँ , रूपा की आँखे उस मस्ती मे डूबती चली गयी और चाहकर भी वो आपनी आह को अपने होटो मे ना दबा पाई और उसकी सिसकारी फुट पड़ी आहह
आईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईईई
ऊउउफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफफ़

आकाश ये क्या कर दिया तुमने. मैने कस्के उसकी योनि की गुलाबी पंखुड़ियो को अपने होटो मे भर लिया तो जैसे काम रस फुट पड़ा उन मे से.रूपा की टाँगे अपने आप ही उपर को उठती चली गयी और वो मस्त मस्त आहे भरने लगी रूपा बोली उफफफफफफफफफफफफफफफ़ ये तुम्हारी गरम जीभ का स्पर्श मेरी जान ही लिए जा रहा है. आकाश रुक जाओ मैं पिघल रही हू.पर मैं अब उसकी कुछ नही सुन ने वाला था. ,

रूपा अपने हाथो से अपने उभारों को दबाने लगी थी और अपनी स्तनाग्र को उंगलियो से सहलाते हुए बेड पर पैर पटक रही थी और मैने अब अपने हाथो से योनि की पंखुड़ियो को थोड़ा सा फैलाया और फिर अंदर के हिस्से को चाटने लगा. जहा मैं मज़े से उसकी अनछुई योनि का रस पिए जा रहा था. और वो भी उस सुख को प्राप्त कर रही थी.

कामदेव का बान रूपा के दिल को चीर गया था. कामुकता उसकी नस नस मे भर गयी थी और मैं ..मैं मेरी क्या हालत बयान करू.अगर मैं ठीक होता मैं अब तक तो उसकी योनि मे लिंग डाल चुका होता.अभी तो बस योनि को ही पी सकता था. पल पल उसकी योनि और भी रस बहाती जा रही थी.उसकी योनि से बहता काम रस अब उसकी नितंब तक आ गया था. रूपा किसी नागिन की तरह झूम रही थी और ऐसे ही आख़िर वो पल आ ही गया जब सारे जहाँ की मस्ती उसकी नसों से बाहर छलक उठी और रूपा बिस्तर पर पस्त होकर पड़ गयी और अपनी भागती हुवी सांसो को थामने की कोशिश करने लगी.उसकी योनि से निकले पानी की बूँद बूँद को मैने साफ कर दिया

कुछ देर हम दोनो यू ही बेड पर पड़े रहे फिर उठ कर कपड़े पहने . रूपा बोली आकाश क्या मैं सच मे तुम्हे अच्छी लगती हूँ.मैने कहा हाँ तुम बहुत पसंद हो मुझे. वो शर्मा गयी. फिर उसने कहा आकाश अब मैं चलती हूँ.देर हो रही है. मैने कहा फिर कब आओगी.वो बोली जल्दी ही आऊंगी.उसके जाने के बाद पता नही कब मेरी आँख लग गयी जब मैं उठा तो दिन ढल चुका था.

१६

मैं अपनी बैंत का सहारा लेते हुए बाहर आया. पता नही क्यो आज मेरा मूड हो रहा था कि कहीं बाहर घूम आउ.मैने कार का गेट खोला और उसे स्टार्ट करने लगा तो हमारा दरबान आया और बोला, मालिक आपकी तबीयत भी ठीक नही है. इस हालत मे बाहर जाना उचित नही है और माहौल भी ठीक नही है. कही कुछ हो गया तो!मैने कहा तुम चिंता ना करो, मैं बस पास तक ही जा रहा हू.जल्दी ही आ जाऊंगा. वो बोला ठीक है पर आपकी सुरक्षा के लिए दो चार आदमी साथ ले जाइए. पर मैने मना कर दिया और कार लेकर चल पड़ा. पर मुझे भी नही पता था कि जाना कहाँ है कच्चे रास्ते पर इधर उधर कार दौड़ी चली जा रही थी. इस एरिया मे मैं पहली बार आया था. आगे रास्ता भी थोड़ा सा संकरा था और झाड़िया भी बहुत ही ज़्यादा थी.अजीब सी जगह थी ये.

मैं उतरा और पैदल पैदल ही आगे को बढ़ने लगा. थोड़ी दूर जाने पर मुझे पानी बहने की आवाज़ सुनाई देने लगी पर कोई नदी या नाला दिख नही रहा था. और फिर जैसे ही उन कॅटिली झाड़ियो को पार करके मैं कुछ आगे बढ़ा तो बस मैं देखता ही रह गया.ये तो एक बगीचा सा था. छोटा सा था. पर बेहद ही सुंदर था. चारो तरफ तरहा तरहा के फूल खिले हुए थे. कुछ पक्षी चहचाहा रहे थे.

इतना सुंदर नज़ारा मैने तो अपने जीवन मे पहली बार देखा था. मंत्रमुग्ध सा मैं थोड़ा सा और आगे बढ़ा तो देखा कि एक तरफ पेड़ो के नीचे दो चार बेंच भी लगी हुई थी. मैं उधर ही चला गया.अब पानी बहने की आवाज़ और भी प्रबल हो गयी थी तो मेरे पाँव अपने आप ही उस ओर बढ़ने लगे.कुछ दूर आगे जाने पर मैने देखा कि नदी से कटकर एक पानी का सोता बनाया गया है. इधर गला सा भी सूखने लगा था. मैं सोते से पानी पीने लगा, पानी पी ही रहा था कि पीछे से एक आवाज़ आई कौन हो तुम? मैं उठा और पीछे देखा , और क्या देखा कि कोई मेरी ही हमउमर लड़की खड़ी है और उसका तेज इतना था कि उसके रूप की ज्योति से वो सारा क्षेत्र ही जगमग करने लगा. इतनी सुंदर कि लिखने लगूँ उसके रूप के बारे मे फिर ये शब्द ही कम पड़ जाए.

रूप ऐसा जैसे किसी ने मलाई वाले दूध मे चुटकी भर केसर छिड़क दिया गया हो.गोरे रंग पर गुलाबी रंगत लगा कि जैसे सख्शियत स्वर्ग से कोई देवी उतर आई हो और उसके गुलाबी अधरो पर जो वो छोटा सा तिल था. बस अब मैं क्या कहूँ .कानो मे सोने के बूंदे,

गले मे रेशमी माला की डोरी और उस लाल घाघरा चोली मे क्या खूब लग रही थी. मैं तो उसके उस रूप की आँधी में कहीं खोता ही चला गया.

जब उसे लगा कि मैं एकटक उसे ही देखे जा रहा हू,तो उसने चुटकी बजाते हुवे मेरा ध्यान भंग किया और बोली कौन हो तुम और इधर कैसे आए. मैने जवाब देते हुवे कहा कि जी मैं तो मुसाफिर हू. रास्ता भटक कर इस ओर आ निकला तो ये बगीचा दिख गया. बड़ा ही सुंदर है मेरा तो मन ही मोह लिया इसने. कुछ प्यास भी लग गयी थी फिर इधर पानी पीने आ गया. वो लड़की अपने खुले बालो पर हाथ फिराते हुवे बोली क्या तुम्हे पता नही कि ये किसकी मिल्कियत है.मैने कहा जी अब मैं तो ठहरा मुसाफिर. मैं क्या जानू .वो बोली ये मेरा बाग है आज तो इधर आ गये हो आगे से मत आना .उफफफफफफफफफफफफफफ़ ये अंदाज उस रूप दीवानी का मैने कहा जी ऐसा क्यो.वो तुनक कर बोली कह दिया ना कि हमें अपनी मिल्कियत मे किसी अंजान का दखल पसंद नही.

क्या तेवर है हुजूर के , मैने कहा जैसी आपकी मर्ज़ी मालकिन साहिबा पर थोड़ी से भूख भी लग आई है तो आप आज्ञा दें तो दो चार फल खा लूँ. वो बोली हाँ ठीक है पर इधर वापिस ना आना. मैं एक पेड़ के पास गया और कुछ फल तोड़ने की कोशिश करने लगा. उसके रूप की कशिश मे मैं अपने शरीर की हालत को भी भूल ही गया था.

भूल गया था कि पैर के जखम अभी ताज़ा ही है. मैं जैसे ही उछला तो चोटिल पाँव पर पूरा ज़ोर आ गया और मैं धडाम से गिर पड़ा तो जखम का टांका खुल गया तो दर्द की एक लहर मेरे बदन मे रेंग गयी. कोहनी पर भी लग गयी थी. मैं जैसे तैसे करके उठा और अपने आप को संभाल ही रहा था. कि तभी बदक़िस्मती से गीली ज़मीन पर मेरा पैर फिसल गया और एक बड़े पत्थर से जा टकराया और चाहकर भी मैं अपनी चीख को ना रोक पाया.

जखम खुलते ही खून की एक धार बह निकली और मैं वही पड़ा पड़ा कराहने लगा.वो लड़की मेरी कराह सुनकर दौड़ते हुवे मेरे पास आई और बोली ये चोट कैसे लगी तुम्हे. मैने कहा लंबी कहानी है बाद मे बताउन्गा पहले आप ज़रा मुझे खड़ा होने मे मदद कर दीजिए. तो उसने मुझे सहारा दिया और बेंच पर बिठा दिया और बोली काफ़ी खून बह रहा है तुम्हारा तो.

मैने दर्द भरी आवाज़ मे कहा कि बहुत दर्द हो रहा है.वो कहने लगी दो मिनिट रूको मैं कुछ करती हू .तो उसने मेरे जखम को साफ किया और फिर मेरी शर्ट की आस्तीन को फाड़ कर

पट्टी सी बाँध दी और बोली कि जल्दी से किसी डॉक्टर को दिखा लेना. मैने कहा ठीक है जी. पर मेरी हालत ऐसी थी कि मुझसे खड़ा ही नही हुआ जा रहा था. बहुत ही तेज दर्द हो रहा था.

मैने कहा ज़रा सुनिए आप मेरी थोड़ी सी मदद और कर दीजिए उधर पास मे ही मेरी गाड़ी है.आप मुझे प्लीज़ उधर तक छोड़ दीजिए.वो बोली चलो ठीक है और फिर मुझे सहारा देते हुए वहाँ तक ले आई और मेरी शानदार कार को देखते हुए बोली इतनी महँगी कार... मैने झूठ बोलते हुए कहा कि जी मेरे मालिक की है और फिर जैसे तैसे करके जल्दी से कार मे बैठ गया.

उसके माथे पर उलझन की डोर मैने साफ देख ली थी और मेरा खुद ही बुरा हाल था. तो घायल पैर की वजह से कार ड्राइव करने मे भी बड़ी ही मुश्किल हो रही थी. पर आख़िर कार मैं हवेली के गेट तक पहुच ही गया.कार सीधी मैने अंदर लाकर रोकी और गेट खोलते ही नीचे गिर गया…

हवेली के करमचारी मुझे उठा कर अंदर ले गये और तुरंत ही डॉक्टर को बुलवाया गया.उसने जल्दी से ड्रेसिंग की और पट्टी बाँधते हुवे बोला,ठाकुर साहब आप को मना किया था कि ज़ख़्म ताजे है तो आप बस आराम ही करना पर आप बात मानते ही नही है. देखो अब और भी नुकसान हो गया है. अभी तो आपको बिल्कुल भी बिस्तर से नही उठना हैं, मैने कहा डॉक्टर, वो मेरा पाँव फिसल गया था तो बस फिर लग ही गयी लगी हुई जगहा पर..

डॉक्टर बोला , पर वर कुछ नही आप बस अभी आराम ही करेंगे और ये कुछ दवाइयाँ दिए जा रहा हूँ.टाइम से खानी है. इनके असर से दर्द कुछ कम हो जाएगा पर आप अपनी सेहत का ख़याल रखे तो बेहतर होगा.फिर कुछ देर बाद डॉक्टर चला गया.

उसके जाते ही रंभा बोली मालिक आख़िर आप बात क्यो नही मानते है.मैने कहा,अब पता थोड़ी ना था कि चोट लग जाएगी. वो पूछने लगी कि पर आप कहा गये थे.तो मेरा ध्यान उस रूप दीवानी की तरफ चला गया पल भर के लिए मेरी आँखे मूंद गयी और उसका वो चंद्रमा सा चमकता हुवा चेहरा मेरी आँखो के सामने आ गया.मैं उस कशिश मे जैसे खोने सा लगा था. तभी रंभा की आवाज़ से मैं वापिस ख़यालो से बाहर निकल कर वास्तविकता मे आया. वो बोली कहाँ खो गये आप. मैने कहा कुछ नही बस थोड़ी सी थकान हो रही है. तो उसने कहा आप आराम करे मैं आती हू थोड़ी देर मे.

पर वो बेचारी कहाँ जानती थी कि आकाश को अब कहाँ नींद आनी थी... ज्यो ही वो आँखे बंद करता उसके सामने वो ही खूबसूरत चेहरा आने लगता था. अब आकाश का हाल बुरा हुआ. रात आधी से ज़्यादा बीत गयी थी पर वो बिस्तर पर पड़ा हुवा टेबल लँप का स्विच ऑन ऑफ कर उसकी आँखो से ख्वाब कहीं दूर उड़ चले थे. मन बस करे कि उड़ चलूं और पहुच जाऊ उस बग़ीचे मे जहाँ उस सुंदरी के दर्शन किए थे.

आँखो आँखो मे रात कट गयी सुबह जब नोकर जगाने आया तो उसने देखा कि आकाश तो जगा ही हुआ है.वो वापिस चला गया इधर आकाश तो जैसे किसी शराब की बॉटल में डूब गया हो ऐसा हाल हुआ उसका. खोया खोया सा लग रहा था वो. जब रंभा ने उसको नाश्ता परोसा तो भी उसका ध्यान कही ओर ही था. तो रंभा बोली मालिक नाश्ता कर लीजिए , लगता है, आपको पसंद नही आया. मैं कुछ और बना कर लाती हू.

आकाश- अरे नही ऐसी बात नही है.बस मेरा मन नही कर रहा है.

बात करते करते ही आकाश बिस्तर से उठने लगा तो रंभा टोकते हुए बोली मालिक आप उठ क्यो रहे है.आपकी तबीयत फिर से बिगड़ जाएगी. आप लेटे ही रहे. पर उसने कोई ध्यान नही दिया और अपनी बेंत का सहारा लेकर बेड से नीचे उतर गया पर उतरते ही उसके पैर से साथ नही दिया और वो कराहते हुवे बिस्तर पर फिर से बैठ गया.

रंभा- दर्द हुआ मालिक ! आप से पहले ही कहा था कि मत उठिए !

तो हार कर फिर से बिस्तर ही पकड़ना पड़ा.पर मन जो था वो भटक रहा था एक अजनबी की ओर. फिर कुछ याद ना रहा दवाई के असर से जल्दी ही नींद आ गयी.फिर बस ऐसा ही चलता रहा. १०-१५ दिन बस ऐसे ही कट गये हालत मे भी काफ़ी सुधार सा हो गया था. पर अभी भी बस बिस्तर पर ही पड़ा रहता था. कौशल्या लगभग हर दोपहर मे आ ही जाया करती थी तो उस से बाते करके थोड़ा सा टाइम कट जाया करता था और फिर रंभा भी तो थी..

पर फिर उस दोपहर कुछ ऐसा हो गया की उस तकलीफ़ मे भी मुझे हवेली से बाहर निकलना ही पड़ा.आख़िर ठाकुर आकाश तड़प ही गये उस घटना से.हुआ दरअसल ये था कि कुछ काम से रूपा अपनी सहेलियो के साथ शहर गयी थी तो जब वो जा रही थी तो

रास्ते मे कुछ लड़को ने रूपा से बदतमीज़ी की और उसकी चुन्नि खीच ली थी. रूपा ने रोते हुए सारी बात मुझे बताई.

तो बस मैं तड़प कर ही रह गया. मैने तुरंत ही बंदूक उठाई और अपने सारे दर्द को भूल कर चलते हुवे मैं बाहर आया और किसन से कहा कि कार निकाल जल्दी से.आज ये पहली बार थी जब मेरा स्वर गुस्से से भरा हुवा था. तो किसन ने बिना कुछ कहे तुरंत ही कार दरवाजे पर लगा दी.मैने कहा गाड़ी को शहर के रास्ते पर ले. रंभा मुझे टोकना चाहती थी पर गुस्से से दहक्ती हुई मेरी आँखो को देख कर वो चुप कर गयी.

शहर से कुछ किलोमेटेर दूर मुझे रूपा और उसकी सहेलिया मिल गयी , रूपा दौड़कर मेरे सीने से लग गयी और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी. मैने कहा बस चुप हो जा,मैं आ गया हू. तू ये बता वो किस गाँव के थे तो उसने बता दिया. मैने किसन से पूछा की सुबह शहर जाने वाली बस वापिस कब तक आती है.तो पता चला कि ३ साढ़े तीन तक वापिस आती है मैने कहा गाड़ी को रोड पर लगा दे किसन.

तीन बजने मे थोड़ी देर थी तो मुझे इंतज़ार ही करना था. किसकी इतनी हिम्मत हो गयी जो रूपा की तरफ आँख उठा कर देखे, मेरी रूपा की इज़्ज़त को शर्मसार करे.मुझे खुद पर भी गुस्सा आ रहा था कि ठाकुर आकाश बस अब नाम का ही ठाकुर रह गया क्या जो उसके होते हुवे रूपा को ये अपमान का घूँट पीना पड़ा. रूपा के अपमान की आह मेरे सीने मे क्रोध की ज्वाला बनकर धधकने लगी थी.

मैं गुस्से से पागल हो रहा था. तभी मुझे दूर से बस आती दिखी तो मेरे नथुने फड़कने लगे चूँकि मेरी कार सड़क के बीचो बीच खड़ी थी तो बस ड्राइवर को बस मजबूरी मे रोकनी पड़ी. वो चिल्लाता हुवा बोला बाप का रोड समझा है क्या? हटा कार यहाँ से .मैने कहा साले चुप करके खड़ा होज़ा वरना अगले पल तेरी ज़ुबान हलक से खीच लूँगा. वो सहम गया.

मैने रूपा का हाथ पकड़ा और बस मे चढ़ गया और बोला बता कौन थे वो. तो उसने लास्ट की सीट की तरफ इशारा किया कुछ ६-७ लड़को का ग्रूप था. मैने कहा चुन्नि किसने खीची थी तो उसने उंगली से बता दिया और मैं झपटा उस ओर और सीधा उसकी छाती पर लात मारी और उसको खीच कर बस से उतार लिया और मारने लगा तो उसके जो दोस्त थे वो भी उतर आए .तो किसन ने भी बंदूक उठा ली

मैने कहा नही किसन ये मेरे शिकार है. तू बस देख.तो एक बोला तू कौन है बे साले जो इतना उफन रहा है.क्या हो गया जो थोड़ी छेड़खानी कर ली.कुछ तोड़ तो नही लिया ना इसका. जानता है मेरा बाप कौन है. ये सुनकर मुझे और भी गुस्सा आ गया. मैने कहा हराम की औलाद शूकर मना कि मैने अभी तक नही बताया कि मैं कौन हू और गोर से देख तूने किस का आँचल पकड़ा था.

गोर से देख इसे... ये रूपा है.. आकाश की रूपा , विश्रामगढ़ के ठाकुर आकाश की रूपा.ये सुनते ही उस लड़के के चेहरे का रंग उड़ गया उसके साथ जो भी दोस्त थे वो तुरंत ही मेरे पाँवो मे गिर गये और उस लड़के का पँट मे ही मूत निकल गया. मैं आगे बढ़ा और उसकी कॉलर पकड़ते हुवे बोला साले तेरी इतनी हिम्मत कि तू लड़की का हाथ पकड़ेगा. बुला साले तेरा बाप कौन है, बल्कि तू क्या बुलाएगा मैं ही तुझे और तेरे बाप को आज तुम्हारी औकात दिखाता हू.

मैने कहा किसन बाँध साले को गाड़ी के पीछे और ले चल घसीट कर इसके गाँव मे. मैने कार से रस्सी निकाली और किसन की सहायता से बाँध दिया उसको पीछे. वो बार बार रोते हुए माफी माँगने लगा पर मैं उसको माफ़ नही करने वाला था. मैं जहर भरी नज़रो से उन लड़को को देखता हुआ बोला, हराम जादो अगर कोई तुम्हारी बहन को छेड़ता तो कैसा लगता तुम्हे. लड़कियो की इज़्ज़त करनी सीख लो.तुम्हारी माँ बहन भी तो शहर जाती होंगी.कोई उनके बदन को जब निहारे तो तुम्हे कैसा लगेगा. वो सब माफी माँगने लगे मैने रूपा को कार मे बिठाया और उसकी सहेलियो को कहा कि तुम सब बस मे घर जाओ और बेफिकर हो कर जाओ. मेरे रहते किसी की औकात नही जो विश्रामगढ़ की बहन बेटियो की ओर आँख उठा कर देख सके. मेरे बैठते ही किसन ने कार स्टार्ट कर दी. मैने शीशा थोड़ा नीचे कर दिया ताकि उस कमिने की चीखे सुन सकूँ , सड़क पर घिसते हुए हर पल उसकी चीखे बढ़ती जा रही थी जब हम उसके गाँव मे पहुचे तो उसकी खाल बुरी तरह से उतर गयी थी अंदर का माँस कट कट रहा थाऔर खून तो ऐसे बह रहा था कि बस …

मैने कहा खोल किसन इसे गाँव मे भीड़ जमा होने लगी थी उसका बाप गाँव का ज़मींदार था.उसे पता लगते ही वो दौड़ा हुआ आया और अपने बेटे की हालत देख कर विलाप करने लगा. मैने दहाड़ते हुवे कहा उस लड़के से देख साले तेरा बाप भी इधर है. करवा मेरा जो करवा ना है तुझे. उसका बाप मेरे पाँव पड़ता हुवा बोला ठाकुर साहब इस ना समझ से भूल हुई माफी दे दो इसको. इसके बदले मुझे सज़ा दीजिए पर इसे इलाज की आज्ञा दीजिए.

मैने कहा मुझे कुछ लेना देना नही इससे.चाहे मरे या जिए. पर अगर ये बच जाए तो समझा देना कि आशिक़ी अपनी औकात मे रहकर करे.अगर इस गाँव के किसी भी लोंडे ने मेरे गाँव की छोरियों की तरफ ग़लती से भी देखा. तो ये मेरा वादा है कि इस गाँव को शमशान का ढेर बना दूँगा और वो जो इसके दोस्त थे उनको भी समझा देना कि मोत से ना खेले. वो लोग माफी माँगने लगे फिर मैं रूपा को लेकर उसके घर गया सारी बात सुनकर कौशल्या थोड़ी परेशान हो गयी.

पर मैने उसको दिलासा देते हुवे कहा जब तक आकाश जिंदा है रूपा की तुम चिंता ना करो. कौशल्या मेरा शुक्रिया अदा करने लगी. मैने कहा आप इस घटना के बारे मे मुनीम जी से जिकर ना करना वरना वो परेशान हो जाएँगे और अब मैं भी चलता हू फिर मैने भी हवेली का रास्ता पकड़ लिया.

हवेली आकर मैं धम्म से सोफे पर गिर गया और अपने मूड को ठीक करने की कोशिश करने लगा. रंभा मेरे लिए पानी लेकर आई.मैने अपना गला तर किया और फिर उसको सारी बात बताई. वो बोली अच्छा किया जो सज़ा दी, मैं तो कहती हूँ कि उस कमीने को जान से मार देना चाहिए था. मैने कहा बहुत थक गया हू. एक कड़क चाइ पीला दो. तो रंभा अपने होटो पर जीभ फिराते हुए बोली बस चाइ या कुछ और भी.

मैने कहा क्या बात है आज बड़ी अच्छी वाली बाते कर रही हो. वो बोली कुछ नही बस आपका मूड ठीक कर रही थी. आप मायूस अच्छे नही लगते हो और फिर मैं तो सेविका हू आपकी.मैने कहा चल जा अभी और चाइ ले आ जा. वो जाने के लिए मूडी तो मेरी नज़र उसकी नितंब पर ठहर गयी. ना जाने क्यो वो और मोटी मोटी सी लग रही थी .पर हाय हमारी हालत ऐसी कि बस नज़रो से ही काम चला लेना था.

इसी तरह लगभग एक महीना गुजर गया.सेहत मे काफ़ी हद तक सुधार हो गया था. ज़ख़्म भर गये थे पर उनके निशान रह गये थे.कई दिनो से लिंग भी शांत पड़ा था.तो उसकी खुजली भी कुछ बढ़ गयी थी. पर अब रंभा रात को हवेली मे नही रुकती थी और किसन था तो सुभद्रा को भी नही ठोक सकता था. तो अब क्या करूँ मैने कौशल्या को फोन किया कि मुझे बड़ी याद आ रही है तुम्हारी.तो उसने बताया कि वो कुछ दिनो के लिए अपने बेटे से मिलने जा रही है.आकर वो पक्का मिलेगी. तो उधर भी बस निराशा ही हासिल हुई.

मैने सोचा कि चल फिर आज शाम को उस बगीचे की तरफ डेरा डाला जाए तो क्या पता उस रूप दीवानी से फिर मुलाकात हो जाए. मैने आज सिंपल से पैंट शर्ट पहने और फिर

उधर का रास्ता पकड़ लिया काफ़ी दिनो बाद उधर जा रहा था. तो रास्ता भूल गया पर फिर आख़िर पहुच ही गया. बगीचा वैसा ही था. बिल्कुल खिला खिला सा तो मेरी निगाहें उस अजनबी चेहरे को ढूँढ ने लगी. पर शायद आज वो उधर नही थी. मैने काफ़ी इंतज़ार किया पर वो नही आई. शायद रोज ना आती हो फिर वापिस हवेली आ गया. एक वो बोझिल दिन भी निकल गया.

अगले दिन सुबह सुबह ही रूपा आ गयी. मैने कहा आज इधर का रास्ता कैसे भूल गयी.वो बोली माँ है नही घर पर तो आ गयी. मैने कहा अच्छा किया मैं भी बोर हो रहा था. मैने रूपा को खीच कर अपनी गोद मे बिठा लिया और उसकी गर्दन पर अपनी ज़ुबान फिराने लगा. रुपा कसमसाते हुवे बोली आकाश मत छेड़ो ना फिर मुझे खुद पर काबू करना मुश्किल हो जाता है. मैं अपने दाँत उसकी सुरहिदार गर्दन पर गढ़ाते हुवे बोला फिर आज हो जाना बेकाबू किसने रोका है.

मैं अपने हाथ उपर ले गया और सूट के उपर से ही उसके पुष्ट उभारों को दबाने लगा. रुपा शरमाते हुए बोली आकाश मत छेड़ो मुझे ,मान भी जाओ ना. मैने कहा रूपा बस कुछ देर खेलने दे ना अच्छा लग रहा है. वो शरमाते हुए बोली पर मुझे तुम्हारा वो नीचे चुभ रहा है. मैने रूपा को बेड पर लिटा दिया और उसके उपर चढ़ गया और उसको अपनी बाहों मे दबोच लिया. रूपा के काँपते होठ मुझे अपनी ओर बुला रहे थे. मैने अपने प्यासे लबो पर जीभ फेरी और रूपा के सुर्ख होटो से अपने होटो को मिला लिया. मैं तो कई दिनो से प्यासा था. आज मैं जी भर कर रूपा के शहद से भरे होटो को पीना चाहता था. मैं काफ़ी देर तक उनको चाट ता ही रहा फिर रूपा ने अपना मूह अलग किया और हान्फते हुवे बोली उफफफफफफफफ़ सांस तो लेने दो ज़रा.

मैने उसके सूट को समीज़ समेत उतार कर साइड मे रख दिया. रुपा का उपरी हिस्सा पूरी तरह नंगा हो गया. मैने तुरंत उसकी एक स्तन को अपने मूह मे भर लिया और दूसरी को हाथ से भीचने लगा. रुपा मस्ती के सागर मे गोते खाने लगी. उसने अपने हाथ से मेरे लिंग को पकड़ लिया और उस से खेलने लगी.

१०-१२ मिनिट तक उसके उभारों को चूस चूस कर मैने बिल्कुल ही लाल कर दिया. उसके गाल गुलाबी हो गये थे. अब मैने उसकी सलवार के नाडे पर अपना हाथ रखा और उसको खीच दिया.रूपा ने ज़रा सा भी विरोध नही किया. गुलाबी रंग की कच्छि मे क्या मस्त लग रही थी वो.बस मैं तो मर ही मिटा उसके योवन पर. मैने अपनी नाक उसकी योनि पर रखी तो बड़ी भीनी भीनी सी खुश्बू आ रही थी.

मैं कच्छि के उपर से ही उसको किस करने लगा. रुपा बेड पर नागिन की तरह मचलने लगी .मस्ती उसके रोम रोम मे भरती जा रही थी .तभी रूपा बोली आकाश रुक जाओ ना.सुबह का टाइम है रंभा आती ही होगी थोड़ी देर मे. मैने कहा तू उसकी चिंता ना कर बस मेरा साथ दे. फिर उसने कुछ नही कहा. मैने उसकी कच्छि की एलास्टिक मे अपनी उंगलिया डाली और उसको भी उतार कर फेक दिया.

हल्की रोएँदार बालों के बीच मे छुपी हुई उसको छोटी सी गुलाबी योनि रस से भरी पड़ी थी. मैं अपनी उंगली को उसकी योनि की दरार पर फिराने लगा. रूपा बड़ी मस्त होकर हल्की हल्की सी सिसकारियाँ भरने लगी थी. फिर मैं अपनी उंगली को अंदर घुसाने की कोशिश करने लगा. रुपा ने मेरा हाथ पकड़ लिया और बोली ऐसा ना करो दर्द होता है. मैने कहा और जब इसमे लिंग जाएगा तब.वो शरमाते हुए बोली धात, बेशर्म हो तुम. मैने अपने होटो मे उसकी योनि को भर लिया रुपा जैसे सीधा आसमान की सैर पर पहुच गयी और बोली उफफफफफफफफफफ़ ओह आकाशववववववववववववववव ईईए कैसा जादू कर देते हो तुम. कितना अच्छा लगता है जब तुम वाहा पर क़िस्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्स्सस्स करते ईईईई हूऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ ओह आआआआआआआआाआआआआआआआ

उसकी योनि से जैसे उस गरम मजेदार रस का झरना ही बह चला था. रूपा ने अपनी आँखो को मस्ती के मारे बंदकर लिया था. और मेरे सर को अपनी जाँघो पर भीच ने लगी थी. सुड़ूप सुड़ूप मैं अपनी जीभ को तिकोना कर के उसकी योनि को चाटे जा रहा था. फिर मैं वहाँ से उठा रुपा मेरी ओर ऐसे देखने लगी कि जैसे किसी ने भूखी शेरनी के आगे से शिकार छीन लिया हो.

मैने उसकी जाँघो को फैलाया और अपने लिंग को योनि पर सेट किया ही था कि तभी फोन की घंटी बज उठी तो मेरा मूड भन भना गया मैने रूपा के उपर से हट कर फोन को उठाया और कान से लगा लिया तो दूसरी तरफ थानेदार की आवाज़ जैसे ही मेरे कानो से टकराई कुछ पलो के लिए जैसे मैं सुन्न ही हो गया था. मैने सोचा नही था कि ऐसी न्यूज़ भी मिलेगी.

मैने बस इतना ही कहा कि बस मैं थोड़ी ही देर मे पहुचता हूँ और फटा फट से अपने कपड़े पहन ने लगा. रुपा बोली क्या हुआ मैने कहा एक कांड हो गया है. मुझे अभी जाना होगा. वो अपने कपड़े डालते हुए बोली मैं भी चलती हू. मैने कहा नही तू इधर ही रह, जैसे तैसे मैने अपने तन पर कपड़े उलझाए और फिर गाड़ी लेकर सीधा अपने नदी किनारे वाले खेतो को ओर चल पड़ा.

वहाँ पहुचने मे करीब बीस पच्चीस मिनिट लग गये. मैं जैसे ही वहाँ पहुचा तो देखा कि कुछ लोग जमा थे वहाँ पर और पुलिस की गाड़ी भी खड़ी थी. मुझे देखते ही इनस्पेक्टर मेरे पास आया और बोला कि ठाकुर साहब मेरे साथ आइए मैं उसके पीछेपीछे चल पड़ा और फिर मैने कुछ ऐसा मंज़र देखा की मेरा कलेजा काँप गया. लगा कि जैसे ये क्या हो गया.

मेरी आँखो के सामने एक लाश थी !सुभद्रा की लाश. मैं एक पल मे ही समझ गया था कि मेरे किसी दुश्मन ने ही इसका काम तमाम कर दिया है. पर बात सिर्फ़ वो ही नही थी. दो खेत आगे एक लाश और थी , और उस लाश को देख कर मैं बहुत ही ज़्यादा अपसेट हो गया था.वो जिसे मैं अपना दोस्त मानता था. वो जो मेरे हर काम किया करता था.वो लाश किसन की थी.

अब मेरी आँखो से रुलाई फुट पड़ी. मैं वही उसकी लाश से लिपट लिपट कर रोने लगा. हाई राम!!!!!!!!!!!!!!!!!! ये क्या हो गया. मुझे लगा की जैसे मेरे सर पर जैसे क़यामत ही टूट पड़ी थ. ये सिर्फ़ दो लाशें ही नही थी बल्कि ठाकुर आकाश के चेहरे पर एक करारा तमाचा थी.मेरी आँखो मे जैसे खून उतर आया था. मैने घोर रुदन करते हुए कहा थानेदार आज रात तक मुझे इनके कातिल मेरी आँखो के सामने चाहिए. वरना मैं सब कुछ तहस नहस कर दूँगा.तो इनस्पेक्टर बोला हम कोशिश कर रहे है , वो बोला मैं लाशों को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा देता हू.मैने मना करते हुए कहा नही अब इनकी और मिट्टी खराब नही करनी है. ये मेरे जीवन का एक और दुख था. परिवार तो पहले ही छोड़ कर चला गया था. ले दे कर ये कुछ लोग ही थे.अब सुभद्रा और किसन का भी कतल हो गया था.

कुछ ही देर मे खबर आग की तरह फैल गयी थी और गाँव के कई लोग आ गये थे.मैने अपने हाथो से उन दोनो का अंतिम-संस्कार किया.आख़िर मेरे लिए परिवार ही तो थे वो लोग.मैं खुद को बड़ा कोस रहा था.

उस रात हवेली मे बस घोर अंधेरा छाया हुआ था. एक दीपक भी नही जला था.सब लोग गहरे सदमे मे थे और मेरी आँखो मे भी कुछ आँसू थे, और दिल रोए जा रहा था.उस रात चूल्हा नही जला, बस दिल जल रहा था.

सुबह हुई पर कातिलों का कुछ नही पता चला , उफफफफफफ़ कितना बेबस महसूस कर रहा था. मुझे लगा कि मैं जैसे एक कीड़ा हू जिसे किसी ने कुचल कर छोड़ दिया हो. कितना बेबस था मैं उस कमजोर पल मे. बाग मे परशुराम और बादल दो ही आदमी रहा करते थे तो ना जाने मुझे क्यो उनकी सुरक्षा भी कमजोर लगी.मैने उधर भी १०-१५ आदमी

चौबीस घंटे के लिए छोड़ दिए और सख़्त आदेश दिया कि किसी भी अनहोनी की आशंका हो तो सीधा गोली चला देना.जो होगा देख लें.गे आख़िर अपने हर कर्मचारी की रक्षा मेरी ज़िम्मेदारी थी. मैने एक पिस्टल रंभा को दी और कहा कि इसे हमेशा अपने पास रखना हिफ़ाज़त के लिए. सच तो ये था कि उस घटना से मैं अंदर से बुरी तरह हिल गया था. खुद को इतना अकेला मैने कभी नही पाया था.

२-४ दिन गुजर गये थे पर कातिलों का कुछ अता-पता नही चला था. पर वो कहते है कि भगवान के घर देर है अंधेर नही. उस रात करीब दस बज रहे थे मेरे खेत मे काम करने वाला मजदूर बिरजू भागते हुवे हवेली आया और उसने कुछ ऐसा बताया कि मेरी आँखो मे चमक आ गयी. मैने उसी समय बिरजू और अपने दो चार आदमियो को साथ लिया और सुल्तान पुर जो कि करीब ३-४ कोस दूर का गाँव था. उधर के दारू के ठेके की ओर चल दिए.

वहाँ पहुचते ही मैने बिरजू से इशारा किया. वो बोला हुकुम जब मैं दारू लेने इधर आया वो लोग इधर ही पी रहे थे और सुभद्रा के बारे मे बात कर रहे थे. पर अभी वो दिख नही रहे है .मैने कहा ठेके वाले को बुलाओ ज़रा. मैने उससे कहा भाई करीब दो घंटे पहले कुछ अजनबी लोग इधर दारू पी रहे थे वो किधर गये .वो बोला रे बावले भाई इधर ना जाने कितने अजनबी आते है ..मैं किस किस का ध्यान रखू रे.एक तो मेरा दिमाग़ पहले ही भन्नाया हुआ था. और उपर से उसने मुझे सीधी तरह से जवाब नही दिया. तो मेरी खोपड़ी घूम गयी. मैने एक गोली सीधा उसके पाँव मे मार दी और बोला अब याद आया कुछ .वो ज़मीन पर पड़ा हुवा दर्द से कराहते हुवे बोला, माफी दे दो साहब बताता हू , वो लोग पेशेवर गुंडे है और आजकल पहाड़ी के काली मंदिर पर डेरा डाले हुए है .मैने बिरजू से कहा कि डॉक्टर बुला कर इसकी दवा-दारू करवा देना और फिर मैने गाड़ी काली मंदिर की तरफ घुमा दी.

मंदिर के पीछे जो जंगली इलाक़ा था उधर ही उन्होने अपना टेंट जैसा कुछ लगा कर अड्डा बनाया हुआ था. जाते ही हम लोगो ने उनको धर लिया. वो दारू के नशे मे चूर और मैं अपने क्रोध के नशे मे चूर.३-४ तो वही पर मर गये और २-३ को हम अपने साथ ले आए पर मैं उनको हवेली की बजाय सीधा अपने बाग मे लेकर गया और फिर परशुराम से कहा कि इन सालो की जब तक मरम्मत कर तब तक कि ये बात करने लायक ना हो जाए फिर मेरे आदमियो ने भी दबाकर अपनी भडास निकाली.फिर मैने पूछताछ शुरू की , मैने कहा उन माँ बेटों को क्यो मारा.

पर वो ठहरे ठीठ. तो इतनी आसानी से जवाब नही देने वाले थे. मैने कहा ज़रा चिमटा ले कर आओ और फिर उसकी उंगली के नाख़ून उखाड़ने लगा. वो दर्द से चीख ने लगा पर मैं नही रुका और उसकी दोनो हाथो की उंगलियो के सारे नाख़ून निकाल दि.ए लाल लाल खून चारो तरफ बिखरने लगा. अब मैं दूसरे आदमी की ओर गया और उसकी उंगली को पकड़ लिया. वो चीखते हुवे बोला माफ़ करदो. मैं सब कुछ बता ता हूँ.आपको जो भी पूछना है मैं सब बताता हू. तो उसने कहा कि हमे सुपारी मिली थी सुभद्रा और उसके बेटे को मारने की मैने कहा नाम बता उस का. वो बोला वो मैं नही जानता क्योंकि सुपारी राका ने ली थी जिसे आपने मार डाला.हाँ पर मैं इतना जानता हू कि राका को १ लाख रुपये किसी औरत ने दिए थे.अब मेरा दिमाग़ घूमा.मैं उसे मारते हुए पूछने लगा कि बता साले कौन थी वो बता. पर वो बार बार चीखते हुए बस इतना ही कहता रहा कि कोई औरत थी, कोई औरत थी.

जब मुझे लगा कि वास्तव मे इस को कुछ पता नही है.मैने कहा मार दो दोनो को और लाशों को जानवरो को खिला देना. मैने परशुराम को समझाया कि चोकन्ने रहना और सब लोग साथ ही रहना. अकेले ना रहना. आजकल अपना टाइम कुछ ठीक नही है.तो होशियार रहना फिर मैं हवेली आ गया और सोचने लगा कि कौन औरत हो सकती है वो.मैने रंभा को बुलाया और कहा कि रंभा तू कितनी औरतो को जानती है जो लाख रुपये झटके मे खरच कर सकती है. वो बोली मालिक लाख रुपये कितनी बड़ी रकम होती है ,हम ग़रीबो के पास कहाँ से आए. मैने कहा गाँव मे बता वो बोली मालिक, मेरे हिसाब से तो गाँव मे ३-४ औरते ही होंगी जिनके पास इतना रुपया हो सकता है. मैने कहा बता ज़रा वो बोली एक तो सरपंच की पत्नी, सुना है सरकारी पैसा खूब दबाया है सरपंच ने.मैने कहा और वो बोली फिर सुनार जी के पास भी खूब धन है आख़िर धंधा भी ऐसा ही है. हलवाई रामचरण के पास पैसा तो है पर इतना नही होगा कि लाख रुपये जोरू को दे दे. पर मालिक … ………. ………… ….. मैने कहा बोल तो सही. वो बोली मालिक आप को बुरा लग जाएगा. मैने कहा अरे तू बोल ना.. तो रंभा बोली मालिक मुनिमाइन के पास भी बड़ी रकम है……

पर मुझे कौशल्या पर पूरा भरोसा था. ये बात रंभा भी अच्छी तरह से जानती थी. पर एक बात जो मुझे भी थोड़ी सी खटक रही थी कि बार बार बुलाने पर भी कौशल्या आजकल कोई ना कोई बहाना मार के कट लिया करती थी.आख़िर ये सब हो क्या हो रहा था. मैं बड़ा ही परेशान हो चला था. इस बीच एक महीना और गुजर गया था. पर इस बीच कोई भी अप्रिय घटना नही हुई.

१७

मेरी सेहत भी काफ़ी हद तक सुधर गयी थी.एक शाम में ऐसे ही बाहर घूमने जाने की सोच रहा था. मैं अचानक से ही उस छोटे से बगीचे की तरफ हो लिया इस उम्मीद मे कि वो हसीना क्या पता फिर से मिल ही जाए. पता नही कुछ तो कसिश थी उसकी उन नशीली आँखो मे , वैसे तो उसने मना किया था कि इधर ना आना. पर हम ठहरे हम.

मैने अब अपनी गाड़ी काफ़ी दूर खड़ी की और पैदल चलते हुवे झाड़ियो को पार करके उधर पहुच गया.कुछ भी तो नही बदला था. वहाँ पर हर एक चीज़ खिली खिली सी हुई. लगता था कि कोई बड़े ही प्यार से उस जगह को आबाद करने मे लगा हुआ था. और मुझे भी बड़ा अच्छा लगता था इधर आकर.मैं उसी बेंच पर बैठ गया और दो पल के लिए अपनी आँखे मूंद ली कि तभी एक मिशरी सी आवाज़ मेरे कानो मे जैसे घुलती ही चली गयी.मैने आँखे खोली तो मेरे ठीक सामने वो ही हसीना खड़ी थी. गोद मे एक खरगोश लिए. वो मुझे देखते हुए बोली कि अरे तुमको मैने कहा था. ना उस दिन, इधर फिर ना आना. फिर क्यो चले आए. तुम मुझे जानते नही हो मैं कौन हू.

मैने कहा जी आपका बगीचा है ही इतना मनमोहक कि मैं खुद को रोक ही नही पाया इधर आने से. वरना मेरी क्या मज़ाल जो हुजूर की शान मे गुस्ताख़ी कर सकूँ.वो बोली क्या तुम्हे अच्छा लगता है इधर आना.मैने कहा जी बहुत. वो बोली ठीक है तो तुम आ सकते हो पर रोज नही कभी कभी और हाँ इधर आओगे तो बगीचे को सँवारने मे मेरी मदद भी करनी होगी. मैने कहा जी जैसा आप कहें, वो भी मेरे सामने वाली बेंच पर आकर बैठ गयी और बोली तुम इधर के तो नही लगते हो. तुम्हारा रंग रूप कुछ अलग सा है.मैने कहा जी उस दिन आपको बताया भी तो था कि मैं एक मुसाफिर हू. उसने पूछा –कहाँ रहते हो. मैने झूठ बोलते हुए कहा कि जी वो जो दूर पहाड़ियाँ है ना उनके पीछे जो डॅम बन रहा है उधर ही काम करता हू. वो बोली इतनी दूर से इधर आते हो. मैने कहा जी अब जी इधर ही लगता है तो आ जाता हू.

उसने फिर से पूछा- नाम भी होगा कुछ तूम्हारा,- जी किसन, अपने आप ही मेरे मूह से निकल गया. वो बोली ये कैसा ग़रीबो सा नाम है तुम्हारा, किसन... पुराने जमाने वाला.मैने कहा जी अब जो है वो ही है अगर आप चाहे तो आप किसी और नाम से बुला सकती है. वो बोली नही मैं भी किसन ही बुलाऊंगी, मैने कहा अगर आपकी आज्ञा हो मैं एक बात पुछु.

वो बोली कहो- मैने कहा जी आपका नाम क्या है. वो मुस्कुराते हुए बोली क्या करोगे मेरा नाम जानकर.मैने कहा जी करना तो कुछ नही है पर अगर नाम पता होता तो ठीक रहता. वो बोली मेरा नाम सुनैना है और यही कुछ दूरी पर मेरा घर है. तुम देखोगे.मैने कहा जी ज़रूर तो उसने कहा फिर मेरे पीछे आओ मैं चुप चाप से उसके पीछे-पीछे चलने लगा.

करीब १५ मिनिट तक हम खामोशी से पेड़ो के बीच बने कच्चे रास्ते पर चलते रहे, फिर एक झुर्मुट के पीछे से उसने मुझे कहा. देखो ये है मेरा घर. मैने देखा कि एक बेहद ही विशाल सफेद संगमरमर की चमकती हुई इमारत खड़ी थी. जिसे देख कर मेरी आँखे चौंधियाँ गयी. मैने कहा तो आप इस महल की मालकिन है.वो हँसते हुए बोली नही.मैं तो इधर काम करती हू नौकरानी का ! तो मालिक लोगो ने इधर ही एक कमरा रहने को दिया हुआ है और इस बगीचे की जो ज़मीन है ये भी बड़ी मालकिन ने मुझे मेरे काम से खुश होकर दी है. ये बताते हुए उसकी आँखे गर्व से चमक रही थी. मैने कहा पर आप नौकरानी तो लगती नही हो. मेरा मतलब आप इतनी सुंदर है आपके कपड़े इतने अच्छे.

वो बोली तो तुम भी कौन सा ड्राइवर लगते हो. मैने कहा पर मैं तो हूँ ही.वो तपाक से बोली मैं भी नोकरानी ही हूँ.ये सब गहने और कपड़े तो हमारी मालकिन की बड़ी बेटी की है. उनके बड़े शौक है तो मुझे मिल जाते है ये कपड़े पहन ने को. तभी मेरे दिमाग़ मे एक सवाल आया.मैने कहा और आपके मालिक का क्या नाम है. वो बोली ठाकुर रविंद्रनाथ.

ओह ओह तो इसका मतलब था कि इस समय मैं संग्रामगढ़ मे खड़ा था. , कच्चे रास्ते की भूल भुलैया मुझे ये कहाँ ले आई थी. फिर भी मैने कनफार्म करने के लिए पूछा जी आपके गाँव का नाम क्या था. वो मैं भूल गया वो बोली संग्रामगढ़ मे हो तुम इस समय. मैने कहा हाँ याद आया काफ़ी अच्छा गाँव है आपका .वो सवाल करते हुए बोली-तुम कब गये थे गाँव मे.

मेरी चोरी पकड़ी गयी थी. मैने किसी तरह बात को संभालते हुवे कहा कि जी जब आप का घर ही इतना सुंदर है तो गाँव भी सुंदर होगा. इसी लिए बोल दिया.वो थोड़ा सा शरमाते हुए बोली. वैसे बाते बड़ी अच्छी करते हो. मैने कहा आप भी तो कितनी अच्छी हो. थोड़ा थोड़ा सा अंधेरा होने लगा था तो उसने कहा चलो अब मैं चली काम भी करना होगा.

मैने कहा जी अच्छा मैं भी चलता हू.कुछ दूर चला ही था कि उसने आवाज़ दी. मैं मूड गया. उसने कहा वैसे मैं हर मंगल , और शनिवार को इधर शाम को होती हू और पलट कर तेज

तेज कदमो से आगे को बढ़ चली और मैं ना जाने क्यो मुस्कुरा पड़ा और फिर मैं भी अपने आप से बाते करता हुआ कार तक आया और फिर अपने गाँव की ओर चल पड़ा.

हवेली आया तो मेरा मूड बड़ा ही खुश खुश सा था. रंभा रसोई मे थी मैं उधर ही चला गया और उसको अपनी बाहों मे भर लिया. मैने उसको रसोई की दीवार से सटा दिया और उसके लाल लाल होटो पर किस करने लगा. वो बोली छोड़िए ना कोई आ जाएगा. मैने कहा किसकी मज़ाल जो मेरे और तुम्हारे बीच मे आए और वैसे भी कई दिन हो गये है तुम्हे प्यार नही किया है .वो बोली पहले मुझे रसोई का काम समेट लेने दें फिर मैं आती हू आपके पास.

मैं उसकी नितंब पर चिकोटी काट ते हुवे बोला थोड़ा जल्दी कर के आना.वो एक आह भर कर ही रह गयी थी. मैं आकर बाल्कनी मे डाली कुर्सी पर बैठ गया और सुनैना के बारे मे सोचने लगा. कितनी अच्छी थी वो कितनी सुंदर. कुछ तो बात थी उसमे जो मेरा मन बार बार उसकी ओर भागने लगा था. ये ठंडी हवा क्या संदेशा लेकर आ रही थी. मैं समझ नही पा रहा था.

मैं बेसब्री से रंभा का इंतज़ार कर रहा था. तो करीब घंटे डेढ़ घटने बाद रंभा कमरे मे आई गीले बालों को देखकर मैं समझ गया था. कि नहा कर आई है. मैने कहा ये अच्छा किया जो नहा लिया. अब तो मज़ा ही आ जाएगा. मैने उसे अपन बेड पर खीच लिया और उसके शरीर से छेड़ खानी करने लगा. मैने अपना हाथ उसकी साड़ी के अंदर घुसा दिया और उसकी केले के तने जैसी चिकनी सुडोल टाँगो पर फिराने लगा तो उसके बदन मे सुरसूराहट बढ़ने लगी.

रंभा ने अपने ब्लाउज के बटन्स को खोल दिए और उसे उतार दिया और अपने एक स्तन को मेरे मूह मे देने लगी. मैं उसकी स्तन पर अपनी जीभ फिराने लगा.उधर साड़ी के अंदर अब मेरे हाथ उसके कुल्हो पर पहुच गये थे और मैं कच्छि के उपर से ही उनको दबा रहा था. बड़े बड़े गोल मटोल और रूई से भी मुलायम नितंब . रंभा की स्तनों के स्तनाग्र अब तनने लगे थे और उसकी आँखो मे चढ़ती हुवी खुमारी मुझे भी महशूस होने लगी थी.

वासना का सागर हम दोनो के शरीर मे हिलोरे मारने लगा था. मैने रंभा को खड़ी किया और उसकी साड़ी उतार कर उसे नंगी कर दिया और फिर से अपनी बाँहों मे ले लिया. उसके

सुर्ख होटो पर लगी लिपीसटिक को चाट ते हुवे मैं उसे छूने जा रहा था. जबकि उसका हाथ अब मेरे कच्छे मे घुस कर मेरे लिंग को थाम चुका था. रंभा थरथराते हुवे बोली मालिक अब जल्दी से अपने इस मूसल को मेरी योनि मे घुसा दीजिए, अब सहा नही जा रहा है.मैने कहा अभी कहा.. अभी तो पहले जी भर कर तेरे इस हुस्न का दीदार करूँगा.

तू पहले ज़रा मेरे लिंग को चूम तो सही. तो रंभा मेरी टाँगो के बीच मे बैठ गयी और मेरे लिंग पर अपने होठ टिका दिए और उपर उपर से उसको चूम ने लगी फिर दो पल बाद ही उसने लिंग की खाल को हटा कर सुपाडे को बाहर निकाला और उस को अपने मूह मे ले लिया. नाज़ुक खाल पर उसकी गरम जीभ के असर से मेरे बदन मे एक झनझनाहट ही फैल गयी. मैने अपने हाथ अपनी कमर पर रख लिए और उसे लिंग चूस्ते हुवे देखने लगा. मैने कहा रंभा अपने हाथ से गोलियो को सहला.वो वैसा ही करने लगी और मेरा मज़ा दुगने से भी दुगना हो गया था.

कई देर तक मैं ऐसे ही उसे अपना लिंग चुसवाता रहा. अब मैने उसे बेड पर घोड़ी बना दिया और उसके मस्त नितंबों को फैलाते हुवे अपने लिंग को योनि पर सटा दिया. रंभा ने एक मीठी सी झुरजुरी ली और मैने उसकी कमर पर अपने हाथ रखते हुवे लिंग को योनि मे घुसाना शुरू कर दिया. लिंग योनि की फांको को फैलाता हुवा रंभा की योनि मे जा रहा था. और वो अपनी टाँगो को आपस मे चिपका रही थी. उसके चौड़े नितंबों को सहलाते हुवे मैं अपने लिंग को आगे पीछे करने लगा था. रंभा आहें भरते हुवे बोली मालिक थोड़ा सा धीरे धीरे कीजिए ऐसे ही मज़ा आ रहा है. मैने कहा ठीक है जैसे तू कहे.

मैं उसकी गरदन पर चूमने लगा तो कामोत्तेजित और भी भड़कने लगी उसके जिस्म मे. अब मैने उसकी कमर पर अपने दोनो हाथ डाल कर उसे कस लिया और उसकी ठुकाई शुरू कर दी तो रंभा भी अपनी नितंब को पीछे कर कर के मेरा पूरा साथ देने लगी थी.उसका जिस्म इतना कसा हुआ था कि किसी कन्या का भी ना था. रंभा घोड़ी बनी हुई मेरे हर एक प्रहार को अपनी योनि मे झेल रही थी. उसकी पायल की खनखन सुनकर ठुकाई का मज़ा और भी बढ़े जा रहा था.

करीब दस मिनिट तक उसे घोड़ी बना ने के बाद मैं बेड पर लेट गया और उसे अपने उपर ले लिया. मैं उसके नितंबों को दबाते हुवे उसके गुलाबी होटो को अपने मूह मे लेकर खाने लगा.कभी कभी मैं वहाँ पर अपने दाँतों से भी काट लेता था. वो चिहुनक जाती थी.पर इस खेल मे ये छोटी मोटी चुहलबाजी तो चलती ही रहती है. रंभा ने योनिरस मे लथपथ मेरे लिंग को फिर से अपनी योनि पर रगड़ना शुरू किया और फिर वो लिंग पर बैठ गयी.

उसकी झूलती हुई छातिया बड़ी ही मनमोहक लग रही थी .लगा कि सारी उमर बस उनको ऐसे ही देखते रहूं.रंभा अब लिंग पर उछल रही थी. उसकी सुंदर नाभि बड़ी ही प्यारी लग रही थी. मैने अपने हाथो मे उसके उभारों को थाम लिया और बड़े ही प्यार से हौले हौले उनको सहलाने लगा .रंभा मंद मंद मुस्कुराने लगी. ठुकाई का खेल अपनी पूरी रफ़्तार से आगे बढ़ा जा रहा था. दोनो के बदन मे शोले फुट रहे थे. अब मैने उसको अपने नीचे ले लिया और उस पर चढ़ कर ठोकने लगा.

उसके निचले होठ पर अपने दाँतों के निशान बनाते हुए उसकी प्यारी योनि मारने मे बड़ा ही मज़ा आ रहा था. रंभा की छातिया मेरे बोझ तले दबे हुई जा रही थी. उसने अपनी दोनो टाँगे मेरी कमर के इर्द-गिर्द लपेट दी और हम दोनो एक दूजे मे समाए हुए उन पलों का मज़ा लूटने लगे थे.रंभा की योनि की फांके बार बार लिंग पर जैसे चिपक सी जाती. सच मे उसकी योनि मारने मे बहुत ही मज़ा आ रहा था. रंभा अब मेरे कानो पर काटने लगी थी. उफ़फ्फ़ ये औरत के जिस्म की गर्मी अच्छे अच्छे को पिघला कर रख दे एक पल मे ही. हमारी ठुकाई चल रही थी. रंभा भी नीचे से अपनी कूल्हे मचका मचका कर लुफ्त ले रही थी.

करीब ४०-४५ मिनिट तक हम दोनो ऐसे ही एक दूजे मे समाए रहे .इस बीच रंभा झड चुकी थी पर फिर भी मेरा साथ दे रही थी और फिर मेरे लिंग से वीर्य की धारे निकल कर उसकी योनि मे गिरने लगी. मैं भी आनंद के सागर मे जैसे डूब गया. मैं उसके उपर ही पड़ा रहा जब तक कि उसकी योनि ने वीर्य की अंतिम बूँद तक को अपने अंदर ना सोख लिया. फिर रंभा उठी और बोली मालिक आपने अंदर ही छोड़ दिया , कुछ दिनो पहले ही मेरा महीना हुआ है. कही बच्चा ना ठहर जाए. मैने कहा चिंता ना कर कुछ नही होगा.और अगर कुछ होगा मैं हूँ ना. तू क्यो फिकर कर रही है. फिर उसने अपने कपड़े पहने और जाने लगी ,मैने कहा यहीं सो जा.वो बोली नही मालिक रात को गेट पर रहने वालों को चाइ देनी पड़ती है.कही आँख लग गयी फिर परेशानी होगी. वो चली गयी और मैं बिस्तर पर अकेला रह गया.

१८

अगले दिन मैं पैदल ही हवेली से निकल गया और पीछे पहाड़ो की तरफ चल पड़ा. मेरे मन मे कई तरह के सवाल थे जिनके जवाब मुझे तलाश करने थे हर हाल मे. आख़िर कौन था जो इतनी घहरी पैठ रखता है कि हवेली की. इतनी कड़ी सुरक्षा होने के बाद भी ये खत छोड़ जाए कि आकाश ठाकुर हवेली का सूरज जल्दी ही अस्त हो जाएगा. दरअसल बात ये थी कि कल रात रंभा के जाने के बाद मैं तो सो गया था.

पर जब मनोहर जो कि हवेली की चोकीदारी का काम कर रहा था. वो पेशाब करने के लिए जब कुँए की पिछली तरफ उगी हुई झाड़ियो मे गया तो उसे एक पोटली मिली. जिसमे वो खत था. जाहिर है ये मेरे लिए परेशानी वाली बात थी. क्योंकि चार दीवारी भी काफ़ी उँची करवा दी गयी थी फिर भी कोई हवेली मे घुसकर कैसे वो पोटली छोड़ कर जा सकता था. मैं सवालो में बुरी तरह से उलझा हुआ था.

किस पर भरोसा करू किस पर नही करू कुछ समझ नही आ रहा था. हवेली के चारो और मजबूत बौंडरी बनवा दी गयी थी. तो मतलब ही नही पैदा होता था कि कोई बाहर से या दीवार फाँद कर घुस सके.इसी कशमकशम मे मैं उलझा हुआ था.आख़िर जब कोई अंदर घुस सकता है तो कल को कोई कांड भी कर सकता है.मैं इन सवालो की भूल भुलैया मे उलझ कर रह गया था.आख़िर कोई तो मददगार मिले जो इस मुसीबत का हल निकालें.

तराई मे दूर दूर तक मैदान था. जो कि झाड़ झंखाड़ और पेड़ो से ढका हुवा था. मैं उधर ही चलने लगा करीब १ कोस के बाद इलाक़ा और भी गहराई मे जाने लगा तो पेड़ पोधो की कतार और भी लंबी होने लगी थी. सुनसान इलाक़ा और दूर दूर तक किसी इंसान का पता नही. मेरे माथे से पसीना निकला पर मैं आगे और आगे चलता रहा और फिर मुझे कुछ ऐसा दिखा जिसकी मुझे बिल्कुल भी उम्मीद नही थी. मैं तेज़ी से दौड़ ते हुए उस ओर गया..

ये तो सफेद कलर की फ़ोर्ड गाड़ी थी.गाड़ी को इस तरह से छुपाया गया था कि बिल्कुल पास आने पर ही पता चले. वरना बाहर से तो किसी को सपना भी ना आए कि इधर एक गाड़ी छुपाई गयी है. देखने से ही पता चलता था कि गाड़ी कई दिनो से इधर ही खड़ी थी. टायरो मे हवा भी कम ही लग रही थी. मैने गाड़ी की नंबर प्लेट पर पड़ी धूल हटाई तो मेरी आँखे चमक उठी और मन परेशान हो गया.ये कार कौशल्या की थी और अगर कार यहाँ है फिर कौशल्या कहाँ है. मेरा दिल जोरो से धड़कने लगा. मैने जेब से फोन लिया और

कौशल्या का नंबर मिलाया पर उस जगह पर नेटवर्क था ही नही.मैं सोचने लगा कि इतनी झाड़ झंखाड़ वाली जगह पर कोई इस गाड़ी को लेकर आया कैसे. रास्ता इधर ही कही होगा मैं गाड़ी को छोड़ कर रास्ता ढूँढने लगा

थोड़ी देर बाद मुझे एक कच्ची सड़क दिखाई दी. जिज्ञासा वश मैं उधर ही चल पड़ा. घने पेड़ो के बीच से ये रास्ता बनाया गया था और इतना अंधेरा था पेड़ो की वजह से की साफ साफ दिखना बड़ा ही मुश्किल था. पर मैं धीरे धीरे आगे चला जा रहा था. टेढ़ा मेढ़ा होते हुए वो रास्ता जब ख़तम हुवा. मैने देखा कि एक झोपड़ी सी थी पर वहाँ कोई दिखाई नही दे रहा था. मैं अंदर चला गया वहाँ जाकर देखा तो खाने पीने का समान पड़ा था. जैसे कि कोई कल या परसो ही ईस्तेमाल किया गया हो. मेरे दिमाग़ की सारी नसें जैसे फटने को ही हो रही थी. मैं झोपड़ी की तलाशी लेने लगा. तभी मेरा पैर किसी चीज़ से टकराया मैं दर्द से बिल बिला उठा ये कोई कुण्डा सा था जो फर्श मे लगाया गया था.

मैने उसे खोला तो देखा कि नीचे की ओर जाने के लिए सीढ़िया बनी हुई थी मैं नीचे उतर गया. रास्ता सांकरा सा था. पर इतना था कि आदमी सीधा होकर चल सके. मैं आगे आगे बढ़ता गया.कुछ अंधेरा सा था. मैने मोबाइल की टॉर्च जला ली. करीब ३० मिनिट तक मैं नाक की सीध मे चलता रहा फिर जाके थोड़ा थोड़ा सा उजियारा दिखाई देने लगा और उपर जाने के लिए सीढ़िया भी दिखी.

मैं उपर चढ़ने लगा. जब मैं उपर चढ़ा तो देखा कि मैं तो हवेली मे ही वापिस आ गया हू. अब बारी मेरे आश्चर्यचकित होने की थी. ये हवेली का वो कमरा था. जिसमे दादा जी रहा करते थे .अब मेरी समझ मे एक बात तो आ गयी थी कि जो भी हवेली मे आया था वो इसी रास्ते से आया था. क्योंकि जो भी चौकीदार थे वो सब गेट पर ही बने कमरों मे रहते थे. हवेली मे आने का हक़ बस मुझे और रंभा या कुछ ही लोगों को ही था.

लेकिन वो रास्ता किसने बनाया ? ज़रूर वो पुराना रास्ता होगा.क्योंकि अक्सर ऐसी जगहों मे ख़ुफ़िया रास्ते भी बनाए जाते रहे है.पर कौशल्या की कार वहाँ पर क्या कर रही थी. मैने कौशल्या को फोन किया तो पहली ही घंटी मे फोन उठ गया.मैने सीधा पूछा कहाँ हो तुम और कब तक आओगी.तो उसने कहा कि मैं मेरे बेटे के पास हूँ और दो चार दिन मे आ जाऊंगी.

मेरे दिमाग़ मे कुछ शक़ का कीड़ा बुलबुलाने लगा था. मैने तुरंत ही रूपा को बुलावा भेजा तो पता चला कि वो स्कूल गयी हुई है. मैं सीधा स्कूल ही पहुच गया. मैने कहा रूपा तेरा

भाई जहाँ पढ़ता है उधर का अड्रेस दे अभी और इस बारे मे किसी को मत बताना. तो उसने कुछ नही पूछा और पता दे दिया.मैं उसी टाइम उस शहर के लिए निकल पड़ा.

वहाँ पहुचते पहुचते मुझे अगली सुबह ही हो गयी थी. आँखे नींद मे डूब रही थी. बदन थक कर चूर हो रहा था. पर मुझे अब जल्दी से जल्दी कौशल्या के बेटे से मिलना था. मैं करीब ११ बजे उसके कॉलेज के विज़िटर्स ऑफीस मे था. उन्होने कहा आप थोड़ा इंतज़ार करें हम बुलवा रहे है , जैसे ही मैने कौशल्या के बेटे को देखा. कुछ ख़ास नही लगा वो मुझे .दुबला पतला सा आँखो पर नज़र का चश्मा, मैने उसे अपना परिचय दिया और कहा कि माँ कहाँ है. वो बोला माँ इधर क्या करने आएँगी.

जब भी आता हूँ, मैं ही गाँव आता हूँ .आज तक वो कभी आई ही नही इधर. नही कभी बापू आए है. बस पैसे भेज देते है टाइम टू टाइम. मैने कहा पर वो तो कह रही थी कि तुमसे मिलने आ रही हैं. पर उसने तो मना कर दिया .अब मैं और भी उलझ कर रह गया था. आख़िर कुछ तो राज था. कुछ तो खिचड़ी बन रही थी. पर क्या था वो मुझे पता नही चल रहा था. मैने फ़ैसला किया कि वापिस हवेली ही चला जाए.

हवेली आने के बाद मैं इसी पेशो-पेश मे था. रात घिरी आई थी. रंभा अपने घर जा चुकी थी. मैने सोचा कि क्यो ना आज रात हवेली को अच्छे से देखा जाए आख़िर इतने कमरे थे जो अब भी बंद पड़े थे. कुछ तो मिलेगा ही, कोई तो राज़ है जिसका मुझे पता नही था. मैने एक एक कमरे को खंगालना शुरू कर दिया. दो-चार कमरो मे तो बस कपड़ो गहनो के अलावा कुछ ना मिला.कुछ मे किताबें और फालतू की चीज़े पड़ी थी.

पर मैं तलाश करता रहा. आख़िर मे मुझे एक कमरे मे एक बॉक्स मे एक चाँदी का हार मिला.उसे देख कर मुझे लगा कि ऐसा का ऐसा हार मैने कही तो देखा है. पर याद नही आ रहा था. काफ़ी याद करने पर भी याद नही आया. मैने उसे साइड मे रखा और फिर से चीज़ो को तलाशने लगा.आख़िर एक कमरे मे मुझे कुल दस्ता वेज मिल गये करीब पाँच साल पुराने थे धूल मे पड़े हुए.

कुछ की हालत तो बहुत ही ख़स्ता हो चली थी, पर उनमेंसे कुछ इंपॉर्टेंट भी थे.पता चला उसमे हमारे खानदान की संपत्ति का ब्योरा था. पर उसमे जो लिखा था वो रकम और मिल्कियत बहुत ज़्यादा थी. जबकि वकील और मुनीम ने जो बताई थी वो तो इस से काफ़ी कम थी. तो मेरा दिमाग़ घूमा और मैन बात ये थी कि दादाजी तो बीमार ही थे और मैं यहाँ था नही तो आख़िर कितना पैसा खर्च हुआ होगा.

मैने वो कागज साइड में रखे और फिर से अपने काम मे लग गया.एक बात तो पक्का हो गई थी कि दाल पूरी ही काली थी.

सुबह तक मैने काफ़ी कुछ खंगाल मारा था. पर उन प्रॉपर्टी के पुराने पेपर्स के अलावा कुछ काम की चीज़ नही मिली थी. मैं हवेली से निकल कर सीधा वकील की पास शहर गया और वो कागज वहाँ पर रखते हुए पूछा कि …………ये पेपर्स तो प्रॉपर्टी के बारे मे कुछ और ही कहते है. तो उसके माथे पर परेशानी के बल पड़ गये.मैने कहा ५ मिनिट मे सब सच बता. वरना, फिर तुम जानते ही हो. वो बोला ठाकुर साहब सच मे आपकी प्रॉपर्टी बहुत ही ज़्यादा है .पर कौशल्या जी के दबाव मे मुझे ऐसा करना पड़ा. मैने कहा और कोन कौन है उसके साथ. वो बोला जी मुझे नही पता मुझे कौशल्या ने ही कहा था और मोटी रकम भी दी थी ऐसा करने के लिए.

मैने कहा असली पेपर्स कहाँ है और सबसे इंपॉर्टेंट बात बता कि जब अगर कौशल्या को प्रॉपर्टी का ही लालच था. तो मुझे यहाँ क्यो बुलाया गया. चुप चाप से ही क़ब्ज़ा क्यो नही कर लिया. वकील घबराई हुई सी आवाज़ मे बोला,ठाकुर साहब आपने शायद वसीयत ठीक से नही पढ़ी. उसमे ये लिखा था कि अगर किसी कारण से आकाश प्रॉपर्टी को क्लेम ना कर पाए तो ये सब कुछ सरकार के पास चला जाए और उनकी निगरानी मे एक अनाथालय बना दिया जाए.

इस लिए आप को बुलाना यहाँ पर मजूबूरी थी, आपके बिना सारी प्रॉपर्टी लॅप्स हो जाती. मैने कहा वकील जो भी बात तेरे मेरे बीच मे हो रही है वो तूने अगर लीक की तो मेरा वादा है कि तेरी लाश कही पड़ी हुई मिलेगी. वो बोला माफ़ कीजिए आकाश साहब आगे से मैं पूरी वफ़ादारी करूँगा.

शाम को मैं सुनैना से मिलने उसी बगीचे मे चला गया. ना जाने क्यो उस से मिलकर बड़ा ही अच्छा लगता था.जब मैं वहाँ पर पहुचा वो खरगोशो के साथ खेल रही थी. मुझे देख कर बोली मुसाफिर, काफ़ी दिनो मे आए हो इधर. मैने कहा जी वो कुछ काम से बाहर जाना हो गया था. पर समय मिलते ही इधर आ गया. वो बोली अच्छा किया मेरा भी बड़ा मन हो रहा था तुमसे बाते करने का. मैने कहा सुनैना जी अगर आप बुरा ना मानें तो एक बात पुछु. वो बोली हम कहो क्या बात है.

मैने कहा जी वो कल रात कुछ लोगो से मुझे विश्रामगढ़ और संग्रामगढ़ के ठाकूरो की कहानी के बारे मे पता चला. पर मुझे यकीन नही हुआ. तुम तो इधर महल मे रहती हो.तुम्हे

तो पता ही होगा. वो बोली बात पुरानी है .मुझे इसके बारे मे कुछ ज़्यादा पता नही है. मैने कहा कि वो लोग कह रहे थे कि वसुंधरा देवी को उनकी माँ ने ही जहर दे दिया था.

तो सुनैना के चेहरे पर गुस्से से लाली आ गयी पर तुरंत ही उसने अपने आप को संयंत कर लिया और बोली ऐसा कुछ नही हुआ था. बल्कि उनकी मौत तो महल मे हुई ही नही थी. मैने कहा तुम्हे कैसे पता. वो बोली पता है मुझे. उसकी एक बात से मेरे अंदर एक हलचल मच गयी थी. पर मैने खुद को संभाल लिया था. आख़िर सुनैना झूट क्यो बोलेगी

मैने कहा सुनैना तुम्हे जो भी पता है क्या तुम मुझे बताओगी. मुझे बहुत ही उत्सुकता हो गयी है.उसने एक ठंडी आह भरी और कहा कि देखो मुझे पक्का तो नही पता कि आख़िर ठाकुर अश्विनप्रताप सिंग और रुद्रसेन के बीच ऐसी कौन सी बात थी जिस से वो एक दूसरे से नफ़रत करने लगे थे पर ये भी सच है कि अश्विनप्रताप सिंग और वसुंधरा एक दूसरे से प्रेम करते थे.और फिर इसी बात को लेकर काफ़ी बड़ा कांड भी हो गया था. पर फिर भी दोनो प्रेमियो का ब्याह हो गया था. और उनका बेटा भी हो गया था. पर फिर एक दिन वसुंधरा को उनकी माँ सारी बाते भूलकर इधर यानी संग्रामगढ़ ले आई और फिर वसुंधरा जी की मौत हो गयी जिसका इल्ज़ाम उनकी माँ पर लगा.

मैने कहा हम इतना तो पता है मुझे और फिर उनकी माँ को जैल हो गयी थी.वो बोली हाँ पर जैसा कि सब मानते है कि उनको जहर उनकी माँ ने दिया था. पर वास्तव मे ऐसा कुछ हुआ ही नही था.

मैने कहा सुनैना क्या तुम मुझे पूरी कहानी शुरू से बताओगी. तो उसने कहा कि, नही.. वो उस सबके बारे मे बात नही करना चाहती है. पर उसके चेहरे पर एक गुस्से की लकीर को मैने देख लिया था. मैने कहा, मैने कभी भी ज़िंदगी मे महल नही देखा है. क्या तुम मुझे दिखाओगी. तो उसने कहा कि वो कैसे तुम्हे दिखा सकती है. अगर मालिक लोगो ने देख लिया तो उसकी नौकरी पे बन आएगी .मैने भी फिर कुछ ना कहा. उसके साथ वक़्त बिता कर बड़ा ही अच्छा लग रहा था. पर फिर अंधेरा घिरने लगा था तो घर आना ही था.

दो चार दिन ऐसे ही गुजर गये और फिर हवेली मे कौशल्या आई.मैने कहा कहाँ गयी थी तुम कितने दिन लगा दिए आने मे. तो उसने बताया कि वो बेटे से मिलने गयी थी. जबकि मुझे पहले से ही पता था कि वो कहीं और से आ रही है.मैने पर कुछ भी जाहिर नही होने दिया और उस से बाते करता रहा. अब कैसे उगलवाऊ उस से कि वो कहाँ गयी थी. बात करते

करते मुझे कुछ सूझा. मैने कहा कि मुझे शहर तक जाना है. पर मेरी गाड़ी मे कुछ प्राब्लम है तो क्या तुम्हारी कार ले जाऊ .

उसने कहा ये भी कोई पूछने की बात है मेरा सब कुछ तुम्हारा ही तो है. मैने गाड़ी ली और स्टार्ट कर के बाहर निकल गया. सुनसान जगह में आते ही मैने गाड़ी को चेक करना शुरू किया आख़िर कुछ तो मिले जिस से पता चले कि आख़िर ये गयी कहाँ थी पर इधर भी हताशा ही हाथ लगी. कुछ नही मिला दो-तीन बार अच्छे से चेक किया पर रह गये खाली हाथ. पर कुछ तो खिचड़ी पक ही रही थी जिसमे कौशल्या भी शामिल थी. पर डाइरेक्ट्ली उस से कुछ पूछ नही सकता था.

एक एक दिन बड़ा भारी सा हो रहा था. पर फिर एक रोज संग्रामगढ़ से ठाकुर रविंद्रनाथ की तरफ से निमंत्रण आया कि उनकी बेटी संयोगिता का जनमदिन है. तो ज़रूर शिरकत करें. मैं सोचने लगा कि जाऊ या नही , जाऊ या नही. मुनीम जी से बात की वो बोले आपको बिल्कुल भी नही जाना चाहिए. पिछले इतने बरस से इधर से कोई उधर नही गया है. पर अगर आप जा ही रहे है तो अपने साथ कुछ आदमी ज़रूर ले जाएँ. ना जाने कोन घड़ी क्या हो जाए. मैने कहा मैं अकेला ही जाऊंगा अब जब उन्होने आगे से खुद न्योता भेजा है तो हमारा जाना भी बनता है.

मैं मुनीम जी के घर से निकल कर कुछ दूर चला ही था कि मुझे कुछ याद आया. मैं अंदर कमरे मे पैर रखने ही वाला था कि मैने सुना मुनीम फोन पर कह रहा था कि हाँ ,अब सही समय आ गया है. अपना काम भी हो जाएगा और शक़ भी नही होगा.अब ये कौन सा काम कर रहा है कहीं ये भी कुछ प्लॅनिंग तो नही कर रहा .है मैं हैरान परेशान पर. फिर उसकी बाते सुन ने के बाद मैं वहीं से ही मूड गया.अगले दिन मुझे संग्रामगढ़ जाना था.

१९

अगले दिन शाम को विलायती सूट पहन कर मैं तैयार हो चुका था. पर मैं ये भी समझ गया था कि आज कुछ ना कुछ होगा ज़रूर. क्योंकि मुनीम भी आज का ही बोल रहा था फोन पर. कपड़ो मे जितने छोटे हथियार मैं छुपा सकता था उतने मैने छुपा लिए. शाम घिरने लगी थी.मैं भी संग्रामगढ़ के लिए निकल पड़ा, दिल थोड़ा सा ज़्यादा ही धड़क रहा था.

महल आज किसी दुल्हन की तरह सज़ा हुआ था.रात धीरे धीरे जवान हो रही थी. मैने गाड़ी रोकी तो तुरंत ही दरबान मेरी ओर लपका बड़े ही अदब से उसने गाड़ी का दरवाजा खोला और गाड़ी उसके हवाले करके मैं सफेद संगमरमर की सीढ़िया चढ़ते हुवे महल के अंदर जाने लगा और अंदर पहुचते ही वहाँ की चकाचोंध से मेरी आँखे चुन्धिया गयी. खूब मेहमान थे एक पल के लिए मेरे दिल मे ख़याल आया कि अगर मेरी फॅमिली भी आज ज़िंदा होती तो ऐसी ही शानो-शोकत मेरे घर पर भी होती.

मैं अपने ख़यालो मे डूबा हुआ था कि...ठाकुर रविंद्रनाथ मेरे पास आए और बोले आकाश, हम तुम्हारी ही राह देख रहे थे. अपने ननिहाल मे आपका स्वागत है. वो बोले अच्छा लगा आपको यहाँ देख कर.मैने कहा अब आपने बुलाया है तो आना ही था. पर शायद मेरा यहाँ आना कुछ लोगो को अच्छा ना लगे ये बात मैने हेमराज को देखते हुए कही थी. वो बोले आप चिंता ना करे आज की शाम के खास मेहमान है आप. संग्रामगढ़ की मेजबानी का लुफ्त लीजिए. फिर वो मुझे और लोगो से मिलवाने लगे थे. पर मैं ना जाने क्यो सुनैना को ढूँढने लगा था.आख़िर वो भी तो इसी महल मे रहती थी.

पर वो कही दिखाई नही दे रही थी और मेरा मन भी पार्टी मे बिल्कुल नही लग रहा था. तो बस टाइम काट ही रहा था. और फिर मैने जो देखा मैं उसे देख कर हक्का बक्का रह गया. सीढ़ियो से एक परी उतार कर चली आ रही थी. अपनी सहेलियो के साथ एक खूबसूरत चेहरा , ठाकुर साहब ने सबसे परिचय करवाते हुवे कहा कि दोस्तो स्वागत कीजिए हमारी बेटी सुनैना का तो सुनैना भी मेरी तरह झूठ के साए की पहचान करवा गयी थी. मैने खुद को मेहमानो की भीड़ मे जैसे छुपासा लिया था.

पर ये छुपान छुपाई भला कितनी देर रहती तालियो की गड़गड़ाहट के बीच सुनैना ने केक कटा और अपने माता पिता को खिलाने लगी. तो ठाकुर साहब ने कहा कि सुनैना केक आज के ख़ास मेहमान को भी खिलाओ. वो चहकते हुए बोली कौन पिताजी. तो उन्होने कहा विश्रामगढ़ के ठाकुर आकाश.अब बारी थी हम दोनो के आमना सामना करने कि,

जैसे ही उसने मुझे देखा वो शॉक हो गयी और उसके मूह से निकल गया तूमम्म्मममममममम..

मैने कहा हाँ मैं, पर ये बातचीत बस इतनी ही थी कि बस हम दोनो ही सुन सके फिर उसने मुझे केक खिलाया और फिर बाते होने लगी. कई बार हेमराज से भी नज़रे मिली पर वो मुझसे कटता ही रहा. सुनैना बोली तुमने बताया नही कि तुम ही आकाश ठाकुर हो. मैने कहा आपने भी तो नही बताया कि आप संग्रामगढ़ के ठाकूरो की बेटी है .वो बोली ऐसे कैसे बता देती. मैने कहा फिर में कैसे बता सकता था. हम बाते कर ही रहे थे कि मामाजी ने कहा आओ आपको महल घुमा देता हूँ.

ऐसे ही रात का १ बज गया था. पार्टी तो कब की ख़तम हो गयी थी और फिर मैं भी उनसे विदा लेकर विश्रामगढ़ के लिए निकल ही रहा था कि सुनैना भागते हुए गाड़ी के पास आई और बोली आकाश मुझे आपसे कुछ इंपॉर्टेंट बात करनी है. मैने कहा अभी मुझे जाना होगा सुनैना, पर मैं जल्दी ही बगीचे मे आप से मिलूँगा. वो मुझे रोकती ही रह गयी चेहरे से कुछ हैरान परेशान सी लग रही थी पर उसकी बातों पर इतना गोर नही किया मैने और हवेली के लिए निकल गया.

आधा रास्ता पार किया था कि मोसम ने करवट ले ली. तेज हवा चलने लगी, कुछ कुछ आँधी सी. मैं गाड़ी को थोड़ी कम स्पीड से लहराते हुवे हवेली की ओर जाने लगा था. और जब मैं वहाँ से कुछ दूर ही था. तो बूँदा-बूँदी शुरू हो गयी थी. काली स्याह रात और ये बिन मोसम की तेज हवा और बारिश मेरे कानो मे ऐसी आवाज़ आई की जैसे कहीं पर सियार रो रहे हो.

मेरा दिल में एक सर्द लहर दौड़ गई. पता नही आज क्या होने वाला था. जब मैं हवेली पहुँचा तो गेट पर कोई भी नही था. चारों तरफ सन्नाटा पसरा हुआ था. पता नही सभी लोग कहाँ गये. ये सोच कर मेरा दिल धड़क उठा . मैने गाड़ी पार्क की और मैं धड़कते दिल से अंदर बढ़ा .तो वहाँ रंभा खड़ी थी

मैं दौड़ कर उसके पास गया वो भी मेरे गले लग गयी. मैं उस से पूछने ही वाला था कि ये सब क्या हुआ और क्या वो ठीक है. पर तभी धोखा हो गया शरीर मे दर्द के लहर दौड़ती चली गयी , बड़ी सी सफाई से रंभा ने पीठ मे खंजर घोप दिया था. ये धोखा किया उसने पर क्यों रंस्स्स्स्स्स्शभा……. मेरे मूह से कराह निकली. उसने एक वार और किया और मैं ज़मीन पर आ गिरा उसके कदमो में .

मेरी ओर हिकारत से थूकते हुए रंभा बोली, साले आज तेरी मौत के साथ ही ठाकुरों के इस वंश का अंत हो जाएगा.उसने मेरी पसलियो मे एक कसकर लात मारी. मैं दर्द से दोहरा होता चला गया. मैने दर्द भरी आवाज़ मे पूछा कि क्यों किया तुमने ऐसा, मैने क्या बिगाड़ा तुम्हारा. वो बोली मेरा नही पर उनका ज़रूर , ज़रा देख उधर.

मैने निगाह दरवाजे की ओर की तो वहाँ पर कौशल्या खड़ी थी. कौशल्या जिस पर मुझे शक़ तो हो ही गया था. पर इस टाइम मैं खुद बेबस सा था. वो आकर सोफे पर बैठ गयी और उसने एक सिगरेट जला ली फिर उसने किसी को फोन किया और कहा कि, हाँ वो इधर ही है तुम पीछे से आ जाओ. थोड़ी देर बाद एक शख्स और दाखिल हुआ.जिसे देख कर मैं और भी हैरत मे पड़ गया. ये थे मुनीम जी, जो की अब बिल्कुल सही थे और बिना किसी की सहायता के खड़े थे .

मुनीम ने भी आकर मुझे ठोकर मारी और मेरे उपर घूँसो की बोछार कर दी, मैं दर्द से तड़पने लगा. पीठ से खून बहे जा रहा था. कुछ ही देर मे ठाकुर रविंद्रनाथ, मेरे मामा और हेमराज और उसके पिता भी वहाँ पर आ गये थे.अब कुछ कुछ माजरा मेरी समझ मे आया कि ये सब इन लोगो का मास्टर प्लान था. मुझे संग्रामगढ़ बुलाना और पीछे से हवेली की सुरक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर देना.ताकि आसानी से मेरा शिकार किया जा सके.

मुझे मेरा अंत आँखो के सामने दिख रहा था और मैं बुरी तरह से लाचार था, बेबस था. मदद की बड़ी शिद्दत से ज़रूरत थी उस समय पर कौन आता?

हेमराज ज़हरीली हसी हँसते हुए मेरे पास आया और मुझे खड़ा करता हुआ बोला आकाश ठाकुर आज दिखाओ तुम्हारी मर्दानगी, आज करो मुझ पर वार और कस कर एक घूँसा मेरे पेट मे जड़ दिया.

किसी तरह से खुद को संभालते हुए मैने कहा, कुत्ते की औलाद सालो धोखे से घेर लिया तुमने. हिम्मत थी तो सामने से हमला करते और उसके मूह पर थूक दिया. फिर उसने मुझ पर हमला करना शुरू कर दिया. काफ़ी देर तक वो मुझे मारता ही रहा .फिर कौशल्या खड़ी हुई और बोली नही छोटे ठाकुर बस, अब रुक जाओ. कही मर मरा ना जाए. इसके प्राण निकलने से पहले सारे डॉक्युमेंट्स पर इसके साइन तो लेलो वरना फिर दिक्कत होगी.और फिर वैसे भी मरने से पहले, इसे पता तो होना चाहिए कि आख़िर आज हम इसकी मौत का जशन क्यो मनाएँगे.

हेमराज ने मुझे छोड़ा और मैं नीचे ज़मीन पर गिर पड़ा.मैने कहा पर तुम लोग तो मेरे अपने हो फिर मुझे क्यो मारना चाहते हो. मैं तो तुम्हारी दुनिया से बहुत दूर था. फिर क्यो मुझे बुलवाया तुमने.

कौशल्या मेरे चेहरे पर सिगरेट का धुआ छोड़ते हुवे बोली क्या करे आकाश बाबू मजबूरी थी हमारी...

तुम्हारे दादा ने वसीयत ही कुछ ऐसी लिखी थी कि अगर कानूनन तुम ना आते तो सब कुछ अनाथालय को चला जाता और हम रह जाते ठन ठन गोपाल.पर इन पैसो से ज़्यादा मेरी रूचि थी अपना बदला पूरा करने मे.जो आग मेरे सीने मे धड़क रही है आज तेरे खून से वो बुझेगी. अब करार आएगा मुझे .कौशल्या ने एक जोरदार अट्टहास किया..

मैने रंभा की ओर देखा ,वो हँसने लगी. मैने कहा तुम्हे तो दोस्त माना था. तुमने ऐसा क्यो किया. तो ठाकुर रविंद्रनाथ बोले वो हमारा मोहरा है मेरे प्यारे भान्जे.कौशल्या ने छुरी उठाई और मेरे सीने पर हल्के हल्के कट लगा ने लगी. मैं दर्द से बिलखने लगा. खून से सने चाकू को चाट ते हुए कौशल्या बोली, आकाश.. जानते हो तुम्हे ये सज़ा जो मिल रही है वो सब तुम्हारे बाप के कर्मों का फल है.

हाँ आकाश तुम्हारा बाप कोई साधुसंत नही था. बल्कि एक नंबर का ऐय्याश था. ना जाने गाँव की कितनी औरतो को उसने अपने नशे और गुरूर के नीचे कुचल दिया था. . आकाश आज तुम्हारे खून से नहा कर मैं शुद्ध हो जाऊंगी. इस बार चाकू कुछ ज़्यादा अंदर तक घुस गया था. मैं दर्द से दोहरा हो गया था. कौशल्या अपनी धुन मे थी वो एक और नया जख्म बनाते हुए बोली..

आकाश , जानते हो इस बदले की आग मे मैं कितना जली हू, मैने तुम्हारे बाप का कतल करते हुए कसम खाई थी, कि मैं उसके वंश को ही मिटा दूँगी, और फिर जब मुझे पता चला कि तुम्हारे दादा ने वसीयत बना दी है फिर उनको भी रास्ते से हटा कर तुम्हे इधर बुलवा लिया गया और अब देखो आज बरसो की मेरी प्यास शांत होगी. कौशल्या पागलो की तरह हँसने लगी...

उसने कहा चिंता मत करो सब कुछ जाने बिना तुम्हारी जान नही निकलने दूँगी, तो आकाश बात उन दिनो की है जब मैं ब्याह कर बस आई ही थी. कुछ रस्मों के बाद, मेरी पति बड़े ठाकुर का आशीर्वाद दिलाने मुझे इसी मनहूस हवेली मे लेकर आए थे.यहीं पर उस शैतान

जो तुम्हारा बाप था. उसकी हवस की गंदी निगाह मुझ पर पड़ गयी. अब उसका रुतबा था गाँव मे , उसके आगे कोई आवाज़ नही उठाता था.

नशे मे चूर उस शैतान ने इसी हवेली मे मेरी अस्मत का शिकार किया. पूरी हवेली मे मेरी चीख गूँजती रही पर किसी ने भी मेरी मदद नही की. मैं रोती बिलखती रही पर मेरी चीखे इधर ही दब गयी. कहाँ मैं एक नयी नवेली दुल्हन थी और कहाँ अब मैं क्या से क्या हो गयी थी. उस हवस के पुजारी ने मुझे बर्बाद कर दिया था. उसी दिन मैने ठाकूरो का समूल नाश करने की सौगंध उठा ली थी और तकदीर देखो आकाश बाजी मेरे हाथ मे आती चली गई .

मैं अपने दर्द से जूझता हुवा ज़मीन पर पड़ा उनकी बाते सुन रहा था. और वो लोग भी किसी तरह से जल्दी मे नही लग रहे थे. बल्कि उनका मकसद तो मुझे को तडपा तडपा कर मारना था. कुछ देर के लिए उस कमरे मे चुप्पी सी छा गयी पर क्या ये खामोशी किसी आने वाले तूफान की तरफ इशारा कर रही थी.फिर ठाकुर रविंद्रनाथ ने उस सन्नाटे को तोड़ते हुवे कहा कि..

चलो अब बहुत हुआ कौशल्या तुमने इसे बता ही दिया कि आख़िर क्यों हम लोग इसे मारने वाले है. रही सही कसर मैं पूरी कर देता हू. आकाश बबुआ, तुम्हारे आय्याश बाप ने हमारी भोली भाली बहन को अपने जाल मे फँसा लिया था. तुम्हारा बाप था ही एक नंबर का कमीना. लोग अक्सर कहते है कि हमने अपनी बहन को मार दिया पर सच्चाई ये है कि उसने आत्महत्या की थी.

मेरे लिए ये एक और शॉक था. , मेने दर्द भरी आवाज़ मे कहा, नहीं आप झूठ कह रहे हो. उनको तो नानी ने जहर दिया था. तो ठाकुर रविंद्रनाथ हँसते हुवे बोले ना ना मुन्ना , तुम्हारी माँ को भी तुम्हारे पिता के गुलच्छरों के बारे मे पता चल गया था. तो इसी लिए उनकी बेवफ़ाई से आहत होकर उसने जहर खा लिया.जिसका इल्ज़ाम मेरी माँ पर लगा और उन्हे जेल जाना पड़ा. पर आज तुम्हारे खून से इस हवेली को पवित्र किया जाएगा.ठाकूरो का सूरज अब कभी नही उगेगा ,

मे भली-भाँति ये समझ गया था कि ठाकुर रविंद्रनाथ सही कह रहे थे.मेरी हालत खराब थी और अब बच पाना मुश्किल था. मैने देखा कि कौशल्या ने वो छुरी मेज पर रख दी है और शराब के गिलास को उठा कर चुस्कियाँ ले रही थी. तो मेरी आँखे उस छुरी पर जैसे जम गयी थी.मैने सोचा कि में ऐसे ही नही मरूँगा किसी मज़लूम की तरह.मेरी रगों मे वीरों का खून दौड़ रहा है.

अगर में मरूँगा तो अपने साथ इन सब को लेकर ही मरूँगा पर कैसे, कैसे,... आख़िरकार मैने अपना निर्णय ले लिया कि तभी हेमराज उठा और बोला पिताजी इसने मेले मे बहुत मारा था मुझे. तो ज़रा मुझे भी मोका दीजिए हाथ साफ करने का. तो रविंद्रनाथ हँसता हुआ बोला, हाँ मेरे बेटे क्यो नही.. हेमराज उठा और मेरे पेट मे एक लात मारी , लात पड़ते ही मेरे मूह से खून निकल गया.

पर तभी शायद किस्मत को भी मुझपर तरस आ गया था. , शायद तकदीर भी नही चाहती थी कि विश्रामगढ़ का आख़िरी चिराग इस कदर बुझे. हेमराज ने मुझे उठा कर पटका. में मेज के पास जा गिरा. पल भर मे ही तेज धार छुरी मेरे हाथ मे आ गयी थी. कोई कुछ समझ पाता उस से पहले ही मेने अपना काम कर दिया था. मुलायम मक्खन की तरह हेमराज की गर्दन को मेंरी छुरी चीरती चली गयी.

गले की नस कटते ही खून की गाढ़ी धारा लबा लब बहने लगी थी. किसी के कुछ समझ पाने से पहले ही हेमराज की लाश ज़मीन पर गिरी पड़ी थी. अचानक से ही मुझको हमला करते देख सभी हैरान रह गये थे. रंभा ने पिस्टल से तुरंत ही मुझपर फायर किया. पर में सोफे की आड़ मे बच गया और फिर अगले ही पल मेंरी छुरी रंभा के पेट मे धसती चली गयी थी. वो बस आहह करती ही रह गयी थी.रंभा की आत्मा परमात्मा मे विलीन हो गयी थी पर अभी भी तीन लोग बचे हुए थे.

मुझे मुनीम का ध्यान नही रहा था और यही पर मुसीबत और बढ़ गयी थी.मुनीम की बंदूक से निकली गोली मेरे पैर मे धँस गयी. मेरे के गले से चीख उबल पड़ी जो सारी हवेली मे पसरे सन्नाटे को चीर गयी थी. गोली लगते ही में ज़मीन पर गिर पड़ा और ठाकुर रविंद्रनाथ ने मुझे दबोच लिया और पागलों की तरह मुझपर पर लात-घुसे बरसाने लगे थे. मेरा चेहरा बुरी तरह से लहू लुहान हो गया था.मुझे मदद की बहुत ज़रूरत थी. पर मदद का तो कोई सवाल ही नही था.

आज की रात बहुत लंबी होने वाली थी. रविंद्रनाथ पागलो की तरह मुझे पीटे जा रहा था. कौशल्या ने मुझे उससे से दूर किया और बोली क्या कर रहे हो ठाकुर साहब, अभी हमे कुछ देर इसको जिंदा रखना है.उसने मुनीम को इशारा किया.मुनीम कुछ पेपर्स ले आया. कौशल्या मेरे पास आई और बोली कि साइन कर इनपर. तो मैने उसके मूह पर थूक दिया पर कौशल्या पर कुछ असर नही हुआ. वो बोली, वाह रे तेरा घमंड अभी तक नही टूटा.

उसने अपने बालो से क्लिप खोली और मेरे कलाई मे घोप दी. मेरी चीख एक बार फिर से गूँज गयी. वो हँसते हुवे बोली, देख उस दिन ऐसे ही मेरी चीखे इस हवेली की छत से

टकराते हुए दम तोड़ रही थी.आज मुझे बहुत सुकून मिलेगा. आज मेरे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण दिन है .तुझे मैं ऐसे नही मारूँगी. तुझे मारने से पहले मैं तेरे साथ रास रचाऊंगी तू भी क्या याद करेगा.

ठाकुर रविंद्रनाथ कौशल्या से बोला ,सुबह होने ही वाली है तो दिक्कत हो जाएगी,टाइम पास ना कर.किस्सा ख़तम करो इसका.कौशल्या बोली हाँ हाँ करते है, पर पहले तुम से तो निपट लें. ये सुनकर रविंद्रनाथ सकपका गया और बोला मुझसे निपट.. क्या बोली तुम..? कौशल्या बोली इसके मरने के बाद इसके कतल का इल्ज़ाम तुम पर ही तो लगेगा. इस से पहले रविंद्रनाथ कुछ समझ पाता उसके सर पर मुनीम ने बंदूक की बट से वार किया वो बेहोश हो गया.

मुनीम ने फॉरन उसे रस्सियो से बाँध दिया. कौशल्या ने अपने पूरे प्लान को पहले ही सोच लिया था कि कैसे क्या करना है और काफ़ी हद तक वो कामयाब भी हो गयी थी. इधर मेरे को भी अपना अंत नज़दीक लग रहा था. कौशल्या ने मुनीम से कहा कि इसको बाहर पेड़ के पास ले चलो. मैं इसको जिंदा जलाना चाहती हू. इसकी चीखो से मुझे शांति मिलेगी.मुझे मुनीम बाहर घसीट कर ले जाने लगा, पर सीढ़ियो के पास वो मेरे बोझ से लड़खड़ाया और उसी पल मैंने अपनी बची कुची शक्ति को बटोरते हुवे उसके अंडकोषो पर वार किया. मुनीम दर्द से दोहरा हो गया और नीचे को बैठ गया. बिजली की सी फुर्ती से मैने उसकी बंदूक उठाई और मुनीम की छाती पर गोली दाग दी .मुनीम का राम नाम सत्य हो गया और वो ज़मीन पर गिर पड़ा.दौड़ती हुई कौशल्या उधर आई तो मुनीम की लाश देख कर वो जैसे पागल ही हो गयी थी.

इधर मेने पड़े पड़े ही कौशल्या पर फायर किया. पर अबकी बार किस्मत ने उसका साथ दिया.बंदूक की गोलियाँ ख़तम हो चुकी थी.अपने पति को मरा देख कर कौशल्या जैसे विक्षिप्त हो गयी थी.वो मुझे घसीट कर पेड़ के पास ले आई और पास रखी तेल की बॉटल्स से मुझको भिगोने लगी. वो ज़ोर ज़ोर से चीख रही थी ,जैसे शैतान उस पर सवार हो गया था.

कौशल्या ने मेरे शरीर पर जहाँ गोली लगी थी वहाँ अपनी बीच वाली उंगली घुसेड दी.मैं चाह कर भी अपनी चीख पर काबू ना रख सका. पूरा जिस्म उसका खून मे नहाया हुआ था. मौत पल पल मेरी ओर बढ़ रही थी. कौशल्या ने मुझे पेड़ के तने से सटा दिया और मुझको रस्सी से बाँध ही रही थी कि मेने आख़िरी कोशिश करते हुए पूरी ताक़त से

कौशल्या को धक्का दिया. वो नीचे ज़मीन पर गिर गयी और मे उस पर कूद गया और उसके गले को दबाने लगा.पर शायद मेरी ताक़त अब कम पड़ने लगी थी.

कौशल्या तो वैसे ही वहशी बन चुकी थी. उसने अपने उपर से मुझको साइड मे कर दिया और खुद मेरे उपर सवार हो गयी. उसने मेरे पँट से बेल्ट को खीच लिया और उससे मेरा गला घोटने लगी थी. मेरी साँसे दम तोड़ने लगी थी. आँखो के आगे अंधेरा छाने लगा था. किसी भी पल मे इस दुनिया से अलविदा होने वाला था. पर शायद आज मेरी मौत का दिन नही था.

जब मैने अपने हाथों को निढाल छोड़ दिया तो तभी वो जैसे किसी पत्थर से टकराया.मैने पत्थर अपनी मुट्ठी मे लिया और कौशल्या के सर पर दे मारा. उसके माथे से खून बह चला और वो दर्द से बिलबिला पड़ी. उन कुछ ही सेकेंड्स मे मुझको मोका मिल गया. हवा के दुबारा से फेफड़ो मे जाते ही जैसे मुझमे उर्जा का संचार हो गया. मेरे पास बस यही एक लास्ट मौका था.मैने अपनी सम्पूर्ण शक्ति जुटाई और कौशल्या को आखरी धक्का दे दिया. यह आखरी धक्का मेरे जीत का कारण बना.उस आखरी धक्के ने मेरी तकदीर बदल दी. मैने उसी पत्थर से कौशल्या के सर पर मारना शुरू किया.

पता नही में कितने वार करता रहा. में भी पागल पन पर उतर आया था.में क्या क्या बड बड़ा रहा था और कौशल्या के सर पर वार किए जा रहा था. कौशल्या के प्राण कब का उसका साथ छोड़ गये थे. पर में उस पर वार करता ही रहा , फिर ना जाने मुझे क्या हुआ. मैने कौशल्या को अपनी बाहों मे भर लिया और रोने लगा. काफ़ी देर तक में रोता ही रहा फिर मुझे किसी के आने की आहट सुनाई दी. में घिसट ते हुवे उसकी ओर चलने लगा.

मैने देखा कि वो रूपा थी. में रूपा की बाहों मे झूल गया और काँपति आवाज़ में उसे बताने लगा. रूपा ने मुझे अपनी बाहों मे ले लिया ,तो मुझ को जैसे दो पल के लिए राहत मिल गयी थी.पर तभी गजब हो गया. मेरा पूरा बदन दर्द मे जैसे भीगता चला गया. रूपा का चाकू मेरी पसलियो मे धंसा पड़ा था. ज़मीन पर गिरते हुए मैने कहा रूपा तुम भी …………

रुपा बोली कमीने मेरी माँ को मार दिया तूने. कातिल हो तुम. तुम्हे भी जीने का कोई हक़ नही है…रूपा हँस ही रही थी कि तभी पीछे से एक फायर हुवा और रूपा का सर फट गया.वो किसी पेड़ के कटे तने की तरह ज़मीन पर आ गिरी. ये सुनैना थी जो वहाँ आ पहुचि थी. असल मे उसने ठाकुर रविंद्रनाथ को किसी से फोन पर मेरे को मारने की बात करते हुए सुन लिया था. पुलिस को लेकर आने मे उसे देर हो गयी थी.पर वो बिल्कुल सही टाइम पर

पहुचि थी. सुनैना दौड़ती हुई मेरे पास पहुचि.अभीतक मेरी सांस चल रही थी.पुलिस की सहायता से उसने मुझे अपनी गाड़ी मे डाला और गाड़ी शहर की ओर दौड़ा दी.वो किसी भी कीमत पर मुझे मरने नही दे सकती थी.

इधर पुलिस ने हवेली को अपने अंडर ले लिया और स्थिती को समझने का प्रयास कर रही थी. आज अगर कोई रेस होती तो पक्का सुनैना ही जीतती , क्र्र्र्र्र्र्र्र्र्ररर चर्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्र्रररर करते हुए गाड़ी हॉस्पिटल के गेट के बाहर रुक गयी.मुझको तुरंत ऑपरेशान थियेटर मे ले जाया गया.जहाँ ५ दिन तक में आइसीयू मे रहा.पर बच गया.

ठाकुर रविंद्रनाथ को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया.उन्होने अपना जुर्म कबूल कर लिया.मेने सारी हत्याएँ अपनी जान बचाने के लिए की थी, तो मुझको बरी कर दिया गया था. समय गुजरने के साथ सुनैना और मे करीब आते गए और अंत मे हम दोनो ने विवाह कर लिया और खुशी खुशी रहने लगे.